

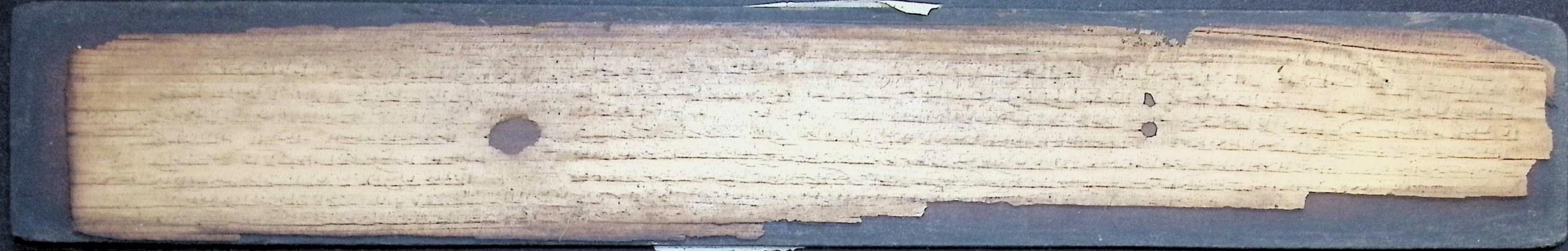
45 036 (A)

रामायण

(रत्न रामायण)

Script: नदीनागरी

Material: PL



[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[The following text is transcribed from the manuscript page shown above.]

222

[illegible]

सा मा नल स मा सा स व य त मा क मा इ व । सा वि ना रे व न आ सो ना त क आ वि ना न मा भु क्ता ३ ल क ता लो वि ना व द के व ल न ना न त क इ ना ता ति वि सु ली न ना न थो द न त न
 प्र ता व सो न प्र य ते न ते न म न व लि का न सु वि ना पि रु न ना चि न प्र न न भ वि ना मि ता भू रे पु न म न सा क न वा रु ना ता ठि ता ना म वा गो न ति त न ना न म न थो द न प सु द
 रु प सु सा स यो ना क सा को र्णो म ना भ त ना प्र त ति त ती भा त प क तु मि रु लि ध त भू व क न दे प र ना हि मी के ला कि ना व न ना न की त भ न व ना म पारा न सु मि वा त क न प्र पि
 ना म स रु सा पि ती त प र ना मि ना व मा ना म नु त मि र स व मि र मा प्र ति ता ति से । ना म मे व रि प र ना मि र ति री न ना पि पा र्श्व ना ख न ना म नु त मा मि व व त
 न भ न का ना री नि ना मा नि ना म न स स स ना वा ना न नि व न धा रे व ता स न क न य ति से १४०० की वि त व स न वे व ना न वे व सु उ न ति न य ती कु वि वि न तो
 कु मा क या ना म वि वि य न इ न व नो व इ ति सी त त स व द ना मा यो म स म प्र दि ता धि ना म या त धो म मा न य रि ना ति प र स रे । ना ना थ व स न ति की वि त न ना म न तो म ना म ना र न वि न न १४१०
 इ ति सी त त स व द ना मा यो म स म प्र का णे ना वा प्र ति मा नि व क थ न ना म द्वा र रा स ग १४२० म सी ना म व ना न न म १४३० म १४४० म

[illegible]

वरुनिप्रति। तच्छ्रुत्वा किञ्चिद्विचिन्तयन्। तदा नैव। अथ पापविशुद्ध्यात्मा शुद्धिं प्राप्नुयात्। इति तालराजनातिः कृतं किञ्चिदुक्तं। पूर्वकर्मणि। विष्णु उवाच। तदा नैव।
 मातृकतया न गतुं विष्णु उवाच। तदा नैव। अथ निमित्तपापे तविष्णुमिति विना तेन न तद्यतिश्च इति सविं त्रमणस्यानवगाः कालयोः कृतिश्च स्यात्। प
 नमं नैव मातृकतया न गतुं विष्णु उवाच। तदा नैव। अथ निमित्तपापे तविष्णुमिति विना तेन न तद्यतिश्च इति सविं त्रमणस्यानवगाः कालयोः कृतिश्च स्यात्। प
 काया धीना वामः स्वयं स्यात्। इति ध्या
 र्थानं ताता यतस्तस्यैव स्यात्। अनेनैव
 सित्तकेवलं स्यात्। इति ध्या
 तिसु। तत्कर्म स्यात्। इति ध्या
 स्यात्। इति ध्या
 नमप्यस्यैव स्यात्। इति ध्या

[illegible]

[illegible]

[illegible]

तोतुह्यातनाह्युस्तिचासुमुद्राय कता० कलिधरा मन्त्रपादौ कया जलमुद्रा गायत्र्यर्थः। मन्त्रः १८५ प्रत्यक्षम् प्रगाह्याव निवेद्य कुर्याद्विषयः। पात्रप्रक्षालनं कृत्वा ततः पात्र
 न० ५ वासिना तिसापीत्वा वनोः पुष्पै रपुन्यत्तः पराजानि वरु पक्वानि मुला नि मधु रागिनि। स्वयं मासा ममापुयं पुरीक्ष्य परतक्षितं पखा निवेदय्या मासा ममापुयं वातामां चतुर्विंशतिः। १८५
 ता मुवावत तोरामः समामां स० स्तितव
 मनस्यभ्युपगच्छ विते कुरु सुपास्य पर
 तामरा स० स्यावनीव्यानाहाय प्रत्युप
 हासमेव परितः कुरु स्वमस्वैव तविष्णु
 रात्रिः ३५ तवला० नवनि० रात्रि ७ उगा म
 कतः सा का त्वेते तवै वक्ति। क घ० ना मा भमे ह्यु न्वावा म फा गो स नक्षत्रो तु न काने दे वे रो कि० क नो मि प्रसीद मे॥ १८५ सी स म ॥
 मन्त्रः १८५ तवै वक्ति। क घ० ना मा भमे ह्यु न्वावा म फा गो स नक्षत्रो तु न काने दे वे रो कि० क नो मि प्रसीद मे॥ १८५ सी स म ॥

[illegible]

[illegible]

182

१७२० ईसवी १०८५ हिजरी

मोक्षं विना कृतं प्रलोत्तना

तं तं मया तं मया तं मया

न क तू जा १ क प ख ॥ १ ॥

१३ तिमे मने भिमाने चले

कृतान्तवराजकोशम् ।
कृतान्तवराजकोशम् ।

नरसिंहनाथसुखसागराचार्य

গোবিন্দ চন্দ্র চৌধুরী

विष्णुपुत्रं कृमायां तज्जितं बुधिमपि नास्ति विष्णुपुत्रं कृमायां तज्जितं बुधिमपि नास्ति
नामा कषापात्रं तज्जितं बुधिमपि नास्ति विष्णुपुत्रं कृमायां तज्जितं बुधिमपि नास्ति
तज्जितं बुधिमपि नास्ति विष्णुपुत्रं कृमायां तज्जितं बुधिमपि नास्ति
यज्जितं बुधिमपि नास्ति विष्णुपुत्रं कृमायां तज्जितं बुधिमपि नास्ति
धामा ज्ञानं वक्ष्यामि मया ज्ञानं वक्ष्यामि मया ज्ञानं वक्ष्यामि
मिथुता रोषा कलिषधततो नामेमानि
सुखतु तज्जितं बुधिमपि नास्ति विष्णुपुत्रं कृमायां तज्जितं बुधिमपि नास्ति
मा प्रियं धर्मं कुरुष्व मितो वीर्यवान् गच्छतां सत्यं न विनोदं
नामस्य सा स्थितं तज्जितं बुधिमपि नास्ति विष्णुपुत्रं कृमायां तज्जितं बुधिमपि नास्ति

[illegible]

न जानी मोल पं घा नं नाम माया उत तया । ब्रह्मा रये पि सुखं ति ना माया तदा ता वै । इति । न निरु ख स्य वन न्या सुमान न्या न
 येन मा लं वा ते ह स्वी धन मधि म धा र्वा रा त्वा नान की र रु मा धा यि खो लि स स्त मं ठ ला नू । पा रा ला क ता त हं स मं ठ ल मं ठि त प वा प्र इति वि रा वा या
 जात धा ना ख ना रु सा भन विलं प्ता
 ग मे रा क्ताः सुखं ति म नि काल ये । इति ल क्ता मा मा दि रा म न सा पु मि व स्त ता । प्र प यौ द य नि सिं सो द नं न को ग
 गा द्वि त ना म म म म इति स्ती त
 त स्ति ह्ये व स म ये ना वा गो रं प्र र नि श
 त्व स म रु ना मा या गो म नं प कं ठे मा नी व व धा दि क य न न म ति नं प्र व त्ति र स म ग्नि म म म नि व द्म म
 त स्ति ह्ये व स म ये ना वा गो रं प्र र नि श
 प नि द्वा द्वे ष मा सा प्र ख स्ती त्वा न स ना द म म र म न मा म य मा दे वं किं वि व्ही लि त ले व न ध उ द म मा ला नी
 ना नां प्र त्ते कं म रु मा गो रा नै ध क व ता क म ल लो व न म मा सा ना सु लि ता तु वा
 पा य मा न य सु वृ त्त ना मा ग म न स
 पु रु क र्त्त वि दि उ प सि ध ता म पु रु क र्त्त यं य त ती दे वी मं ठ ला त्वा रा मा ग ता पु रु क र्त्त सा प्रे ष मा मा स नि ले म
 रु न य मा पु रु क र्त्त वा य न सु त्ते मा या वे व थ नो रु न ध मा या दि ना दे द त्ता नाल पु रु क र्त्त सा त्ते मं ठ लो म म न क र्त्त म्हा ह्यो ना वा रा रा स्ती ता

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पताका प्रसूतं प्रतः कनसता इवैभ्रमः ॥ १५ ॥ पदं च उराधवे प्रविशते नपी मता ॥ नतरा किं वलोत्सा न प्रविशत जायत न ॥ १६ ॥ पलायनं सुवीता ॥ १७ ॥ गता गतिरिति
 नेरो ॥ ने चामि कु रू चेतो तामो वै वमता वत ॥ १८ ॥ अनावाप ॥ १९ ॥ मम देरां प्रवरा मि मम ते वकु मर सि पादा ॥ २० ॥ दिने मम ते वम मम प्र वमता ॥ २१ ॥
 सुता नतो ववो ग ॥ २२ ॥ सु मम प्रादु स
 नता ॥ कुत ॥ अदलितो त वत ॥ २३ ॥
 न कृता ॥ ग ॥ पपात विपति सा ॥ २४ ॥
 तोल को ति ने जो यवा ग जात ॥ वाने रा
 जा स प्र का नता ता को त ॥ २५ ॥ स तत
 कथ पत ॥ का जो क वन ॥ प्रा प्त ॥ २६ ॥
 पाप सा न ही वित ॥ २७ ॥

नि पुनरुत्पत्त्या। इति धिष्ठितु पेता नात कर्तव्यात् रावौ रुद्रे पिता हरो। स्वसुखेनासिका के रथस्य वेना मपि न स्यात् ॥ ३ ॥ कीर्तिः सर्वलोके प्रवर्तिष्यते इति चेन्न भवत्तु नाना विधिभिः
 तस्मै नमः कीर्तिवित्तममैतन्निरुनिष्ठा मे। गत्वे का किनमां रुवे। तेनैव यद्दिना मत्पुःवीनथ मोदिता हराधना सा मे दोयता तात न न माता भते तस्य ॥ ४ ॥ तं को गीति मे सुव
 बलवाहीति मानपि ॥ ३ ॥ इति वरुनं सुखा
 नाना। न साध्या च निपुस्तुत स्यत्क
 गति नमः सुभा कं सता विष्णुति। स्वसु
 स्थित नमः नमः ॥ तन्निमित्तं नोऽस्मा कं
 ता केतु। वयं सुखेन तिष्ठामः कालोऽनुति कर्मधविपरीत इवा ताति न रुखां निधनाय नमः कालः सुखमात्रेण न रुखां कालोऽनुति कर्मधविपरीत इवा ताति न रुखां
 मेवान्नातयावक कालः कीर्तिस्तु व विष्णु उपीरिवेऽस्वयं स्यत्कैपिकाल वरा गो वधन्ति तविक धनं ॥ ५ ॥ सोऽस्ते निमित्तं नानु पयारात्तु स्यत्कैपिकाल वरा गो वधन्ति तविक धनं ॥ ५ ॥

[illegible]

वासा सुवेतयभसमे प्रसादात्तु द्वेन तो गान्ते विमुच्यते॥ अतिवशनामः सुनाने वञ्छा त्रेष्वपि ता यता नृणां सुनाना स्ततात्ताये मन्त्रे वल्लस्तम्भे
 इति रवीति लसं गदना मायागे ज्ञेनाप्रका हे दिनरूपगगतिसं द्रित निष्ठा मतत्वस्व गच्छतु ते च तम ह्नो के वेत गार्हिक धन नाम नरो मे स नो
 शिवः प्रततश्च पगा सा ह्वा रा नादि निधनं च पि। पु विवेरा पु नील का नावागा सु न से नील का गला सता मध्ये कोरां ती पाइरा लिथो। नावागा राउ
 पातो श्री तनिना तस्मात्त स भक्ष्या नवा कुवे ने गा घ वा बुद्धि तस्थी कर्ज कविनी न स्व क ध ना नात दिव्य सि। कना म त वा कतरा के ना वात रे य मो न वनु म
 ता निरुमे नैव नामे गा तु नरा तु गा न गो न त ना रु सीत मु वा वे रण ख प्र म त स मु रु थी म पा ना स क स्त्री विहितो न न स व तिल रु रो। भो नो न न
 मय वा क य ते ना सु ना द ता भ स म म कू घ य मे ते चां मु ल जा त करो म्प रण। अरु पगा सी। ना मो ना न म ना ते काः से षः स व थ गु न ता न दिव्य सि ग म
 स प मः पु न न स मो अ पि त स्मा न उपो बल वा न न की सो उ तिः स्व न क्ष क नी या न ल रु मो ना म ना ता रा रि नि ना न न स ते न स स स यु मः पा न के

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ तं पञ्चाङ्गि सौम्यं ॥ कृताय तै नमः ॥ त्रिचन्द्रकूटं जामित्रास्ततो मे निजमा ॥ १ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ तं पञ्चाङ्गि सौम्यं ॥ कृताय तै नमः ॥ त्रिचन्द्रकूटं जामित्रास्ततो मे निजमा ॥ १ ॥
 के । तव नाम ॥ १ ॥ गान्धर्वे के वेति कोतु न जाः सपल ॥ गामये ॥ पितृजिह्वा नमः ॥ क्वं वरा मय तश्च ॥ १ ॥ विसेना मनसि
 कलो गरी के कोतु यो मनु यो न मो सुते ।
 रती नाम भस्मे तै मने न तु जो स्मि वे
 अत्रा म तनु म । स्वय म व स ग तात
 वस्व य ॥ १ ॥ १ ॥ की नाम भ ॥ १ ॥ गद्वं
 अन । न त पो ति स्व क म ति भू ॥ १ ॥ मे वं
 तानो य ती कि तो स्मा य म म वि से । तं
 के वं ततो ना मः ॥ १ ॥ न न प वी व व भू स्तो त भे त त त क्त तां मे त व तिः स व ति यि ॥ १ ॥ वे त ग त स्मि वे न त

[illegible]

नवादि कि अवाहो गता कपुत क जाहल न पत्र पत्रा हाह माता रा र मतेः स्मृतेः ॥ १ ॥ अवाहो गता ति जे न त त्वां हात वत्र पिता न सु जे विक्रम ॥
 कं न म न काना ति ख पु न ठा स न माया पिना म त्वं न ल त्वे न रु ति न नै ध रु वा पि वा न काना ति के वि स्व प्र ति न ॥ ५ ॥ त त्वं सो वा अ ये न ॥ अ वा च स न रा वा अ
 वा न रु सु रे । स प व वे उ त खे । ने नां ते रा तु अ क्ति ता कर । आ त्मा न वे दि जा नी या न च रु नी ति यो द ने । न से रु रु क न दी त ना गाः ७ ॥ न ना व त ते ले सु भ अ व द्वा रु नी
 ते रा त्वे वि का य स्थि ति रु ध ति मा । स वि प रि त्व जा ना न स व नि का मा नु स स सु ते । नि स या च कृ थो न यो मेः से क म स्वां प प अ ते । अ त यं स व
 नु ते त्वाः त स्य रा तु व त त व । व नं वि न कं प्र रे रा आ त्वां वां रु म्मा त्व के त क्ता ये त्वा रु पा स ते न ॥ ३ ॥ वि न त ते पु व न अ य न य मा न्ना
 वां ना म आ त ना मा ति नु प त ध पे त्वा चो सी अ त न वे त रु क्ताः स रु पा स ते । स व क म मि स ॥ ४ ॥ त्वा रु सो लो वां ७ ॥ उ पा त म न्ना रु
 र त्वा न्ना वा वो ना वा क स म्मा नि मी धि अ वि द्वा त न गा ये त स्व ये ॥ ५ ॥ इ ति मा नि नः ॥ अ थ नी तां अ व द्वा म प त त्ते व न रु मि गा धि थि कि
 मे रु न थ नि नो रु रु ताः अ त्मा न रु गी त्वा न म म म्मि रु य्वा प्रु अ तां त्वा त्वा खं ने कं हा वि उ र्द नि थ कि ॥ ६ ॥ क नि चो नो ना वा को के नि
 ति ते रु ना म्मा कृ प ता ये व मा स्वा ॥ त रु ते ना सा ति रु व ध त्व तः प नं वा प नं वा ना गा नि रो ना वि को सि वा न ते अ नो वा से वा व ना रु

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]



मा ३२ सुख तन वन सीता ने वीर रात्रि को लिके धरु निज निमेष हराना मं ता जमान मिवा ति को लिके धरु निज निमेष हराना मं
 स्व सुख मं बागानु स्वयं मे व विनि गति न ॥ १० ॥ मुनि पञ्च सुता नुस वनि ता तन पित नंत घा ॥ कु वं त मा न न नाम ॥ ११ ॥ सुख वं रान निता पय स गं थ व वि नि
 रो न पु न न भ ज न ना वि नि वा त्त त न
 म क ह र व ह र म ते दे वा ः त स्यां ति के ह
 उ पा न ॥ १२ ॥ मा न ॥ १३ ॥ न सो द न ॥ १४ ॥
 म क मा न ॥ १५ ॥ इ य म त त त स र न
 शि व ल ॥ १६ ॥ ज न ल न ग न नि मे षां त न
 स वे वि त न म स्कु त त क नी न प्र पे दि ने । त तै व वि नि जा ता य धा न प्र ष ल मु द ग ध स रा नी नु स ये मे द वे ल मे सा की रा क स्या नु व द नु । पि पा स या प नि जा तः सा वा रु थ न
 मा न व न पा नी ज यो ग ने पि ता पा नी य मु त म न त त नि म प्र दे रा स्वे किं ग दा र्पा प्र ने च ना । ह ता न ना रा न त हे ता न्ने वो वे स रा । ३ न । त स्या ना म त्र वै क
 वि न वा नी न ना म न भ प्र न ल यो सा स मं त अ नु ज ना मिः रा ना नि त थ ॥ १७ ॥ त ॥ ह स्या त त न ता न ॥ म क सी मा ॥ त या व स न व त्रु व र स सा वे दी की त ता न ॥

जायमानि विनामि पावागानां पानि पावनं जालो काले कस्त्री नाम वो नाम उध न धरां समा पुन या मा स्म प्रल यां उ ३५ नि वि अस्वन सुतारान् सुधानि रा २
 नाव वा पतिता गमन वधिनी तु त क मा स्म न व प स्म १३ तेत या १ का कि न वि के जा स्म ४ स वे मे न न मा ग ता ४ इति स वि १ त म न सा स वे पे तु न नु त मो ३ त
 इरा स न स्या मा न न स्या न न स्या लि इ सु मा स व दे वा नां त न नु त मि वा ना न स दान क त का स स्य नाम स्य प न मा स्म न ४ ४ ४ ४ त इरा स न स्या मि नु पा न म स न सा त्मा न ४
 ३५१० क ध न ना म न व मः स ग धा म मा य गो म न १० म क ० दे नाम स्य वि ख नु पा न म न य ४ ब्र ह्मा १० पु न तः क त्वा ना न्न व ३
 सु मा ग ता ४ ना म त्म क त्वा त त व रु म त्तो दे वा स ग ० व सि धा स्य प न म न य ४ ब्र ह्मा १० पु न तः क त्वा ना न्न व ३
 त न न न नि चा स ना सी न र्वे त क त्वा म त्तो दे वा स ग ० व सि धा स्य प न म न य ४ ब्र ह्मा १० पु न तः क त्वा ना न्न व ३
 म न य ४ ब्र ह्मा १० पु न तः क त्वा ना न्न व ३ म न य ४ ब्र ह्मा १० पु न तः क त्वा ना न्न व ३ म न य ४ ब्र ह्मा १० पु न तः क त्वा ना न्न व ३
 के ला स वा सि नः स वे ति पु न नु सि व त या १० अ स्य हि क स का रा ति मे त व ३ रो स त न ३ व यो म न य ४ स वे मो न से ३ इति वि ग रु न म न ना स प ति कि

मन्त्रेणामासः सौमित्रिभूवतीनां सुयते विपुलराजो नूनं ठाया विना नानाशतविधा विहाय न च नूनं नानाशतविधा विहाय न च नूनं नानाशतविधा विहाय न च
 कात्यायनो ननु विमथा मल्लो नानाशतविधा विहाय न च नूनं नानाशतविधा विहाय न च नूनं नानाशतविधा विहाय न च नूनं नानाशतविधा विहाय न च
 तिरिक्ते नूनं वैवदुषामा वैवसतस्य नानाशतविधा विहाय न च नूनं नानाशतविधा विहाय न च नूनं नानाशतविधा विहाय न च नूनं नानाशतविधा विहाय न च
 सौपुमसापि यथत पस्त्रा न प्रस
 कं नूनं सुक्रिवा कृया कठानव
 सायुय ततः सुक्रितविष्णुति
 पवन्तवनाः सौवै नानाशतविधा विहाय न च नूनं नानाशतविधा विहाय न च नूनं नानाशतविधा विहाय न च नूनं नानाशतविधा विहाय न च
 का नानाशतविधा विहाय न च नूनं नानाशतविधा विहाय न च नूनं नानाशतविधा विहाय न च नूनं नानाशतविधा विहाय न च नूनं नानाशतविधा विहाय न च
 दिवसः सौमित्रिभूवतीनां सुयते विपुलराजो नूनं ठाया विना नानाशतविधा विहाय न च नूनं नानाशतविधा विहाय न च नूनं नानाशतविधा विहाय न च

यकतेयना। कानो धेति विनरुंती लपवदे ससेतितौ। न्नाद्यवदिल पसि किं न नाये मसि स्थिते। ३ तिमो विविषमापै वी वै कृन्नां तद्व्यतामिद। कः काल पायना
 साभकं ते मो काननुभाते। चस्वामा चस्वामा सापीतवा विषमुत्तुपात्तम्। इतो वमुक्ता उर्ध्वी सपुण पनिसां विता। विद्वन्मन जनेसा खे सपनं तात नमब्रवी
 ता। परुपीतासी। पतनुगौ उपस्यं पन्नौ सुकृष्णानौ मन्ना नलो। पुं हवी कविरो लासौ नीनरुक्मा क्षिनां वनौ। परल मूलारि नौ रां तो ता पसो थमवा तिमो।
 पुतौ नरा न धर स्वेतो तात नौ ना मलक्ष्मणौ। गं वरुना कप्रति मो पाधि वक्रं कना वितो दिवौ वामान पौ कतौ नत कचि तु मृदा दे। तनुगा उपस्यं
 पुना सवीतना तुषिता। इसा तव मयाना नीतये मभ्यो सुमभ्यमा। पुनता तमा मुता तमा स्तनु ज प्रमता मथि कतता ता पस्य इमो अवस्थामं नी
 तादं यद्याना यल तीतया। सुतै वन्त गिनी वा क्कं सनः क थो द्रवी वन मक्षपीं इमवि पः कन्ना मपि स तन्मं मन्तया। बुद्धता म सपि उ उं वा विज्ञं
 वादन्निव कते। नना मं गता ये वीथा तु क्षानु वं नीम क्वी वितन इत्ये क्का स उ ना थ वः स को ना स स पुं ग वधत तव रारि तिमो मय चो ना मनि प्या
 पाना रुसा नां सुनो ना मा न स द स्या मिनेतु ईरा। निया ता नि कन स्थाना रूप वितानु वतिना। ७ म्पवतु ईरा स रु स्या मां प्रथाना नां तु न स स्या न प के
 क स्य स रु स्या मिता वं ति पि रि ता रि ना न स न स्व ति रि ना स्वेव दुष मस्वेव ना रु स म्प स वे ना म्प स्य रुः सी प्रं नाना प्रद ना गा य ता थ रु वा को ला

[illegible]

विरव पत्रमात्मनि केवले । न ज्ञोतु कं वदमांता विना नेनास्थि किं वना । सुयते हस्ततयस्य
 लव यथा स्वप्न जनेन धृष्टनेन । वदति स्वप्नान्न वदतु कलं हृत्तुं स्मृतं तन्मूलं । पत्ररा नाति विंशत्युक्तान् । न्न्यात्मानं न्न्यात्मानं न्न्यात्मानं
 विथोपाजं कान् इविद्यामितथा
 निनामय भक्तस्य की वदति विज्ञाने
 निवर्तनेन पनामे पादिस जलस्य व
 किं यात्रिषु । अज्ञो वाको यत्र । अत्र
 इक्षानि प्राग्मेनि तन् । वित्तस्य स
 प्राकृतैर्ज्ञेन संप्राप्तैर्न वति । स्व वद्यात् वेत्ता । नात्मज्ञाने सत्ये प्रेयो वेत्ता । ता य विनो न न्न्यात्मानं
 नेनात्मकतिमो विन कान् । पत्रमात्मनित्यं यो न्न्यात्मानं वेति निवर्तनेन सानेन सानेन वेति वदति । न्न्यात्मानं विज्ञानं न्न्यात्मानं

सा ननु तवेव ता। आत्मा स बलि प्रामास्त्रि विना न तात्मा को वर यश्च भव आ सु पाथि रक्षित भ प नि पा मा दिव किं त भ रव प्र कारो न ते को ती न्ना स च न्न न प्रा वृ त्त भ व भ्वा। प क प
 वा वि ती य स्व स त्त सा ना दि ल सा मा भ क्ष रा गः स्व प्र तो उ सो वि शाने ना व ग म्प ते। आ ना य सो स्रो प रे रा वै क्क सा न य च्चा त वे त्। आ त्मा नो जी व प र चो म्प ला वि च्चा
 त रे व लि। वे वं स्व ह्मि सु क्को ना मो त्मा
 क म्पि तं न प्प न नो। को न वि शान
 र म्पे ते। ५५ प ३० वी प स मे ता ना ३
 म्प ह्मि सु ग म्पे वै व म्प ह्मि सु ना न्नि व त
 प नि नि ष म्प म्प ना मा नु की त नि। ५ वं स त त य क्को ना त कि न व र ति वा नि पा। म्प यि स न्ना य ते नि त्त त तः कि न व र ति वै ष्य ते। अ तो म्प ह्मि सु क्क र म्प सा न वि
 सा न मे व वा वै ना म्प व त वे क्की प्र त तो म्प ह्मि सु वा नु च्चा त्। क म्पि तं स व मे त ते त व प्र म्प नु सा न त भ म्पि स न्म नः स म्पा पा य य सि म्पे स त म्पि ता क्का न व क
 म्प म्प न य ना म्प ह्मि सु सा य वै। अ ३० प ३० ते नि त्त स च्चा त कि स म्पि त भ म्प सा न पा त प ह्मि सु वि प्र य प नि म्प व ते। ५५ प ३० र ति स च्चा त व क्का न य म्पे

पञ्चमः पितृकामानतः कुत्वा नाभं वनस्थितं ॥ १ ॥ प्रनाहय पीठितं हस्तं हस्तं विधिं वनस्थं पितृनात्मानं न हस्तं न मृतं तेन हस्तं प्रकृतं वास्तविकं
 न० पुनः जायमानसतः द्विजं भ॥ सततस्तीतां पतिं धार्यं मेघिलीं स्वैव तेनातिबलेन पतिं गतां ॥ २ ॥ गतां प० वव हस्तं सलक्षणं निपुणं ॥ ३ ॥ थकं कृतं तातिवानं लभ्यं वातुं
 तमीतीनं प० वव हस्तं ततः प० १ ॥ ४ ॥ दि०
 ततः तत्रास्यासुने गतं पत्न्या प्राधितो द
 लितं कलौ ॥ ५ ॥ प० क० कालस्मात्तो नाभं
 कांती की० गतिं ततः कमलपद्मा कल
 सीतामक्षं ॥ ६ ॥ वस्तुवस्तुमिति वस्तुगुणा
 रतं प० स्यात्तुल्यं विज्ञानसंयुतं ॥ ७ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

अथ जेकरा वैराग्ये वतु ३० सपरला प्रता १७५१ दीप का चः ॥ अथा तस्य मननम मतिना तपश्चतुष्टये कृतपक्षो नाम जेला त वृत्तानति विषय नाव न्नीत आत्मा पुरुष नैव वृत्ताना
 ॥ वा गच्छ तस्मिन्मते वापि ब्रह्म तिः स्यान्मते सदा ब्रह्म ॥ इति ब्रह्म तः तः वा मः प्रो वा वरु नि म्मा न नादा ॥ श्री ना मः ॥ ५ कृते का सः कना सः प्र व वा द व न गो ब्रह्म ते ॥ ५ अ गच्छ ॥
 वरु नि ना म की त ना त्पु क ना ३ पि ।
 न त न ॥ ५ ॥ अ द स व स ते कृ नो वि ता
 सु दे राः स्या प्प नी य स ना ति दु वे व ना प्प
 अ कृ सु ना मः सौ मि ति गा सा मः ॥
 क ग्म तुः स द स्ती त या ॥ ५ ॥ इति
 स्ती ना म न वा य न म ॥ ५ ॥ इति वे ॥ अ य पः व व ही ग कृ ह न त ना न ल न ३ न म सा स ना ३ म सा का य म थ नी म प ना क म न त ॥ इति ता म ना ता गो वे
 ह स थ ना म ल क्म गो ॥ ५ ॥ मे ना ते ना क स म थ बु वा गो मे त वा नि ति ॥ ५ ॥ ना य र नौ मि ते ना क स म थ ॥ ५ ॥ स्थि त म इ ता क ल क्म ॥ ५ ॥ ना मो क ति

स्मृतं यमसाते पुत्रपुत्रवृत्तं च ॥ ५॥ मन्त्रश्च ॥ ॥ यत्तु कृतवताना यथा तत्तु वेदितुं तत्तु वेदः स्मृतं यमसाते पुत्रपुत्रवृत्तं च ॥
 नेनेव परमात्मनो न भवति नैव तत्तु वेदितुं तत्तु वेदः स्मृतं यमसाते पुत्रपुत्रवृत्तं च ॥
 तन्न वयं गच्छामहे नैव सा नो वा ॥ ॥ मेव नास्ति पञ्चानामुपे विज्ञाया रसवित्तः सा गतः यथा ॥ तमेव सवलोका नामीरवतः परमेव सवतः
 त्वं जतीवैव कृतवित्तं तैव नरा नी ॥ ॥ विना गच्छन्तया मी सवस्मिन् गति गवानुत तत्तावन भू पन मात्मा ॥ ॥ पनं ज्ञेयं तिनित्तं स्मृतं केवलं यथा ॥
 इत्थं नीति तस्मात्काम्यं सामः कम् ॥ ॥ ललो वन भू वरुणा मकरो मेव तास्ते ते वा अपि पुत्र भू ॥ ॥ कृष्णवताने तव ताका मः पुत्रो विवित वि
 यति ॥ ॥ यत्तु गोपिका तु तस्य ॥ ॥ वक्त्रि मा न वा म्मे घा ॥ ॥ गा वो तव तु सा वस्ति म्नि पद्माः प ॥ ॥ तिव ताक्ष नित्तं पद्मः पुत्रो नैव यथा मः
 कस्तु निचा घा ॥ ॥ इत्थं कृता नृवि ॥ ॥ स कृष्ण घना मः कस्तु ललो वन भू गत स मोच्यौ मा गन्ति न पाउ कस्तु कलात् ॥ ॥ पतस्ते गस्तु नृवि रस
 मानु कः स न सीतया ॥ ॥ परमेव ना नित्तं वक्ति पवतां सत स नित्तं नृ ॥ ॥ तव कस्तु उ न म्मानं गत्वा ल क्का मा पु व क्तु वा वा घ स नैव मिति
 कृतं कार म स नित्तं ॥ ॥ ५॥ मन्त्रश्च ॥ ॥ श्रीना म्भ गस्तु मा स म पतः ॥ ॥ मिते व विरा वत भू निवेन ये द मा प्रो प म व ये सीतया स नित्तं

१७१७

[illegible]

१४१०

पनमानं ३२५० पन्ना मातरं ३५०० पन्ना मातरं ३५०० पन्ना मातरं ३५००
 वृत्तो देवी तु कांताल ऊया विता ॥ नामः सीतां स मावीर्य प्र स निरु भु दीतु ॥ कननी रर निरु सीते सु स मा पु रि स्या ॥ प्रतन निरु म त्रि निरु तं म प्रान
 कप नाना मा भत नत के क जी दे वी न नि ३२५० प्र नः ३२५० इतु का प्र स २० ती स्य पा ३ के न नि नि नि ता तु न ले ना म व ३२५० प्रान को मा मा स ना र प्रान
 सि वः ॥ ५५ तस्मिन्ने व स ह्ये ३ इ का न ना प्र वा सि न भ ना न ३२५० प्रान को मा मा स ना र प्रान
 स्मि त ॥ प्रतु ३२५० प्रान को मा मा स ना र प्रान को मा मा स ना र प्रान
 वे ग ता ते म न य स्त ल स र ना ने म न य स्त ल स र ना ने म न य स्त ल स र ना ने
 पा नि नः स क लान् दे व म र ने ना ति पी ठि ता नु ॥ २५० प्रान को मा मा स ना र प्रान को मा मा स ना र प्रान
 सीता म मा र ३२५० प्रान को मा मा स ना र प्रान को मा मा स ना र प्रान

मनगाथा

सतीपेन निषणा पतिने वता पादस्य वाहनं वक्ष्ये पादे स्वां के निथा प्रवासा मस्य रसांति मालो को रुका ना मनि तस्य रसांति
 स काजा कै क श्रीतल नंततः कै क श्री प्रतः पाउ के वे स माय न ता मना मे व रुतः सा निन का ती ह्वा निं वल्ल ना माय से म क म तान न म प्रत व
 रप ते का मा ति पे कः कै के य मा म ला म ला मे उ स मो त व तु न्ना पयः पे न नि ता या ति स र र मा यो रा ज न क म म र नि वा ति म दी प ज क कि मे का
 म्ब म पिा इ ति स्ती ता व वः रु ता तु दे वी उ त मा न सा स्ती ता या द र नि क तु प्र त म स म म प अ त म ह्वा ता रु न नी स्ती ता प ति नि वा त या
 कि ता उ प वि सै व तु ने कै न स स के क ला क लि क्ष तु ने वी स स ता ह्वा न म र व के क ता क लि व म म थ प ति व ता न गु म न ता व र सा ति
 म ती स म न स मे व वि क स्ये तु दे वी व व न प्रा रु स्ती ता उः स वि नो स न प ति व ता नो न्नी ना म ना प र स ति प्र ति को म म त या त
 ल ग मा ना नी न रि प र मा मि तु ते न स्ती ते क म ल प ता कि न व वा धि तु म र ति पा उ वा ने म ते त तु सा स्ती ता वे ति ने व ता य स मा न व नि मा ति
 मा न म स्ते वा धि त त रान प वे तै प त ये दे पि पा उ के म ह म पि ते न न सा न स मा की मे दे वा ना म पि उ ल ती ये थ वा न क तः प र सः वा धि स म ति
 वे क न रु ति पा को न त व तः रु स रं यो प वे स न न इ त्वा क्वा प र को त र ये न न पा उ क यो व य न प्र ग म्भ पा उ के स्ती ता पा द स्य स प ता य को १०

तस्मात्तद्विराविस्वास्तु जेतवो प्रायेव ॥ ३ ॥ केदत्वासां गन्तुं वा साय यतिः ॥ न जरा मोहवान्वा विमोक्तवत् ॥ तत्तज्जुथी ध्याता नान्यतः ॥ नाभ्युपगच्छति ॥
 न च प्रतिजानते वा ॥ ३ ॥ कृतं किं विदुः कृतं तोयानवापदभक्ति कालेनेक कालं वा यः कुर्यादेव न त्वत्तु न च विमोक्तवत् ॥ नाभ्युपगच्छति ॥ नाभ्युपगच्छति ॥
 स्वमाधस्येन न मादवनसाधनन्यो ॥ ३ ॥ तातुं नैवरा क्कोतिकुर्यादवननरनिर्भयं ॥ नैकं वयस्य विदितस्योथोयाति न स्य ॥ रायमंतस्मात्तव प्रयनेन
 कुर्यादामावनि ॥ ३ ॥ परिदध्ना ॥ ३ ॥ एवमुक्तं मन्त्रादेविनामन्त्रं वदन्ति ॥ ३ ॥ मया स मासतः सर्वं किं तु यः सोतुमिच्छति ॥ इति सीतवत्सु ॥
 न नाभाजगो न नगाप्रकांठे ना ॥ ३ ॥ मपुका विधानकथनं नाम पंचमः खगोलः ॥ ३ ॥ एसीनाम ॥ ३ ॥ वंशाय नमः ॥ ३ ॥ एकावती ॥ ३ ॥
 तगवन्कुत्रागामसि ॥ ३ ॥ सुतीक्ष्णैः ॥ ३ ॥ अततो वामः सुतीक्ष्णैः न पृथितः प्रवि
 पितस्त्वयो ॥ ३ ॥ न गच्छास्मात्तमप ॥ ३ ॥ न गामस्य सीतया ॥ ३ ॥ गच्छन् पथिरानैरा मोलकमाना वाक् ॥ ३ ॥ मज्जवीत ॥ ३ ॥ निरुक्तो यः ॥ ३ ॥ उमागिः कं ॥ ३ ॥
 वनागामि तभूस्ववेकानि परिलाख्यताः ॥ ३ ॥ पुनर्विचारिताधरानैर्विरा मन्त्रेण मोतुका आसुलक्षणा ॥ ३ ॥ नामस्य वचने ॥ ३ ॥ सुकालकमाना विगतकृत् ॥ ३ ॥
 श्रीजम्बुद्वीपि तातुकाया सुसत्वरं ॥ ३ ॥ एसीतो ॥ ३ ॥ कैस्वमालोस्वपरिलेन मत्तगं ॥ ३ ॥ यतिधनामं ॥ ३ ॥ विद्या वया मास वाहनैर्वी कथयन् ॥ ३ ॥ एसीता नाभ्य



ततः सा १७७ स्तन क सुने लि तना क्यल रूमी ० ॥ अर्धेन जाय वनरा जाय गा न न मय न
 ७३ पते व न गान वि ० ३१ अ कौ त नि स्त स नित्त व नो ३ के न । ती छे न मृ ध्रु वि थ ते न रि व र्ध रि वा तु ता आ तु म नि ० रा म न रौ ल नि स्र ज व रु ० आ थै दि न ०
 म तः व न गान वि ० ३१ १० ॥ सी ना म व ०
 तः रा न गान ग तो रि म्मा य स्या म न ०
 क ० १७७ प ते ० रा न गान प थो । न मो
 मो ना की व लो व न भ व त ते मा न ० य
 ति स्तु त्मा नि म ० त कै १७७ ॥ ७५ ॥ वा
 न ग मे ना य ता व के न ० न मा म की न स्र न स्या म् उ ज्जि त न ० ग ० क व न स्र म् उ ज्जि त न ता न ० ग ॥ त्व आ त जा स्र व ग ता द ता आ ते थ न्ना ने न वे तः प न ता द ता ते । स्तु त्मा न य्वा व स्र
 न ता क ता ते क म स्र स्र व ० म्मा ने व ने व । त्व ये व त कि ० रु न य त्व मे व मा म् अ न स्र मा क प च्चा त वा व प ॥ कि ष ० य्वा ने न य्वा । स्ति ते वे त दी रा ना क म्म द तो व रा थ ते
 स्ति । नि वा ना तौ व य क म्म शो ना शान क त ० व य त् । तं व म्म प जे त त्प ते न प्री तो त व त्त तो । व न इ ति पु ष्पा ० क लि ० ३ वा स्र ० द ता ० ३ न गान व न ० । त्व मा म्म ० ॥

[illegible]



[illegible]

मातृवातिरात्मतके प्रेतान् जलमाव न मे दयेत् । तु मे प्रथमं पुत्रं ॥ १ ॥
 मय्येति ह्यविधिं यत्ना बलिं कृत्वा । न कलापि मय्येति न शोचान् पुत्रं दितो यत्नेन । नाम मय्येति न मस्कान् न वत् धीत्मा ॥ २ ॥
 तस्मान्मात्रं वाचकैश्च कृत्वा मोक्षं ॥ ३ ॥
 कृत्वा पुत्रं यत्नं कृत्वा ॥ ४ ॥
 कानि च लोका मालि रयत ॥ ५ ॥
 तुषांतं पुत्रं जगत्वा मता मेव ॥ ६ ॥
 ययके न किमपि के सनात् ॥ ७ ॥
 मातं नृश्रीकं तनतं ॥ ८ ॥
 कथं मया पालयं ॥ ९ ॥
 मातृवातिरात्मतके प्रेतान् जलमाव न मे दयेत् । तु मे प्रथमं पुत्रं ॥ १ ॥
 मय्येति ह्यविधिं यत्ना बलिं कृत्वा । न कलापि मय्येति न शोचान् पुत्रं दितो यत्नेन । नाम मय्येति न मस्कान् न वत् धीत्मा ॥ २ ॥
 तस्मान्मात्रं वाचकैश्च कृत्वा मोक्षं ॥ ३ ॥
 कृत्वा पुत्रं यत्नं कृत्वा ॥ ४ ॥
 कानि च लोका मालि रयत ॥ ५ ॥
 तुषांतं पुत्रं जगत्वा मता मेव ॥ ६ ॥
 ययके न किमपि के सनात् ॥ ७ ॥
 मातं नृश्रीकं तनतं ॥ ८ ॥
 कथं मया पालयं ॥ ९ ॥

अ ३ ॥ १ ॥

१४२

उलसीकुं ३ पञ्चाशै मालिती मालिका वि ति थ क न वीपै स्व० प काशैः रा म० स्व० पु क ये त त भ व न स्व ति न लो त्त न इ ति थु प० नि वे अ वा स्वा क्क० वि व ति स्व० य क्क० म ति वी
प० प्र न री चे त्वा त तो मृ श्ण० ष ड् सा० न० त र्वा तो क्त प री ला व्ति त न डै वे अ० तु ल र्सी य क्क० स० प्रो क्ता स्मै नि वे ३ ये त्वा ॥ १ ॥ रा ली त क्क० स० प क्क० रा रि न क न र ति त० पा या पु प
सु प० ले अ० पे चः सु बो ज्ञा० स्ति त म म त प री ल० सा नि सा य० सु सा य० आ क्क० पा क्क० स० मी ड्मे० न य न न वि क्त न० की न कै ला म री वि स्वा दी य० रा क्क०
ना की प नि क न म म त्ता ज्ञा न को ष० कृ ष स्व० ब्र ह्मे रा यैः प नि त र्वा वि तिः सु प वि ज्ञैः स म्मे ता ल क्क० सि० क व य क न य आ द न० वी ड्मे सा न भ न म की ड्मे
प्र क ति त म्म सै रा रि य न् प० हि तो क्क० नृ त० त्ते पा ते क न क न वि ते व ड्मे रा र्सी व मे रा भ गा० ड्मे वि क० क्क० ल० रा य द द य द द य द व म न० त त भ य स
वा स० स क पु न० म क्क० ह० तु व मा वि त्त न क० ड्मे रा री नि रा० सा नि दि र रा म्म दः प्र न र ति यै त्वा थ नु व ति म्म स म्मे ड्मे व ३ र ति यै ड्मे म र ति म्म ल व० म
आ ति क लो ल वृ म्म० क म्म क्क० दि न क पु न० तु ल र्सी प त० ता० तु ल० व स म्म प चे त्वा ॥ १ ॥ आ म्म र ति यै त्वा य द र ति क ल्प यै त त व म्म ने ॥ भ द्मे नी ना क्त न० सी
म म्म० ग ले सा य क ल्प सा ये त्वा वै रि क० म्म० त म्म य य दि य आ त्म षा० क लि० ते त भ क्क० प० ने व न म र्क य ति व स्ती र त न व ति ति ॥ अ ये अ० स रा य ति
त व म्म म ती स री क० ती य ति ॥ ३ ॥ वि व वि वि न० वि नृ त० रा न म्म न त्त्मा ति क० प्र म त्ता ल त वा वि प पो त० व० ने म द्मे पु ३ व ते व न म्म न वि ० ॥

नाम्पकाराप्रजेष्टुधीधृद्वितीयात्मादि कैरेवै न स्याद्वक्तृत्वं न तुल्यं कोऽपि तन्मात्रं तन्मात्रं पत्रमज्ञात्मा नः कृत्वा च केतुनिवृत्तिस्वप्नवृत्तिस्वप्नवृत्ति
 वावाचुर्देवस्य च लं कर्षणं रातिं नानांतने। प्रष्टुं प्रीतिममनामनिष्ठं नतीं च केतु। पद्यमा — स्रज्जातेषु रुनुमं तं वसुधैव कुटुम्बकम् न तं वापि यो न स्रज्जातेषु
 वांगरु कमातु। रातुष्टं जाज्वलं तथ
 तौ। द्वितीया इने प्रायेमं ति। पुष्प
 कं वल्लवाली किना न ३ ततमं सनिकं
 सुधीधृद्वितीयात्मादि कैरेवै न स्याद्वक्तृत्वं न तुल्यं कोऽपि तन्मात्रं तन्मात्रं पत्रमज्ञात्मा नः कृत्वा च केतुनिवृत्तिस्वप्नवृत्तिस्वप्नवृत्ति
 धाराः स्रज्जातेषु रुनुमं तं वसुधैव कुटुम्बकम् न तं वापि यो न स्रज्जातेषु
 उरुवां तु सगिनीरासमज्ञात्मा नः कृत्वा च केतुनिवृत्तिस्वप्नवृत्तिस्वप्नवृत्ति
 स्रज्जातेषु रुनुमं तं वसुधैव कुटुम्बकम् न तं वापि यो न स्रज्जातेषु

नावाभावे विस्तारः। सान्नायिकानां तु निरूप्यमानं निमित्तं विस्तारः प्रजापतिं देवाणां चानिततः पञ्चमपात्रं चानिततः पञ्चमपात्रं चानिततः
 वित्तमन्त्रः गोवृत्तं कृत्वा मन्त्राणां चानिततः। १८॥ अथ विष्णोः पञ्चमपात्रं चानिततः पञ्चमपात्रं चानिततः पञ्चमपात्रं चानिततः
 कपुतापि सुगन्धिना कर्तव्यं पन
 नैव स्थापयेत्तन्मन्त्रं भीष्मदेवा
 तुल्यं यद्येवमौ सुन्तरीरन
 तागमः १९॥ पुनश्चिन्ता यथा म
 नः साक्षात्पश्येत्। प्राणादिषु
 पाणिनां च रात्रौ तस्मात्समं यथे
 श्वरं प्रथमादरात्तान् वनं वनेष्वप्युपस्थिताः सौम्यं कृत्वा यतिभिः साधुभिः प्रजापतिः

[illegible]

क० म० ॥ मान० ३ क० ३० ॥ घ० म० वि० म० ल० स० नो० उ० न० त० त० ॥ प्र० क० ति० प० ता० मि० वि० का० न० म० य० के० स० रा० न० ॥ प० वा० रा० द० वि० वि० का० ठ० ॥ क० मि० का० पु० न० ये० त० त० श० क० ले० प० त० पु० न० ये० त०
 भ० ति० स० मा० सु० ये० उ० पा० व० का० न० ॥ प्र० मा० व० स० त० ति० ति० वि० गो० न० य० स० त० वा० दि० का० न० गु० मा० न० ॥ स० त० न० रु० स० मो० त० य० रा० क० न० व० न० क० न० व० क० क० क० म० आ० त० म० त० न० त० प० न० मा० श० न० ॥ त० रा० न०
 स० म० न० ये० त० ॥ प० न० त० त० त० त० यो० वि० त० वि० आ० त० त० सु० नि० म० लि० न० नि० न० क० म० आ० स० त० त० व० नि० क० न० क० त० यो० य० ये० त० ॥ त० त० न० न० त० त० व० वि० वि० वि० व० त० न० रा० कि० स० यो० व० ये० त०
 वि० म० नो० क० वि० मि० श० न० कि० यो० यो० गा० व० प० व० मी० ॥ प्र० श्री० स० त० मा० त० ये० श० न० न० य० द० न० व० रा० क० य० श० त० यो० न० म० ॥ त० न० व० ते० वि० वि० वे० त० द० न० त० न० स० व० त० त० त० न० न०
 ति० वा० सु० वे० वा० य० वे० त० पि० ॥ श० म० त० त० स० व० ति० म० का० ये० ति० यो० ग० पी० ठा० त० म० ने० न० म० श० मु० ल० य० के० न० वा० ने० न० य० मा० त०
 ७४४ ॥ इ० रा० मि० क० म० आ० सु० यो० म० आ० व० न० ना० दि० का० न० स० म० य० प० वा० ना० न० प्र० क० न० ये० त० ॥ वै० त० न० वि० य० न० ना० म० स्थि० त० ॥ ० ॥ य० य० य० प० क० के० ॥ स्वा० स० मा० मे० धो० ग० त० त०
 वि० त० ये० क० सु० मा० न० लो० पा० उ० का० म० द्र० यो० मी० य० सु० तै० सि० यो० क० सि० य० यो० ॥ मु० द्रा० प्र० उ० र० यो० त० स० त० द० रा० वा० व० न० ना० दि० का० श० मा० वा० न० नी० र० धा० प० नी० व० स० नि० धी०
 क० न० मी० त० यो० ॥ स० स० म० नो० थि० नी० सु० द्रा० सु० म० जी० क० न० मी० त० यो० ॥ ॥ म० स० क० नी० क० न० मी० वै० व० म० द्रा० सु० द्रा० त० धै० व० ॥ रा० स० व० क० ग० ना० प० म० ये० न० को० सु० त० गा० उ० श० श० री० व० स० व० न०
 सी० व० स० व० न० म० ला० व० यो० नि० मु० म० प्र० द० रा० यो० त० ॥ प० ता० ति० स० पु० र० रा० ति० ॥ मु० द्रा० ति० सु० वि० व० न० म० न० यो० न० म० म० व० यो० नि० त० ॥ मो० उ० ते० जे० सु० वे० र० वि० सि० त० यो० म० ने० रा० यो० व० ने० वा०

यकमडागाउगास्थाप्रदरचितुपनभीरुत्तयनेनपोपनंतविनिस्तपेताभ्यापातातिनामदोभ्यानिमित्तानिकलातवेकलकाविनि
 तागितेवतिन्नरुतादिवापाचाप्यमिन्नरुतागधमपुपकधिनिधेयातद्यैवावमनीयाधमसैतातवतुसयगभात्मनःपुनतःरा
 संपुर्ववहृद्यापयेततमभ्यन्त्रपातादिपातेषुसंपुयसजिलेरातगतताप्यपातेरातवागपुपसाकृतायकाभकुशाखतिलकुवरेखव
 पासाप्यसिधयेपात्रपा
 धावमनेपातेतुत्राकृता
 विजातिपतरिभन्नयवापा
 वप्रमिताभारुनात्रभयते
 इतिगीतवसंगुनामायामेअबोप्राकांठेनामपुकापावासावनातिकधननामतृतीयःसर्गः॥असीतामवंगुनायनमथासी
 ॥सिवधा॥॥तिनेसापुठ्ठालिस्त्रिमभ्येतानवयंलिसेतुतन्मभ्येवीकमालिस्त्रतवयंसाभ्यामानिसेतुवितीयावयवतये

भूषणं तं साधकं तदा। कउ इयं वता खे लिसे डी जां तने न मागत सव प्रम वा तां व वे स ये क अठ चि मानु। दी प्रता कं न ड से व लिसे डी क
 भाषा खे न मा मा ये त र ये नं ग मा लि से त। को थं को मा वा तने न लि स मं त्र ति तो गि न ग व त त यं सा स प तं से नो के वि लि से ख ना नु। के ख ने द सा प त व व ग जि
 क म यो लि से त। भा तेषु मा ला म नो व म नि वि लि से डु मि स र्प च। कं ते पं रा क ना म्ने वं प्र न न ज र नं लि से त। ते पु ना ना च मा सा मा नि वि
 लि से के स ने न मा ग त व दि वा इरा क र्णं वि लि से वा द रा। क न ग त धो न मा त ग व ते वा सु दे वा ये इ त य न को नि सा कं क के स ने व व द का
 वे मा स न लि से त। त व दि षो ठ रा द नं लि स त के स ने दि य न व मा स म ति स च कं द न व ड
 न म ती स मा लि से त। रुं स तं वं लं मं कं कं व लि से स म क र ता तो न दि म नं प दा ति
 वि लि से म त ना मा नि लि स र्प स न न व धा सु त म न क म न वा स्यं य दे त र्पा प्र त चि क न
 मा त नी जा नि वा द रा क मा व दि अ ति व व क र ती। तु म रुं व क रा ला ल नं ने सा त य स म वि त न वा नो पे तं य ना र म्प दि त वि त म्प रि मि त वि त न
 स च त न म न तो वा सु कि से व त मः का को र प ठ को। म क र म स यो रा रो ग नि को रो व वं म ड ल न लि स त स म दि रु वि
 की ति

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

[illegible]

[illegible]

१४७

वेमाततपुकापीलतापुवेतु। स्वग्लोक विधानेन विरुद्धं प्राप्ता न वधस्य कासाका नो मन्त्रं न ब्रह्मा म त्रिस्तुत्यतथतेन सन्वित विधिस्तु
तोनामं स मवयेत। नृदेवो वा जने वा के प्रतिष्ठादौ विता वस्ये। मासा लवामरिनायां वा पुकयेत मत्तं त्रितम प्रातः स्नानं प्रकुर्वीत प्रयत्नेन
राधये। वेरतलो नितै मन्त्रे मन्त्रे प
योभान गनेन मन्त्रे न न मन्त्रं पम
तसीनामवन्दा स्यन्मन्त्राये ते कः
दैव रो वितमवतुं किं स्य रां रा
दैका मातमनापिवन्मन्त्रावा वधि
तुन न साग क यीन्त्रे लन वन्त तदेव ता द्वा न का न गान यो देवः पुक क रवा य पुका इ का पित तत्तरी लन प्राप्ता न भ्रादिकं स वत स्यै सा मातम नेन मन्त्रं
मनेन मन्त्रं नानका इव देवान् पुकयेत। इन्मन्त्रो नाम तत्राय गं गोरो रा च तेन मन्त्रे सन्विते दौ शि वा य पे सीन्त्री पन रा कये। निन्त्री उवा धा यन सो दं के

मन्त्रोक्तं विधिना सुखादीनां स्तोत्रा नतत् ॥ सुतीक्ष्णम् । अथ त्वन्मात्रेणाप्यन्यथा प्रमेयस्त्रीतापते शिवविनोदिसिद्ध्या सिद्ध्याः सौख्यं च प्राप्तं
 तन्मात्रेण पादपोतनामातिना मञ्जितं तव वीर्यं दास्यते मा भूय सर्वकर्मगता मङ्गलानि कुरु कुरु त्वन्मात्रेणाप्यन्यथा प्रमेयस्त्रीतापते शिवविनोदिसिद्ध्या सिद्ध्याः सौख्यं च प्राप्तं
 समवेष्टुं मोक्षकारान्न न अस्तु ॥
 पक्वनेषूपयाति मायासेवानु
 मुद्राभतासीरा मोक्षितधियां
 मितपलाः पनता स्थितस्था ॥ १७
 पिप्पलीमाया विहङ्गनकृतं स्व
 समतां पनमप्येषां सौमित्रिणा निधतले वितपा ३ पद्मानीलोत्पलश्रुतिमन्त्रगुणप्रकारां महागये यमानिरां पुणामाभिनामनका
 नमुना मतवतुपमरोवरदेरा काला मुपायिनिकृतिः प्लवित्तिका राप्रतो हतो धम्म गोदन मेतरेव तु पवितातु रुद्रयेन पवनं विकारं केच

[illegible]

[illegible]

सप्तरोमितामनामसु विस्मिता ताता ता यथा वसुधा तू ता नु । स्वपावकसंकाराः कुम्भा ३४ राक्षसपत्रतथालोका नानादिता मूर्तिना मूर्तिना ।
 देवानां वक्रांतिक मन्त्रलो कानोदता । सप्तमक मन्त्रावने वि कर्षतः पितामहः सानुवनः १२२३ । पितामहः सानुवनः १२२३ । पितामहः सानुवनः १२२३ ।
 तुकाव ॥ ५॥ इति सीत वसु ॥
 दिव्याते मुनिसंज्ञाः समा
 नामनी विपाथ मरुत क ह्य
 नारायण स्वत धै वातावका
 रायि नमः । तद्यो प वास्तिना
 योगाः समादितामनामसु विस्मिता ताता ता यथा वसुधा तू ता नु । स्वपावकसंकाराः कुम्भा ३४ राक्षसपत्रतथालोका नानादिता मूर्तिना मूर्तिना ।
 मानुषपुत्रा मन्त्रावने वि कर्षतः पितामहः सानुवनः १२२३ । पितामहः सानुवनः १२२३ । पितामहः सानुवनः १२२३ ।

मन्त्रवर्तिनः पञ्चमः श्रीः विनाथः परस्मिन्नामनाजीवनायताकविश्रायनोरुविप्रनृपकाराः। इवसिस्वाकावामकोपमूर्तिनारायणस्वदंस्वो
 विमोचितस्वया। इतः पञ्चमः त्रिनाथानविद्योः स्मृतिः स्वरासे सुतवो परांतये। तन्नामनाजीवनायताकविश्रायनोरुविप्रनृपकाराः। इवसिस्वाकावामकोपमूर्तिनारायणस्वदंस्वो
 दयः तेषां त्रिनाथानविद्योः स्मृतिः स्वरासे सुतवो परांतये। तन्नामनाजीवनायताकविश्रायनोरुविप्रनृपकाराः। इवसिस्वाकावामकोपमूर्तिनारायणस्वदंस्वो
 यथा नामनायसीतानामनायवेधस्यै। तन्नामनाजीवनायताकविश्रायनोरुविप्रनृपकाराः। इवसिस्वाकावामकोपमूर्तिनारायणस्वदंस्वो
 तस्मै न प्रसन्नो न पुनः न नमः न नमः न नमः। तन्नामनाजीवनायताकविश्रायनोरुविप्रनृपकाराः। इवसिस्वाकावामकोपमूर्तिनारायणस्वदंस्वो
 करानि सप्तमो मुक्तो ज्ञानवतां वरा। तन्नामनाजीवनायताकविश्रायनोरुविप्रनृपकाराः। इवसिस्वाकावामकोपमूर्तिनारायणस्वदंस्वो
 इति इति वनं तस्मै प्रपन्नानां ननु तममम विनाथः प्रेषयामास तु यः स्वर्गः सुखास्तत्र दत्तातु तं तीमदलं विनाथः नास्तु वैने। ततः सीतां स मास्वास्त
 नामोलम्भाय प्रतप्तानतः तन्नामनाजीवनायताकविश्रायनोरुविप्रनृपकाराः। इवसिस्वाकावामकोपमूर्तिनारायणस्वदंस्वो
 तस्मै न प्रसन्नो न पुनः न नमः न नमः। तन्नामनाजीवनायताकविश्रायनोरुविप्रनृपकाराः। इवसिस्वाकावामकोपमूर्तिनारायणस्वदंस्वो

[illegible]

अनं० गप
का०३ प्रा०
त० ५

१५५

सीमने वरुवाव ॥ ॥ अथ तत्तद्विनिर्दिष्टं तावता तेन नृप न० न धन्यात्वा मुनि० न मस्कृत्वा प्रथमो ३०३ कावन० ॥ प्रविश्य विपिनं प्योन० नामोल्लसाम् अ ब्रवी
ता इतः प्रथमेन ग० तं व० उ० गि० स० वनं ॥ अनुगम्येन स० यो ह्येता नानपि कने ॥ तद्धनये चास्मा म्पदं पश्चात्तु तमवे जीधनं ॥ नम आ वयो मध्या गाली
तो माये वात्स पनात्स नो भ
निरा० गात० पु० उ० घा० १० म० दास्व न०
सर्वतु ताना० व्यादिता स्यामि
स्य मरि नो मरुतु ॥ न वल्लभा
कु० यः प्र० काः काल इवा० त क० म० जाया० त० ना क० स० ह० स्त्रा० नामो ल० क० म० ब्रवीतु ॥ परम तात मदा का यो ना क० सो य० मु० पा ग० त० श० ॥ ॥ ल० क० की क० त० ॥ न
सि० म० मा० ते क० ने क० न० ॥ ३०३ क० वा० म० मा० का० य० स्थि० ना० म० इ० वा० वल० भ० स० तु० ना० म० न० मा० ना० घ० ल० क० म० कान० क० न० घा० ॥ अ० ह० दा० स० त० तः० क० वा० ती

काय भन क्ती खन नि तत नी त्व मे व गति का र ते ॥ १५ ॥ अतः पुत्र पश्च प नो न मः न ता वि ली त्वं रा ता न ने । अ न्न वि तति अ न्न प न्न न स्य प न्न मा त्म
 न भ त त त्रु पा न्न त्रु पा त्वं त स्य त स्य ता वि ता मि नि । १६ ॥ पु न्नो न न्न वः सी मा न्न स्त्री त्रु पा त्वं त कान की । प न्न व्र क्ति म् त्रु त्वा स्त्री १७ ॥ ते दे न न त ति । ना म्मो
 ना वा ग दं ता त्रु त्वं रा ता न न ना सि नी । त व त्रु पं वि काना सि त्व मे व क्क सा त्म के । इ ति स न्न त्वा तां सी ता म् न न गं स
 स १८ ॥ दौ । का र्त्ती र क्क कु म्मो वे त व ३ मं न क्क व ४ न न कौ रो च व स न न वा पि तु व न्न न्न त
 नि क क्क लं क्क कु म्मं त घा । स ता प कानि तां ग त्वं मा लि न्न प वि वे र्त्ति त्वा के रा व न्न
 ३ दौ मी य्त्त प पे न्ना त क्क प सि न्न क्क ग्गं पि त न्न कान कान स १९ ॥ क्का सी तां स न्न स न्न तो प मा न्न स न्न स २० ॥ अ व कानो द्वैः पा ति व्र त्त त पो
 व ल ता त्वा म्म ग न्न गो प ति म्म प्पा म्म सी ता स ता त न्न म्म म्मा । व २१ ॥ ले से व स ता ति सा ता द ग्गि सि सो प म्मा । त घा त त्रु चि ता सी तां स्त्री क
 २२ ॥ र वि वे ता व न्न म्म न न्न वः पी ति म्म ने म्म त प सि न्न न्ना क्क द व र्त्ति म्म भू त त स्या रा व र्त्ति पी त २३ ॥ ता म्म रा सि नि ता न न्न

कृत्वा प्रथ

भावितः तापसैः स्त्रियैः उवाच नृप नमो ब्रह्मभूषणम् ॥ इति सीतलवचनं ॥ यदनामो यतो नानाप्रमाणानामादि निष्पन्नमतस्तत् ॥
 गच्छतु ते सीता मा मा ब्रह्मा ॥ नमो ब्रह्मभूषणम् ॥ इति सीतलवचनं ॥ यदनामो यतो नानाप्रमाणानामादि निष्पन्नमतस्तत् ॥
 वामिनी नो मा मा विराः ॥ नमो ब्रह्मभूषणम् ॥ इति सीतलवचनं ॥ यदनामो यतो नानाप्रमाणानामादि निष्पन्नमतस्तत् ॥
 उः स मा प्रथम सीताल ॥ नमो ब्रह्मभूषणम् ॥ इति सीतलवचनं ॥ यदनामो यतो नानाप्रमाणानामादि निष्पन्नमतस्तत् ॥
 स्मृतातनत रावु म्म नु म्म हा मेत सी म्म वं का यन ॥ नमो ब्रह्मभूषणम् ॥ इति सीतलवचनं ॥ यदनामो यतो नानाप्रमाणानामादि निष्पन्नमतस्तत् ॥

योऽसु तत्र ते लोकाः सन्तु निराश्रयाश्च पतिस्त्रेदीय ते स्थातिः क्वीवितो ना तस्य संशयश्च ववश्च क्वातु सा देवै र्द्राध्या न के व नां ग ना ॥ १७५ ॥ पुन न प्रो
 पविस्ते पशु यो र्द्रा प्रो जता तु वि ॥ १७६ ॥ उवाच न व न सा ध्यातु वि तो तु दि वा क न श पति व्र ता यो मा दा त्मा त्तु नु क्वी वितो वि क श सौ न य स्य
 निधिः सा का शु कौ वो द रा य वा वि क श य मि ध्रुः स त्त वा दी व स त र्द्रा प स म न्न त्त य त्था सा ध्या त्तु नु तः स न ने म स व ह न ना नु व द न ॥ १७७ ॥
 व न त्वा व न त र्द्रा दे वाः स्व त व न य द्रुः १ व पति व्र ताः स न ति प धि वा ना ना क मा श्र त र्द्रा ह्री ते म ना ता गे नो के पु न्ना पति
 व्र ता पति व्र ता नां थ म स्तु ता इ री प्र प्र वा स न ते ॥ १७८ ॥ त्व दि ध्या सु ग गो शु क्वा र्द्रा लो क प ना व ना ध स्त्रि यः स्व गे न वि चर
 ति य ध्या थ म के न स्र ध्या इ द्रु क्वा तां स ध्या लिं ग प्र व ह्ये सी ते ति स्या क न न क्त म सु या ना म प नी स्तो तुं स द्र प व क
 म् ॥ १७९ ॥ अ न सु या ॥ त्वं दि सी तै म ना दे वि वि दानं ३ स्व तु पि ता ॥ क नु त्त प ति स्यं दानं चेतु ते रु वि स्मि ते ॥ ना म स्यं नि
 नि धि मा तै मा क नो पि तां स त सि न न प ना त्मा वि द्म नो ना मः १७९ ॥ १८० ॥ चो त म् ३ र्द्रा सी ना वि प क्षि त यः सी राः रां क नो व नि न

११६
 तस्य भीषणं कुलांगनादिरोजं तूतनीत्वा सुखे वास्तुमिह सति ॥ १० ॥ गाढां पकानसं वीतेनो कलो उवह काये । स्वस्कंधं पतिता नो मयः कलं कलं यो ततः ॥ ११ ॥
 थ काने तु गच्छन्ता स्कंधा तुलादिनाथमभ्य न हस्तास्ते न शिनसा पथिरुल कृतं प्रिऊनः । नो न वेता इया मासु पापः पापेन कर्मणि । बालित स्तेनपादेन न व कं पस्त
 धा विव्यभ विस्वलो व न नास्व प्रो वा व व व न त रावे इनात स्म हो य स्तु पुनः पीडां क नो ति वै । सा तु सु यो इया ३०० म नि षो ति न स न्वा यः ॥ सु त
 रा प त दा सा धी पति नारो न वि द्वा ॥ १२ ॥ भव नो पा पति स्कंधा वि नि स्व स्म पुनं पुन भ म्ने ति र ३ः स न ना सा धी भ न स्म वं वि विं ती स्म
 क नो पा र व व नं प कान् पु न न वीता म लीत्वा कलि दे रो को मा सु सु यो इया तु वि । इत्त क्कां क नि म्भ म्भ वि के पा प्पं त दा स ती ।
 सु त्वा र क्का प व व नं नो दि या या घ ता स्क न भ ३ नो व द्भिः । पि त प ति सो भो को व उ ता स्त धा । कं पं ते स व ते कां सि र स्म धी व तं
 म रु त्वा वा र ३ क व न डी रा नो । दे वा स प न भ र्थ य भ वि स्म यं त त सां क ग्गुः । द्वा सा धी व तं म रु त्वा ॥ १३ ॥ तै लो क्यं त म्भ सा मा त्मं स्नान स म्भ
 वि व किं त न सा दा काने स्व था काने व ज ट्का ने रु यं ग ते । क व्रे क व्रे व स म्भ के य जे व विल यं ग ते । न भै म्भे वि दाने व तै लो क्यं क म्भ वि नि त प त तो
 दे वाः स ग्गं थ व यि म्भ सा प न या भ प म्भ यो नि पु न स्तु त्वा प्र क ग्गु स्त त य त सा । त ता ग ता म्भ दा त्मा नः सा धी ता । भि ३ न डी व न । सु यो ३

नानितमं वृद्धिना वतानकासकरोल्लापतिस्कन्धे तिका धर्मनमनं यथो नो गा विष्णुं स्वयं गंतुं मरा क्कं पतिरेवता विपाम्नाप्येति का स्थितं म
 वनो प्यस्वकं पतिं तलत तद्विस्तीर्णानी तिका धर्मं विववानकाप्यतत सत्तैव वीयतां तु का विदे रत्नसमा गता ॥ सुवेण सुस्वनी नम्रा सुवमित्तं मेनो
 ननातां सुखायु पमथ स्या
 यन्मम स्वस्वदुःखं यथास्वीतं
 का ननां तद्वत्ता मय कमीता
 उक्ता ने नावं प्रपय यथा सुखी ॥
 मधुना सुते तस्यां मेन स्यात् कृतं हौं य विमोदितेन कुलतिष्ठति स्या वे रत्ना मनेन यन नं किनीता विना नमम पतन नी
 वेयं मनस्विनी इति स बोधिता तेन सा गत्वा तां रत्नं किं विदुः त्वं वक्तुं स के तं न गता वृद्धिं पुनरागत्य स्नानीत

सेयोर्धमात्मनःगीष्मं प्रतिगच्छते पस्विनी॥१०॥ सीताप्रेतवृषःसुखानामवस्थितिं विमशतामतिपत्नी॥५॥ मृतामतिवकाशमैथिली॥ विथिली
 परलितावधाकाशपाण्डुरमुपनिषत्ततवेपामानागीष्मप्रतातेकदलीयद्यामतिवाचवैदीसीतापसीतामनिदितानवधाकलिपुलक
 सापयपुष्पनामयनततः
 तिजनसीरुतेमानमधिता
 स्त्रीमासायस्वतावानापर
 सालोकासमोदयः॥ मृता
 सवलितामसपनापनिशु
 तिनःसुखमपतिसेवैवतासा
 सितावस्थितिनिवृत्ते॥११॥ पतिसेवैवमानीमासवसोऽप्यपयनीनदितारातोडनेक

रसीमजादेवहुवाव॥ ॥ स्वास्तमं लभु पाप्मांस्तं नामः सुखाति नादनां पाप्मं विस्मयं गच्छ नाम रसाति सुखो यजो हस्वायं तं सुनिद्रं मादो मः क मल
 लोचनभनमस्वकारं थमतिना नामोदं ति कीर्तयेनु॥ स्वस्तीत्तु क्वा सुनिद्रं विनमोः गीक त्पवदयोः ॥ सौता ग्प सुक्वा स्तीताये मद्रा त किपु नः सने म नाम पादका
 नना मः सुनिः प्रयतते न नमभत
 तवां ब्राह्मणैः कतिद्या वयनभ
 ते योगिनो यस्मि स नानं देविता
 वपा रावनी दाम क ता धी वर्य
 यानिका ॥ ॥ तती धी पाणिनापी
 ने सुनिद्रं बुवीतु॥ स्ततं स्वर्गं मया नाम त्वरा ग म्भन कारा गं ता यो मे ती व स व धा म्भन सुये ति विरुता त प स स्व नं ती सु वि नं थ म्भन थ म्भन व ह ता
 म्भन तस्मि तितो स्तीता पवत त्व नि नि पु र्गनी ॥ व वं बुवा ग्मां त म्भन विं त धोत्तु क्वा सना न्न व म्भ स्तीता प्रोवा व थ म्भन स्तीता मि ॥ व व न म्भन व व न् ॥ रसी नामः ॥

[illegible]

पिनामनं कनमं मुक्ति मा न सप्त तनमं तव वा निधे भवि कनोति च मः प्रेतान् सु सो द्वा ये सु सप्त दे। ना मना द्वि स्थिते पा पाः कि म धनं पु
 गता भूत पंतु या गान कवन्ति स्व व ते ता म्प रुत वा पठन्तु वे दान् ना म सप्त न सि भ्यः त्प ति था विना। ५०५ अनि र्ज क नि माः रा ता नि म मा
 बीत ना नि मा भूत त दी ना च ये मा म वि उ स्ते य मा नि ना ग ता भू मी त ना स म व चो व र्था दे ना ता व ति मा नि ना म नो य ते कु के ना म पु क स्ये वा
 क र र नि ना उ ल ति मा न ष दे रु
 ता वो दि व ति स्ति मे य या म ति
 कि मा न्। त र्था त ना स मे ना
 त ना म्प न ना म र र नि ना य व
 तु क ते र प यः त त मु न यो न्ना ना नि मा भू नान प्र र्था ग र्था क स्ये त ता ना धि ना वि नाः म ना ल व य स्ये पि तु क ते व न वा
 सि न क्ष प व प्र ति ति न सी ता मा ता वा भू ३ नो मु द्वा भ ना रा व क्षा ५१ व व स्य ति ना म्पे तु वि त कु ह म ना नि नो क नो वि र क्ते वै दे

मयोध्या

११५

ज्या निद्रामे नृप न० ३० ३० का कः स मा ग त्र कान की० दी रुत का कः विरहा न न सै स्त्री तैः पीनो म त प यो ध न० (त० रूपा ना ज वः कु यः कुरा न
 व्या रुपा मि ना। ब्राह्मो मा स्वे मा स० यो ह्य प्राप्ति पत्नी म का रा गो त त मा० प्लो न स० का रा० क्लृ ल का ला न लो प म न रूपा कः पु उ त्र व नि न ३० नि ३० ना ३० स व न
 त० का क० प्र त नृ क गौ स्त्री ना मा स० सु रा नृ मा न वा य स स्त्रि च लो को पु ब ता म त य पी ठि त म म म म य त य त य य आ दे० ३० रा न धी स वा
 य स० रा त त त त त त रूपा त प्र वि वे रा त या व द न ब्र ह्मा गा० उ द मि० ३० मा० रा ना गा धी स वा य स म क गा म रा न मा० ती तः मा कृ णा
 उ न्मा स रे व ता म त० रूपा वा य स० ती त० रे व ता स्र स० रा य म न रा कृ णो व य० ता तु० ना ज वा स्त्रा त या क कृ त इ त्र बु वा म न रे
 वि रु न न धा स्र ३० ३० दे व न म ३० न रे वा स० गा धि धि० का को र य या वि धि रा कृ त न तो तो व लि तु का० रे म त से व रा न ती म न्द्र कृ स प व न क
 कः स्त्री राः रा ना गा ग त व रूपा ल ३० ३० रा य नृ मा न की ना ध० प्र प० न त य ना रा न रा ना मा० द्र कृ त० रा म न्द्र कृ त मा म स्ति तो इ त्र कृः सो ध त व लि तु क
 ब्र ह्मा गा न रूपा न० ३० ३० न नृ पे त र स द स ता स्रौ नि प पा त त या तु न म प ना चि त व धा म्ना य रो ना रो त वे ति ति त म द्र वै वा न या ता ना म० वा गि यो गा त्र
 न म प्रा मा स० रा य मा प० न० रूपा ती ता तु वा य स० ता चि ता दी ति त त नि० उ वा व र य या वि तु न त घा पि उ व त्रः रा या० त यो क का नि मा० ३० रा य नृ ना प

संज्ञा

॥३॥

स्वभावात्प्रत्ययपञ्चतात्तम्यसातीनमासात्रवाल्मीकिस्तुमदान्पिभक्तवापाकिहीतवस्वतुनामन्मन्त्रातकन। मुनिदेवमनजेजुप्रसिद्धस्यपसातवत्। ना
मायामकधाततकर्तुकासामदान्निभनानराकृतवतातस्यस्योस्यसमकल्पवशा॥३॥ वेत्तस्यरपिनामस्येनामेनीनोपिसोनिनाह। अतुतकमदो
ननुनीद्वं वहुं परलं नमभवि
मेकं परलं प्रतिनामनामतक
न्यायापयनेवस्य॥२॥ सवैरा
नैकानैर्गुणामुतयः॥ प्रोक्तं
तीर्थावा मुनिनेवातकानामानुविप्रकल्पैः कौशिकार्थैः वेदैर्वैरोक्तकर्मतिभतपोतिनपि विप्रत्वं कथं वित्तात्तमं
नातेनापि विप्रतामवत्तस्यनामनान्मेनान्नसाधनतः। सिवे॥१॥ आवं डालं पतितं श्रेष्ठं किनातं वापि पापिनं रोथयेन्नमनाह्वेवलोकासिधुन
सोपध्यासिनेनानेनपेक्षामेस्वाध्यायेतपमोपिवा। कृतादौ ताडनादौ वनाहमनास्त्वमस्योस्त्वनेतस्मिन्नात्माहनामेतिरायामपा

का० ३५

मम रा. तो ब्रह्मा खलो के पूव त वि पाति । भन इत्त के दनिगा तव । शिवे ना प्र न मो । इति त रा स ने न मो ५० ते पू व व सिन तु त न भ प व ५० ता व न ० त र स्त वे ५०
तस्मिन् रा नी न कृ ण ब्र ह्मा स्तान इति सा का भ न स्त य म क ल य त् । प्र य ० वै त्र व ० ५० द्वितीय ० रो व कृ ण ते । त तीय ० गा ० वि व ० रो य ० पु न ० भो दे व नि ग यि भ न म्मा द त ० ता ग
वा प्र ० त य नु वै त्र व ० स्त त य रा भ
व च ना ५ भ भ ५ ५ इति सी त व
वाल्मी कि भ ५ न म स्तै त्रि ल त्रु पा
कु ता नी नो द रा यि ते तु त्र ० र्वे त द्वी
त ना वा सि नु स व स्त क सि के व ल न
वि सि त भ ५ कौ स ल मा ग त सि ० तु त सा के त नि ल या य व न म स्तै ता रु का रु ० ते वि र्वा मि ते म य वि त भ त भ म न रु गो भो ग सु वा रु नि य ना य ते । अ रु ल मा रा
प द न भु नि प नि प्र रा यि ने । स्ती ता प ते न म्मा सु त्र ० शिव को १० ३ स ० ३ न । त ० रा म स्त १ प न्नी न म्मा ३ को ३० ३ आ नि मे । अ यो भो यि प ते तु त्र ० प च तु रा

मितिमासदावकवेवृत्तामैबुधोक्तन०११ निवालिन०॥१०॥ ॥ तेद्विज्ञास्त्रिविधं च साधनेन वक्ष्ये लोकसाधनं चः प्रक० चरितसोऽनाहुनिववृत्तवाक्
 मा० सवमेतत्ता० बुद्ध्यामात्रे हानु न कति ॥ द्विज्ञास्त्रं च पितृ त्वा स्वा म गृह्यो यानुया० तद्वि॥ वाक्येयसुष्ठु ध्यानिताताप्येता निपरमिन्नं पृष्ठतो न प्र
 या० तमेव क० सा ३ व कलताये ॥ हानवाप्ताते प त सान रिम स० ता॥ पिसाते ॥ पतिरुक्ता या० कनिष्ठा मः स्वैरुक्ता त्वैवाक्येय केशवा
 दिनः स त त० बुद्धिर्वेदम० तान् सावित्री ॥ १०॥ मरुतयेव वतिष्ठ० तेवेदायेनः प० ० ० न न व सवृत्तं तत्रपि गदे वृत्तं न सान रवानि
 तन किताध स पुन निरिथाः कायान् सृजतौ स कता मतिश्च त्वयि म वापेते त कि० स्यां ॥ १०॥ मरुतयेव वतिष्ठ० तेवेदायेनः प० ० ० न न व सवृत्तं तत्रपि गदे वृत्तं न सान रवानि
 व तस्व क० सा ३ व कलताये ॥ दिनातिनितिता वा ३ मदी पातन पा० सु नै हानु नाना वितता य स विज्ञाना य ३ सागता भते वा० स म
 प्रिया य तात व व सानि व तने ॥ त कि अ० ति दितु ता नि क० म मा क० म मा नि वा या ३ मा ने पु ना म त्व० त कि० त क्वै व र र यि ॥ १०॥ मरुतयेव वतिष्ठ० तेवेदायेनः प० ० ० न न व सवृत्तं तत्रपि गदे वृत्तं न सान रवानि
 मृते उ च त वे तिति ध ३ न ता वा ३ वे ने न विज्ञा सा० ती व पा ३ पा भनि सै सा या ३ सा वा ना व सै क स्या न नि धि ता ३ पा नि गो पि प्र या व न्ते स व त्त ता न



✓

[illegible]

नास्तु उक्तं साः वा पा पु म् अ साः सर्वे तं उक्तं च उः सि ता म् स च क व स कि ना न र्मानु स्तु त जा दि रा ने रा ने भु स च स च का म ना म र्मा उ
 उ रि रा नो त वि प्र ति कि त्वा दि वै रे की का ये नानु गता प ति न क सा ति सि ध ता थ मे मे उ ख र्क प्र ता य घा ॥ १०४ ॥ अ दो ल स्तु ता सि या थ ६ स त
 तं वि श्र वा दि ने भ ता ते नै व स का रा य स्तु प नि न नि ज्ञा सि धि ॥ १०५ ॥ अ नु त्पे जा रि ते सि धि ने च वा त् ३ यो म् म ना नु ११७ ॥ स ग स्ये म्
 म स्त य दे नै म् नु ग क्त्वा स ता म् अ न क वा त् स्त्री ति नी ना ति नी न वे त न म् नि क्त्वा स पि थ ० ७ तं इ म्मा म् ति नु वे नु ग क्ता ता अ थ
 ता क्ता ते व ता म्मा म्मा म्मा गे वि उ क्ता ना कु लो ग क्त्वा तं ना न् व र्त्ता सा नु क्त्वा वा क्त्वा म् व र्त्ता ता ॥ १०८ ॥ अ नु त्पे जा रि ते सि धि ने च वा त् ३ यो म् म ना नु ११७ ॥ स ग स्ये म्
 स म् क न स्या स्या उ व न स्या त प स्वि न थ यो ग ति रान ॥ १०९ ॥ वा सी हा ना थः क नु ग क्त्वा ति १०५ न व र्त्ता ति रा म्मा पि को
 थ नी था नि व र्त्ता य नु क्त्वा नु प्र सा र्थ नु स की नु स म् उः स क्त्वा म् क्त्वा ति को स ल्प्रा या म् क्त्वा ते का य घा म्मा ति वि व र्त्ता य घा म्मा व र्त्ता ते स्ता
 स म्मा ता क्त्वा क नु गे क्त्वा ति के के या क्त्वा रा म्मा ने न ना सा रा नो ति ते व न् प नि ता ता क न स्या स्या स्या उ तः क नु ग क्त्वा ति ॥ ११० ॥ सी रि व म्

इति प्रथमः पत्रः शोला नुक्तं तान् वं न तावद्यो रराय घोरा का मुक्ति तो न पत नु विना शिरो वाप्य रुच्यं तना पवन गुरु नै चिनः ॥ १ ॥ अस्मिन् कला
 भागा गा वो वृत्तान पाने यत् ॥ १ ॥ अ न धिनः सुता स्त्रीमा ततो ता तन स्रष्टा स वे स्र वं प तित्त ज्ञे रा म ज्ञे वा न्व वि त च नु ततो निवर्त यो मा स
 प्रकाः स्र वं र प्त त म भ ना काने रा क ७ ता स्व सा म ता स्वा पिरु व त भ वि ना सु म त स्व वी स्व प्रै या मा स रा न्द वः ना का क थ वि द्रा मे म
 सा त्व चि त्वा नि व र्ति त भ को स ल्या व स्रु जित्वा व कै के ची वा पि मा त नः निवर्ति ता स रा मे म ना ना ७ सा त्व प्र बो थ नै श रा मे वि नि ग ति रु
 न्द ७ न मा लो क तो ति त भ कै के ची तान् व प्रे स्र प्रा क्ता सु न ये ना स्र ती ॥ १ ॥ कै के ची म ७ स ७ भ वं वा रि ला था न प मै मा त्मा रि म
 तान् वा स वा त्ता नु स व र्त्त स्थ स्र ता व वे त्प दे दि ना ॥ १ ॥ स्र वः स्र व त्ताना त्व मे व द्वा रि स स्थि त भ ता स्र चं ह्वा व त्त ता नि चं ता नु छ नि मा थ
 सा स न्म गो र्ध्व दे र चं त्व वे लि स क ला त्म का म घ रा स ग रो जे म भं चि स वं पु क लि त न न या न्द वा क मे त चि त्त त स्र व व न च घा स्त्री स्र
 ता वे न वा प ल्या य ति ज त्प प्र म न्म लो ता वे स स्र मि त्त घ का र मा न प्र न न स्त्री ज्मो द व रा द्रा म च क्त त न का नं मा न कां कः किं न क व

पवित्रं ज्ञानं ज्ञानं वनं वेदं ज्ञानं वीतुं ॥ पत्नीनां भवन्ति तातनम् ॥ सांयुक्तः सीतायाः पतिता र्थिना ॥ वनं भवेत्तु गच्छति सातु मर्त्यसि ॥ इत्युक्त्वा
 पितृवन्तं तां सातु विसृज्य कुरु नानु ॥ प्रययौ ज्ञानं सा रक्ष्य च नाभनं ॥ इति पितुर्गच्छात् ॥ सुखितालं स्नातुं प्रादु वनं सा सायदोक्षितं न नाभः ॥ पितृकुरु
 कुरु कुरु नीविपिनं गच्छ ॥ १५ ॥ तैव तैव तस्मात्तस्मात् नाभसेवां प्रकुर्वत भवनं वा सकृत् पीडनते योऽप्यावनं पतनं भवनाभं विधिं मन्त्रात्मानं
 सा साक्षात्तायां पतनं तस्मात् ॥ तैव वेत्ति किः कीर्तिस्त्रापितु वेत्तव ॥ १६ ॥ शिवः पततो हरा नयः ॥ स्वायं सुमन्तः नयमानय ॥ नयमान
 उच्च गच्छतु वनं वनं वनं विद्या ॥ ततः सुसुप्तः काक रूधः प्राः कलिकी कुरु ब्रवीतु ॥ नयमान ॥ रोदत इति सा कुरुत भवनाय राम
 सातु उन्नोद नयः सीता सीप्रः ॥ सा सातु तथ नाभः पुद्गलिनां कृत्वा पितृवन्तं नयमानं ॥ नयमान ॥ स्नातः स इति सुगमं अनुसृणीय
 गन्तव्या गच्छीत्वा नयः सातु उन्नोद नयः सीता सीप्रः ॥ सा सातु तथ नाभः पुद्गलिनां कृत्वा पितृवन्तं नयमानं ॥ नयमान ॥ स्नातः स इति सुगमं अनुसृणीय
 तः सनतं वनं सातु उन्नोद नयः सीता सीप्रः ॥ सा सातु तथ नाभः पुद्गलिनां कृत्वा पितृवन्तं नयमानं ॥ नयमान ॥ स्नातः स इति सुगमं अनुसृणीय

[illegible]

दिनायायामः पत्रः। पचासाकानकील क्लीये गमायेति विरुता। अस्मै शेषः स मन्वेतिल क्लमा सखसां प्रतन पषमाया गौय कूः ततदा का नवानिवा।
 पषपर्वे न को च हो ब्रह्मातु द्विरतावनः। सत्वाविज्ञः स धाविज्ञः स्रि क गतनिपाल कक्षपवो तेत मसो उत्रो क गतन चकाना मण मण पष मसः पुनातुत्वात
 कू वै वस्वतः अनुना आनो पालय सप्तान्ते पालया मा सनालव भस सुद मघने पुर्वं म ३ ने सुतन गते। अथाथ स्र पक्षे वि कू म्रिधी ननु
 तमम म्लीन सात न आता प्र नये सु के नो तवत्। तोल या मा स द्वाये तो मी न पुन ३ न भना रसि नव पु तुत्वा पक्षे ददन
 ३ पुनावा म न ल म पा ग म्प या हां यावत तत न म १ ५ उ स क ति ये तुता न नि वलै ता र को त व भ स पष क म लो ता ना घ इ स नी ना म
 ता गत म ना व मा दि नि नं का सि को छिरो नि इदि अति। मानु वै मी व भ न म त स्र ३ ३ ना त्म न भ ना सा र रा न ये ना पि त प सा
 तो जितो न निश्र पु त्वे का क या विज्ञो स्र द पु तो त व य नि भ स प व विज्ञः सी ना म ना व मा य व था य द्वा म्रि म्रि ये व या स्र ति व न सी त या ल क्ल मी न १ प चा सी
 ता च ने मी या स्र वि स्थि त म त का नि मी ना का वा कै क यी वा पि ना त काना म म्ब १ १ ५ पु वै धु नी न १ ६ प्रा द तुता न न न मा य व १ ना जो या न स्र

धरणीतालस्वामिः प्रत्युतः पञ्चतिवर्ति तच्छ्रुत्वा हस्तेन कृत्वा स्वनाम्ना पुनर्ननु विधावाचः सो को पञ्चतरेतस्य यथा तमनुयाति स्म वतु न गत
 लं मरुता तमेकं सीतया राधिका नृयादि स्म लस्वामिः प्रत्युतः पञ्चतिवर्ति तच्छ्रुत्वा हस्तेन कृत्वा स्वनाम्ना पुनर्ननु विधावाचः सो को पञ्चतरेतस्य यथा तमनुयाति स्म वतु न गत
 गौतमाता सीतया राधिका नृयादि स्म लस्वामिः प्रत्युतः पञ्चतिवर्ति तच्छ्रुत्वा हस्तेन कृत्वा स्वनाम्ना पुनर्ननु विधावाचः सो को पञ्चतरेतस्य यथा तमनुयाति स्म वतु न गत
 राः सुतः सीतया राधिका नृयादि स्म लस्वामिः प्रत्युतः पञ्चतिवर्ति तच्छ्रुत्वा हस्तेन कृत्वा स्वनाम्ना पुनर्ननु विधावाचः सो को पञ्चतरेतस्य यथा तमनुयाति स्म वतु न गत
 कानीवरा दानि श्रीष्टेस्वामिः प्रत्युतः पञ्चतिवर्ति तच्छ्रुत्वा हस्तेन कृत्वा स्वनाम्ना पुनर्ननु विधावाचः सो को पञ्चतरेतस्य यथा तमनुयाति स्म वतु न गत
 परिलोपगमः सुतः सीतया राधिका नृयादि स्म लस्वामिः प्रत्युतः पञ्चतिवर्ति तच्छ्रुत्वा हस्तेन कृत्वा स्वनाम्ना पुनर्ननु विधावाचः सो को पञ्चतरेतस्य यथा तमनुयाति स्म वतु न गत
 इवमिदं प्रत्युतः पञ्चतिवर्ति तच्छ्रुत्वा हस्तेन कृत्वा स्वनाम्ना पुनर्ननु विधावाचः सो को पञ्चतरेतस्य यथा तमनुयाति स्म वतु न गत
 देवो धरणीतालस्वामिः प्रत्युतः पञ्चतिवर्ति तच्छ्रुत्वा हस्तेन कृत्वा स्वनाम्ना पुनर्ननु विधावाचः सो को पञ्चतरेतस्य यथा तमनुयाति स्म वतु न गत



१६

अतस्त्वेवाह माहिसावनेवस्तुअमित्तपि जपितानात्तुजेत्मानमातानरासीकनुभृद्पेत्तवनात्रीणापतिनेकोभतिःसराचरित्वपरिस्थितोउगविनमयेवनामदाज
यतस्तेगमिष्यामिभूमीतीकुराकंरुकावृ॥अइतितनिरवयंशात्वासीतयापुन०वनः॥अब्रवीदेविगच्छत्व०वन०रीप्स०ममासद॥पव०सुतातुरा०वा०ल०म०पु
वमागतभवन्वासायनिरित्तप
ग०त०कृताहुचिदने०गरुमगा
साक०नामेमातकुमानुस्वतातुस्वरागौगाह०निपीडनपुन०३न०सीतामुवावातिलेचरागानपव०म०म०व०त०॥अदि
काना०कामयेनत्वयाविना॥अ॥
उत०म०द०त्वानुगमिष्यामिवनमयेअनुपविशन्नेवलोकौकमम०
कुतुबुभामनुव०वै०अमर्तेरुचिप्रते॥कृताधेदि०गमिष्यामि
म०द०सर्व०कति०आ॥मिकाग्रतस्वपतस्वतो॥म०स्वनेनवासनेन
अ०प्र०कृति०मि०कृति०मि०यदि०म०म०क०अन०वा०द०म०त०ः॥स०प०स्वित्त०ः॥व०य०र०प०त०॥७०कै०व०त०॥य०ना०मो०र०की
३०ते०त०कि०मा०स्व०य०तो०म०मि०मि०
वा०अ०न०छ०त०म०न०व०लि०ना०दी०म०म०स्व०त्वा०३०ते०ते०मो०अ०न०व०दु०॥७०॥इति०सी०त०त०स०गुरु०स०मा०य०मो०म०यो०आ०का०३०म०म०स्व०व०न०वि०ग०मि०न०काल०प्र०ति०ज्ञा
क०य०न०वा०म०न०व०मो०ः॥सा०ग०मि०॥सी०मा०म०व०वा०य०न०म०म०॥॥सी०॥॥सि०वः॥॥वि०नि०रु०ह०अ०न०॥सर्व०स०ता०ते०न०पुन०३०न०॥पि०त०वे०र०म०रु०गा०मा०

प्रोवावराण वधराकास्तप्रतिज्ञेन पिता इरावधे ममे। कै के च्ये प्रीत ही सा पुनाइतौ म काव नौ। तथा अ म म स ऊके स्थिति वे के न पो मने। प्रबोदित स्तु स म च्ये
 अमेति प्रतिनिर्जितः। वतु इरादि वषाति वस्तु व० ५०३ के मया। ७ म पिता म त न त खा पि चो वना मने नि चो कित म सो द० वा मा ग तो ३ म० पस्थितो विरु न० वन० म द० वा
 पि प्रति शा० ता० ग० नोः स म न पाल य
 यान ले। प व म कृत वै दे की प्रिया सा
 त वे। त वे को म पि स० वे रा म त वे
 ना सा दो कृत। म त मोग मा च्ये
 म त मोग म त मोग म त मोग म
 म तो पि स्या त म च्ये त म त ह्य पि है स्या पि ते नी म त म क० ना स्म वि ता त व म लौ कि के ना पि मा गे नि मा० त म क० मि द्वा द्वा सि। ७ म आ य ७ व द पि ता मा
 ता ता ता ७ व स घा वु वा। सानि ७ म नि तु० काना स्व० स्व० ता ग्य ७ पा स ते। त तु ती ग्य० तु ता ये का प्राप्नोति ७ ३ व व त ॥

[illegible]

ममागमप्रतीतस्वतः ३०००ः पीडास्ते विरगमातरं न क्त्वा मां वै वं स मास्वास्व ३००० इति श्रुत्वा तोषो ह्या न क्त्वा न क्षि ३० वा न वं वः पुनश्चाभ्यर्थं इति स्वीत त्वसं ०
 दनामा जामो मयो ज्ञा कां ० ले न क्त्वा प्रतिनामो मा त्वो पदे वा क धनं ना क्त्वा न क्षि मः स ग म ० ॥ ५ ॥ ५०० सीनामा यन म ॥ ५०० सीनाम भवतु सिस्व
 मा म ० वतु इति नो प मा भ इतो वनं प्र वि रे पा शु वर द्या के न दे क्त्वा भ दत्वा ना क्त्वा स को ही ० स्व व न वा स म धि के ० ह का नु भु नी ना म त य ० त वा त य न
 ती रि म त व नो म मा व ल ० म मा वी रं क्त्वा व लिन मा क्त्वा वे ल व द्या स दा य ० सु मी व ० त स प ना क्त्वा ति वि व र वा वा ने ० पु व र्ति का वै न मा नु व प ना
 क्त्वा म द नु ज त म सु सै वी वै सु ग्री वे मा पि स ० ग त भ से तु ० व द्या स म पु ति क्त्वा ना व मा मा क्त्वा वे ० क ० त क मा वि ० उ ० व ० स पु त्रा मा त्रा वा ० ॥
 व ० ॥ ॥ वि ती व मा य त रा क्त्वा ० ३ द्वा त क्त्वा य म य ल न स घा प पि त्वा न ले ० के स्मि नु की ति मा व ० इ ता ३ क न वि ती व मा ने न त त्वा न ना क्त्वा सै ० मा
 म त्र पि ति भ सु ग्री वे मा व मा न्मे न वा न वै ० प व र्ते प डै म पु ष क ० त ह मा उ क्त्वा त न त र्था ० ति क ० ग त भ न ० वि या मे क्त्वा पि त्वा पु न इ को मि वो ३ ० ॥ स
 व द्या व न वा सारं य ग ० त य ० पि ० त रा स य म म त्र त क्त्वा त्वा य द वो व ० म क ० प न भ सु गो य म पि त त्वा वि व न स प व ति क्त्वा भ इ ति ना म व व ० सु त्वा मि
 स य ० व कि ने प्र मा भ य न य द्वा वि व न ० ना मो ० म इति स त्वा रं म त ० स त्वा ० त इ व न ० स र्व ० ना मो वि न ति ता ष तौ ॥ त था पि ना म ० व न वा स नि रि व त ० स मी क्त्वा वै री

तिआरुअथतथावृद्धावराभाखनडेनकोधतनलोःनतोनाकुपुःअथतथावृद्धावराभाखनडेनकोधतनलोः
 तुंननुपानवपमालिलःसुखःवाः
 ववितीगस्थिपुननेवजिवतेते।
 कविदत्तयेःप्रवासाधैरुउव
 अथिवतस्थांनपतितोरुवि
 न्मत्तइरपते।सुखःतयसौभो
 त्मवतते।निवत्तयेःतमाननंयंननुदैवत्तकभतितु।आवल्लभासंतावकाविल्लभाविपयये।आन्नावावनवास्तोवावनवास्तोमनोइयथ
 यतन्मयोचितःसर्वेदुदितवयसुवित्तसंस्तानुःसैरासिलैवधिसेनकतावन॥ममत्वमभंमयादिज्ञंरुदितवयवित्तताम

मगजनामा प्रीवचनतः स्तुतिः अन्तावतिष्ठते । मत्तः ससैव पातो षष्ठः मज्जन्तः प्रतीक्यते । सः सतिः स्वज्ञस्य हरा सता नो गार्हिसकुला । नः अर्चनमनप्रकाशः ॥
 तस्मात्तु वततिनिवक्तुं मासा अगता वता गताः ॥ नमो निवततेन सा मुद्रास्तु नः गा इव सवधामते षुतीते षु सवेधा ॥ देहिना ॥ कीव न तयथ प्रतिकता ॥ तवेद्विज्जे
 कलत्पाकं गते निवापवः कतिप
 यस्तनौ ॥ इति याचा लवः परात
 चैव वृताश विराट्तेन नाना गते
 नाजातु लोका विरुतत इत्यस्ति
 लोकः यम्यमिह लिलम्भा । देहाति भानिनः सवैरीषाः प्राउत वि० तिदि । देदोद्विष्टितिया बुधिन विद्याया प्रक्षि कीर्तिताना नः देद्विष्टिता तवेद्विष्टि
 निवृत्तिः ॥ अत्रैव का मको पादयस्तु ॥ १० ॥ रातु सुनततापिको अपकालः मोत विप्लाया सवैरीषाः को अमुलो म नसा १० को ४० सः सानुवः ॥ नमो ॥ अमर्ति
 सपः वकिने प्रजाशयनयद्विष्टितनामो

[illegible]



[illegible]

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

न स राय म मं ता तो ये न तु ल सी ५ न य के न यो व ये व । न मं नि कि प्र सि न सि न म मं ते । न से व य न । अ स क दा स रु डो स रु डो पि य ये त य न ति ष्ठ ति । ये
 यो त व ति ल वे वा म य मे व वि ष्ठ क ये । न स ति गू उ को य स नै व ही का वि पि क म ध न म न का व रं ने वे तु ल सी ५ न म प ये त । ही का त न र ते न ति नै त त र
 ल म वा प ते । ही फि ते षु पि स रै षु
 न म ही फि त उ त म ध न गू उ नै व का ल व न दे वा त न से व न । तु ल सी ५ न य क्मं व रा मा व मे म पे न ते । नि म म्पि तु ल सी जा
 ४० ना उ को य म व ये य वि पि य न
 त्क नो ति त स व म नं त पी ल गो त वे त्वा य म न्म न त व त्पे व
 तु ल मा ते । न य क्मं त त्त न
 पु य ते । स ल ग्ना म रि ला यो र व गं गा यो र व त पो य
 स को न वि व क त्वा त व तं न न
 मे त वः स व ती ष्ठं प्र य क्ति ना तः प त त नं किं वि त या व नं
 का ह्यै न न मालां सु दु पि ती न कं लु मालां प्र य नै न क तं त स्या क यं त वे त्वा स न्पु ज त तु ल सी का म्पुं यो द द्या वा म म्पु य निो क पु नो ग
 उ म सु री व नं न व न त ह्य म न तु ल सी वि पि न स्या पि स र मं ता ताने न स्थ न न को रा मा त व त्पे व गां ने य स्ये व पा व न ग त ल स्या

लक्ष्मीदेवतायां च सः कादायतिष्ठति। एतस्मिन्नेव स मये विषः सुखिनाम् का अतिथितस्तत्रोव न भगवत्पाकं कर्तुं भनो ॥ १ ॥
 वनेनामसंतेः श्रद्धाकृतादि सुभक्त्या पाकं च यथायोग्यं सुकृता कस्य भवितुं प्रमाणपाणी पादौ व पुनर्विस्तरे विधा यत्रा भवत्प्रस
 म्पदा मय्युक्ता धर्मपवि
 स्ववत्। अतिथिर्कोततो नमः पुका कृता यथा विधि।
 स भगवत्प्रवृत्त्या सा कृतान्त्ये भक्त्या बलि पुण्यादेन
 स भगवत्प्रवृत्त्या सा कृतान्त्ये भक्त्या बलि पुण्यादेन
 भताठ्यतु तादित सुभक्ता ते भवती यमते न पत स्युः
 केत तेष वा य सः पततो व न भ तं च व क्ता तन निते सु
 प्राता स सुते त त व आ वि ता स्रे ध्य अस्तने। प रु पा त प निते सुः स्त्री ध्य वि उ क गो वि वा ती ध्य प्रसा द सु चा त्मा स अः प न व त्रा च
 स भ त तो वि आ न मा उ च सः स व क ग ता न भ पी त वा स्याः स्वतु व दि कः कः कौ सु त रो नित ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

म० विष्णुनये। सिलाभसालया मरिलाया० वै नाममतप्रसन्नान्नयः के नात्तु व्युत्पन्नं कृतं नादि स मुक्ताते। नामना मेलिते नित्यं प्रवृत्तं
 ति मन्त्री विनाभत देव की वन० तेजा० रणा० निष्ठा० स्यात्तावती। सावेष्टा ज्ञानवस्थायेन तादि स्वर्गपिपीति के नो नाज्व० रा० त० सीतांता० ध०
 मममु० नये। पुष्प अतः स्वर्गः को मले सुलरी ३ नै। तेने ते स परले से जे ये ना माकृति गो वने। तो पावो नामका
 यधि० वलतः सवतो हिरा० तउत्तमा० न० यथा मती धर्मो वता कन०। तदेव तो जन से धर्म ज्ञा मपि ततो जन न त दे
 वरु० यं प्रोक्त० यथा मन्त्रा न तत्प० न० काम भात० तयो नाम भुति तीर्ष सुत० जन ध तु० ते त० पिता० न० यः पा पा त्मा
 पि विष्णु वा ते। मन्त्रे को राजमन्त्री मन्त्रिणा स्व० पु० सो तन० य चाती धर्मो सा ता त्मा० विष्णु मा ह्यो के ननेः पद० कस्विदि प्रोक्ति मन्त्रा नी
 सवरा सव विराजता मन्त्रा नित्यं क मस्थिः सत्त्व वतु पना याम० युवा प्रमत्ताति रुः सुति स्मृति निविम भीम विव क्त क्त प्रता

समिधा ॥ सीतायाचनमथा ॥ ॥ विस्वामित्रः ॥ ॥ पवनमात्रसिंहकोपुनांरतिप्रोक्तापुनरिनीभरालगामरित्यात्रकापरलवमपेजिजायत ॥ ॥
 सोविचं वृक्षनिष्पन्नसालगामरिलालातयाचनपुनयतिचेमात्मानिलयःसर्वस्वंपराभरालगामरित्यायस्यमयेमातिपावनीतद्वदं
 वनंशेयं सवपापविवर्जितं
 १० विषहकंयः पुकेकुचिमितरथ
 नामप्रतावेननामस्या ॥ ॥ अ
 यवा ॥ नभविंरात्रापिकसं
 तुतह्येयं सभंतागरायेननवैकुंठसहस्रगेरुतसास्तेनपुनंनभतवविभुमदेरासब्रह्मावववतुमुसमविसेदेनाखदिमालासि

[illegible]

१४

आपिते आपता वनी आनितिक ध्यते ज्ञस्वतः पुनतो दाविद्युद्वाव अस्मविचते। नाभः अत्र न कृत्वा गथाः सव निवृत्ति इती यती य आत्र ओ आत्राताः सभाये सव के तवध
 रास्मादेतानस माया राव कायः सायचे कमातु। एव कुं कृं स भासे ना रुं ग का स म पा स न न इतः पुनः प्रवच्छा भि स ग तो पा स न न व भाध स ग तो पा स न न त म
 दि लु सी मु ति विं त न न त ते रा व रु
 व द मि व भ री ल सै म्मा स वा ३ वे
 सा तिकी। मा ग मो क्ता वै दिकी तु
 य स्यै का र्थ मा ना रा। न मो ल व
 रु व स ना वि क भ मा न रे वे ति ते रे
 ती य ते। क पो कि क्ता मु ल क त मो व स ना मु ल कः स वा ३ स का स्या क्तः स्वां ते मा न सः री प्र। स धि त भ। ए वं क पा त स न स्या वा मो ना जी व मो न त म
 ना मे प्र स न रे ख गो रि म्मा भि मा न त यै व व। व सी म्मा भे स्थि तो नि त म नित म क भि स मा च व। पा प्र। म त यं क वा नि जी ल म न य न रु ते। इ त म क क व

श्री ग न

[illegible]

बुद्धनातिवर्तेतकामपतद्वामोकाकुस्थौवरेभापुचसयागलनेतेभुनयः प्रीताः प्ररांरुनपातुनेमो। अमवततिवद्वातंवनकेतानिदोसुसंगीतांका
 तोर्येषभुजिभौजिद्वगमभिप्रति। तोवतववसुदामाकपुकोयरास्तिनौ। अनिइवउदेनाततपोवनमनकतामपुवपिनववनतो न मायये
 तोसिरुपय। कीहतावधुपुया तइतिप्रयिभासितौ। उपासांरुकरुहीसौरतौपैमथविनौ। ननैतुनिवनविखाभितमभि
 म्नालततोवेतिः सोपाभायेप नोदितम। मंतववुयसाभायम। अहोसौरुप्रवतते। तका
 रा वायनगनभेनौय धावावषिनिमित्तौभाभीवससुबाहुसतयेननवनाखये। तथा रोमकारावः वाअनसीइथानकभमा
 हुतौकसभौपुयेनसुनतल नावितौ। अहोदिमीपरिवृताववधेवनमनतअतावापत। मायाप्रकुवागौरासवदप्रभावता
 रावभकाभोतीविसरुसागनिसं जितनसंगद्यासुततोनाभोदिभेभाभेयमनतगसुबाहुसिबिनेपसुडियः प्राततुदिभाभवपनमोसौन
 स्वपनमतास्वनविजेवसमनेकुयोभाभीवोवसिनायवधसतेवपनभास्ये। मानवेनसभततथसंमोकोकनडात। तिसरुभाभनसंप्रवेनरुता
 सुबाहुउसीलभाभीवनामनततुअसवसिः पनभातुभादिताविकायोद्वेकया। रोताबायवभाकायनिकनानभकायराभपुनवजिखअम

[illegible]

११

रात्रवपेण ३५ व ३५ प्रतिक्रितो पञ्च भावः ॥ कनौ विष्टे ३ प वि ति धीत त रिक्तं न तु कांसांता मत्पारोप्य वि के ती ॥ सौमि वि न क नो को भ्रातृ त क म म म न
 स्मिकाण का म उ प थ रा स म ॥ क वा रु पा म नें क रा श म र म व र्ण वि ष्ट वं ती तै न वं वि व वा न रु त त स्या व र म व र्ण म को श म म स म त त ॥ ३५ य क के न वे वि वि त्तो
 उ नो य स्या य के श स्या उ थारा न काने न मा या न ल स म वि ता अ ति उ प्रा व का कु र्ध ल क म व वि ने उ धी ता भा र्ती वे न न वि का ता म रानी मि व रा
 ने गो ३ स वि वि का य प पा त व म भा न म रु ता तु वा त्त कृ र्ध त नु कृ न ना प्र यो वै ल व लो क स म न वा त रा रु य म त तो
 य वि वि त्त कि वि तु स र्वा स्तु का ल स रु स्या म त पी त्मा ति ना मा य ३ नै मु नी ३ म अ इ ति
 डे ता रु का स म र क म न ना म स म ३ रा इ स ग म् ॥ ५ र्सी ना म व ३ य न म म ॥ ५ त तः स म रा स म ३ प्रा हा इ सि थु वा न म स वि त्त न त व त्ता
 मु न य ३ स वै वि र्वा मि त्त त तो व य नु ॥ त यै व ना क पु त्रा त्मा म रु व नु अ ति यि कि या न पु क या म स ३ य नै वि र्वा पु न मा स ने म य तौ डे रा शो ना क पु त्रा
 वि ३ म् ॥ ३ रो काने वा क्ये शा व वृ तो को शि क व र म ॥ ५ र्सी ना म ल कृ म म व रु म ॥ ५ त ग व नु र्वा म् वि क्तो वो य रि क्त काले नि रा व नै स रि क्त तौ तौ

तनौ नका दोः स एतौ वीर्ये परिष्काराश्चि कश्चन विपुलो को ज्ञ वा नाम न त वे ह्य रा स्य वा त स्या द्वि प्राद्व यं रा स्ये स्य रा स्ये विष्वा मित्रा का म्बुदु
गुणाः सर्वे त्वये तेना त स्य स च भ प्र ति ग क ग्या य ते वि धे म्बु वे ता वि ता त्म न भ वि प्राः स्य मु रितो ना म्बु रते तु नि वि क म्बु स र स्य र वि म्बु त गि वा ण्ड वी
वडि वा क र ३५॥ ५५ वा व ती ॥ ५५
तु कौ रा को दे वित प सा प नितो वि
को त क्क व ह्य ल ५॥ ५५ सी त ग वा नु
ये। त रा यं सि च्य तां प्रा णं पु त्र
तथ पतु पु त्र स मा शे च्य भ म तो मु नि पुं ग वा गु णा भि स्तु यः रा च्य ५॥ ५५ पु त्रा व भि कः स्मृ त भ त स्या न्मु ने ते रा च्य स्या मि त्पु क्क त द ये रु नि भ त स्या कुरा
क पु त्र स्य ना म्बु रा च्य त्वा भ ग त ५॥ ५५ त्पु त्र व स्ये न्मं त कालं ग री त वा नु। ताम्बु न्म मा र्क स्यं प की न्मु नि क्क म्बु ते क्क स्या। स वि तु न रि म्बु पा ते न ना

सीनामव० दायनम० ॥ परिवाकवा० ॥ ततयावसिष्ठेब्रुवति साक्षाद्वारय० सुतमप्ररूष्यकदलोनाममाकृयावस्यलक्ष्मणमत० सपुल० मुमुक्षुपात्रा
 यनामा० राययभप्रयन० दत्तैकुरिकपुत्रायसुप्रीतेनन्ति सातुना० सायायानवौद्योगीपुचयौस्वसम० ततश्चविस्वामितगत० ह्वासा० रा
 कीवलौवन० नैवस० नास्त्ये
 व०३०३०तिनिस्वन० रा० स० मा
 न० ह० स० सां० रा० ता० ता० पुन०
 म० मा० च० ती० कु० मा० नौ० रा० उ० उ० उ०
 री० ता० वि० व० प० न० गौ० म० न० म० म०
 स्वा० मि० लो० ता० ता० व० ता० ॥ म० म० त० यो० म० म० म० त० ब० ला० म० ति० ब० ला० त० ध० पि० ता० म० रु० रु० ते० ये० ते० वि० रु० ते० रु० स० म० वि० ते० ॥ क० ला० ता० ति० ब० ला० वै० व० स० वै० ता० न० स० म०

[illegible]

[illegible]

गत्वा कर्ममां किते पाणिना किं विद्धं श्रीवाक वनं पुनरेव पलायते । इत्यादि बालनीलातिर्गुणानां कानकभूषणान्दुतुलितं भूषणं पतति ।
 मयकालेन ते सर्वे सौम्या वृत्तिः पेतिने उपनीता वसिष्ठेन स व विद्या विद्या न गच्छन्तीति तदेव स्ये सर्वे स्ये वसिष्ठेन विदितं गच्छन्तीति ।
 नोदनि प्रगाथनं वै रपं ठि ताभतेत घाशान संपन्नाः स वै सुखं दितो गौरी श्रीमंतः की न तिमंतस्य सर्वज्ञा श्रीमंतः श्रीमंतः ।
 शुभं नतु वतु स्रुत स्रुति नो रामलक्ष्मी तया तनत रातु श्रीमंतः स्रुत स्रुति नत रातु श्रीमंतः स्रुत स्रुति नत रातु श्रीमंतः ।
 पूर्वमर्जं पूर्वमिति पितृना वेदु । एवमस्य पौत्रकाया मिनामवो गुरु बोधितं क्षतानि सवामि नियतं कृत्वा पितृनि वेदयतु । एवमस्य पौत्रकाया मिनामवो गुरु बोधितं क्षतानि सवामि नियतं कृत्वा पितृनि वेदयतु ।
 वता नो मनुजानां न वृक्षानां वनं केविकां पीपनिमाक्ष्मी नो विद्याय मा गौरी नो तिमिं वितु । मयसाक्षात् सारं सारं सेवाय न कथा

न क त व ा न व षी व त न षा ॥ १ ॥ त्रि वे स वे षा अ भि का ५ प्र का र म ते । वि भे वे र न उ क्ता व त त त क ष ण वे तु वि धा नि षे ष स व णा न्न व षी वे ति क ष त न
न व षी वा ष षी वि धा त्ता षा वि ष प ना य मी भ उ पो ष ण न व षा वै ३ रा षा षे व पा न ण वै ष्ण वा ना वि रौ वा तु त त वि ष प वे ति ति ३ रा षा वि ष वि
धि र्वे दि धा त्ता षे वे ष भ त ३ न्ने षा व र ष वे षा व त त तै व नि खि त ३ रा षे व र वे दे न ३ रा षी नै व ल न ये त नि खि तै व वि रौ वे
ण न व षी व त मा व ने तु वै ष्ण वे ति ति वा षा धि ते वा न त ण भु त ते । सु भु ३ स भु पा सि त
भु ३ स भु पा सि त वि षि व षा न स य त वा ३ रा क र ण षा क नै व त न स दी ता वि षि व षा न स य त वा ३ रा क र ण षा क
शे षा से वै ष्ण वा लो के वि षि व न ३ ता षा न्ता दी ता वि षि षा न वा ष त रा ष स य त क ण स
त भ प वा य त न उ प वे वि प्र ष स भु पा स ते । म द्या वै ष्ण व स षा से भ द्या वि षो ३ ति पि षा भ ष ध पु षा प्र व षा मि स ग द्या रो ष त पि य द्या क त
भु षा ते भ त्ता भे त्ता स षा व ष षा न्ता भ ष प त्ता लि ष भ षे र्वी वा षा लि र्वे त्ता ता स य प्र प व स य भु त्त ये नै व पु षि णा पु र्वे त्त न त

पुष्पदन्तेन रा. सु. इति नाना किमालम्बितम् पुष्परात्रिं पश्चिमे तच्छा. तत्तन स्या. दिशित धारुमिता के कथातु ना. उवा. विना यक वापि केव पाल.
 सन स्वतीपको गोपु पुष्पदन्ते इति विह. क्रोडिते. दिश. अतः ये लोकपाला. रसत इत्यामिततो ब. दि. अना म. म. वैखतु धी. यु. द. मो. तै. प्रामवा. दि. के. म. क. त. वि.
 वाजना म. को. ग. पु. ज. ना. क. त. दि. ति. अ. न. हा. व. ना. इ. य. न. पु. च. दी. प. वा. र. हो. नि. वे. इ. ये. तु. त. क. तो. क. ना. दि. ना. त. क. रा. हो. ने. य. वि. वि. ना. पु. रि. य. तु. रा. पु. न. यी.
 मो. र. को. वा. म. क. इ. नी. प. ल. म. ल. के. ध. न. पु. पे. ने. क. वि. रा. ति. ने. के. क. र. य. नि. नि. वे. इ. ये. तु. इ. वा. व. म. न. ता. व. लै. म. र. ना. नी. ना. क. न. त. धा. न. म. क. यी.
 त. त. हो. स. तै. सु. ता. व. प्र. क. पे. न. न. न. श. सु. म. र. क. य. ति. मा. दा. तु. म. दि. वा. ना. म. क. था. त. या. ता. म. त. कै. स. ध. वा. मा. दा. से. डा. म. म. न.
 र. म. र. ना. पी. ल. ग. वा. व. स. पु. म. ग. सी. ता. रा. स. ध. क. ल. म. म. र. क. व. त. क. र. हो. यु. के. व. तु. ल. री. य. नै. म. र. ना. न. न. व. वा. धी. य. म. म. स.
 स्या. प. ना. य. वा. ना. व. ना. वि. ना. रा. य. इ. मा. ना. नि. म. ना. य. वा. प. ति. ता. मा. य. रा. पु. ना. को. ना. ना. म. स. य. र. नि. ध. म. रा. मा. म. म. य. रा. त. ता. त. ति. स. दि.
 तो. ना. ना. व. वा. ना. म. ना. इ. ति. म. रा. व. वा. के. ति. मा. मा. ना. ने. तु. वा. म. मा. ना. को. क. य. ता. तु. इ. वा. दि. त. य. धा. व. ल. वा. वा. मा. रा. ते. य. रा. त. त. क. र. ते.

का भद्रं वेति विवायते । निष्का भाना^न न का भाना^न व सिं नते । अ भ नो पि लिख नारी नाम न व भ वत न त क^न तिरु न से म^न ने वे^न ने पि विरो प त भ स न प त स
 स वागा ने त ह ति प र न्ज नि नै । नि ति क^न व न त घा स ने ति सु य ते य त भ ला व न्नी व वि ता व त^न स न स प^न ये नि रो न्ग घा । त र्भा द्रा भ न व भ्रा^न तु व त^न का य^न रु ते रु ति भ
 वै त भ्रा सि न व भ्रा^न तु रु भ्रा या^न
 कुी रा भ न व भ्री व त न रु धा रु
 यो गा त^न तु व भ्रि या स भ्रा नि
 व स न यो ग त भ्र वै त भ्रा स न व
 ग^न स लो पि य नि र्भ र ते । वै त रु
 तु व भ्री पु न व रु य ता य नि र्भ र^न स^न ग भ्र यु क^न ने भ्र व भ्रा सा ति पु भ्रा ता सै व भ्र भ्रा दू यो गे न भ्र द्रा पु भ्रा त भ्रा त वे तु । भ्र व^न पु व भ्रा स^न प्रा वे ल भ्र क
 को ह का दू यो भ्रा वि र्भ र^न स^न

व भ्री ति या । पु व र्भ र क स^न यो गा । द्वि यो
 त नि ति भ्र भ्र द्रा पु ल प रा रु धा पु न
 स र्व का भ्र द्रा । पु न व र्भ र क स^न यो
 सी ना भ्र न व भ्री प्रो क्ता को हि रु य य द्रा भि का । वै त रु क
 के व भ्रा सा ति पु भ्रा ता सै व भ्र भ्रा दू यो गे न भ्र द्रा पु भ्रा त भ्रा त वे तु । भ्र व^न पु व भ्रा स^न प्रा वे ल भ्र क
 के ल यो को स भ्रा ला यो^न पु न^न पु भ्रा ता । के व भ्रा पि स दो पा स न व भ्री रा व र स^न य द्रा तु । त र्भा द्रा व^न प य ने

सति मादेन न पुनः न भवति ॥ ५२ ॥
 तत्र या लः स परल स्व तो। तो गा मे ल वि
 ता। ३। त या म लो के पित कुरु न
 ता न। क सो ति उः से न कि के म ति
 पित मा त ल त ता त न न व भानि
 सो त। ३। व न पु व न व लो प म
 त व म ति श मे न। स्थि ला ला रि
 का नः स्व ता। ३। का रि क श वा म शी ता
 ॥ काना मिका कते स तं किं तु म स म यो म नि च नि ॥ ३४ ॥ ते वि ख
 न रं ध वि छ ले से व न व ला म क ता ३४ ॥ प म नि स त म लो द स्य क ल वि उ व तु ॥ ३५ ॥
 ता न नि त्र ता च धा धा न ग ना त र्था ते को ३० रा न पे रु तो त धा
 त र्था नी न त्ते गा ध धि र्नि नि र्वा न न श रे न सु ति नः ॥ ३६ ॥ प उ षा न स मी
 स ग म म श यो ग धा त र्था न न धा का जो ल व ल ३१ का
 सी सु स मा य न ल त धा पि र्क तौ न ति मा न प व म ॥ ३७ ॥ यो वे
 ला ना ना डी त व न स सो म ति धी वा त पि धू क प र स्या य उ षि का यै स्व नि ह्नि ता ॥ ३८ ॥
 का नः स्व ता। ३। का रि क श वा म शी ता ३९ ॥ किं त त्ता मे त रो त न त धा पि म्भु त स
 का नः स्व ता। ३। का रि क श वा म शी ता ४० ॥ किं त त्ता मे त रो त न त धा पि म्भु त स

मरिचुना मततोपाज गदातुम निनिष्क मया प्र तिभरान को मातर ३३० मातर ३३० ३३० यथौ को सल्ला पिअने पुना कु उने नाम का नागा तु दो म ३ का न या मा ज वा न्ना मे तो र गौ यन
 सा वि न र मा तु न न ३३० मातर ३३० न मा गत न अति र का म स ३३० कि रो न न ठ वा य घा ३ स मा त र म ति का ता भु प र ३३० अ रा म व थ प नि व ३३० र व ना रु त्पा ३३० व न म बु वी त ३३० त न ता य म
 आ ना जो यौ व ना ३३० प्र य कृ ति मा ३३० व ३३० का न मे वि वा स य ति ता प र ३३० म ३३० व तु र रा म मा स त र ३३० वि वा म नि ति स नो आ ग जि जे त त र ३३० मा वि न ३३० क तु म र सि त कु लो स र ३३०
 वि द्या मं कि ता पु न उ धि ता प्रा द ना म ३३०
 के के जी व न गो ना मा स व र ३३० वा प्र य कृ त ३३०
 म ३३० उ त ३३० न ल ३३० गो पि त त ३३० सु ता को
 के ति पो वा क र व रा ग त ३३० वि प नी त स्व व
 ३३० ले न नि क र्ति ते ना स ३३० इ न वा सा य ना न व ३३० न त ३३० प र मा म द ३३० नो के प नो द ३३० म पि यो न ३३० स्व मि तो पि नि र स्तो पि यो स ३३० को वा भु ना र ने तु ३३० मा ने व क ल प म ३३० ३३० त ३३०
 वि पु मा म पि स ल न न वे म मा मा ३३० को ३३०
 ३३० सा ता ३३० स स ३३० पु त का गि ना य रि रा म व न ३३० स त ३३० या सि त व न य मा म पि
 ३३० पा कि म प ना ३३० दि के के स ३३० र व प र ३३० वा पि ता ग ३३० य धि रा म त वा द म पि
 ३३० स ल्ला व व न ३३० वा ३३० वा व ना म व ३३० दी म र द ३३० वि वे क ग त य ३३० न नो व ते म हा ३३० त
 ३३० वि ष यै र व प्र ३३० वि ति ध न ३३० प ३३० कि मि व न बु या बो घ मा न ३३० स म न्म य ध
 ३३० त ३३० प र मा म द ३३० नो के प नो द ३३० म पि यो न ३३० स्व मि तो पि नि र स्तो पि यो स ३३० को वा भु ना र ने तु ३३० मा ने व क ल प म ३३० ३३० त ३३०
 ३३० त म का ना ता ३३० र ना मि वी यी ३३० स ३३० ते त म ३३० सु य इ को ति ध ने वी प र म त ३३० वी र्ध ना प व र ३३० व प र म त ३३० इ ति व ३३० त ३३० सौ

लक्ष्मणरावः सुमुनसममयाततनामि वरुणात्मसमनौ पस्मसमं ततश्च ततो न च नं धां कृत्वा नागा स्वनिगिनिनां निताशमन क गुरु शाना
 मंरातरो घर्षसमस्य राक्षस मदी नस्मि स न था वनं मना गुरु वितामनाम कृत्वा पथनाः सुना क गुरु रासां सवो कनामततो वादितवोका स्व सुतिरा
 वस्व वं विना भस्मि रुना दावस्व सु
 तिविं ३ मम सवसी मं तिनीत्त
 मय तपमनो किती वराणां के
 स्वमना मेः पुनः सवैः स्वसिक
 सुपावत सुदुःखः सुदुःखी निता
 तं मा गे मति वि को न पाल यनु यथा सै लानिताः पिता ये धै व प्र पिता म जै श ततः सुसतनं सवैः क्वै व रुता म रा काली मल म च म्ति तु के न पनमा
 मातां त गुरु सुविने पथि दम्भ वाताय नस्था तितु विता तितः स मं त तश्च कीर्थ माताः स प्रवो लो व यो सी
 स्वसीता सी मं तिनी वरुण मम मं तद्विता ना यो ना म स्य द्वा
 न राक्षसं यो गमा पया इति पौ नां गना वावः सुपावता मो य
 सुतमा गुरु म्म सी चमानः प्रव नै स्व वा न के रति सुतो वै स्व
 नुविघादं वापि संपु क्क वा कने व न रा नु यो पिता म जै रा व तितं यै धै व प्र पिता म जै म ओ पो ना य
 यप्रिया गतया सुव तितं यै आ पु ना नु न
 यो कृता ममा सानो व व हिरव द्वा यै
 गो य मा य यो । आ सी व रा नु न द्वा
 यै धै व प्र पिता म जै म ओ पो ना य
 म

[illegible]

पेदे मुकुतं प्रततापना ॥ ४० ॥ विद्वन्मित्रः वनेनात्मा जपराजं हिवतु मि पञ्च सा खपितो वरु विष्णुः पञ्च त्वरु मुकुतं प्रततापना जपराजं कलमा भोदि
 तां वैवशा यथा ककु ये ये मि स सुत के के श्री हिवतु वीतु यस्तु जन्तु कुतः पाणि न गौ पावे जया पतत तत्ता जालि सुयं वा वितव प्रत सुद
 त्वया ना जः कान पिते को जे भ तस्य स लिल कि या न त्वया स पुत्र याने व कत को स लिल कि या इति रा ह्या म जाना जः कै के श्री त रा रा उ म म म
 म पा रो व न यः स ह्यो त न प्रत प यत ॥ ४१ ॥ ततः प्रता त स म ये न जितिः स य पा धि वै श्री सु ह तः रा न कैः पा यो अ त ना का
 वति म ते त रा सु म त म त रु म कै के श्री प्रत वै व ते द्य सु म त रा का न क नी ना म द प स सु क म त का ग न प नि स ते नि द्रा या व रा
 मे पि वा नु त म क त्व नि त सु त ना म पु त य म स्ति न न म म म न य त व ते ना त म का यो वि वा ना म इत्य क ह्य नि त म त वा सु म त ना ज म
 दि न म ज वा नि तः प्र वि सः स नु त त ना ज म द र स म व व र व र य से वि न य सो वि नी त व तु ॥ ४२ ॥ म प्र म ह नि सु सु स र सु वि द्या न रा य
 त म स नै म क पु त म वा वै इ सु म त ना म स क त को स ल्या सु व ना ना म पि ता वा उ सु मि क ति ज नि म स ल के के अ म ग म ता

७२
 न च काले रात्रौ तस्मिन् यत्काले ज्ञानी पतेः । कुनिष्ठिका प्रज्ञानेन यथा न घट्टका निषण्ण प्रसन्नो मेरु रात्रौ यो वनं यज्जहात्तु तथैव सञ्जातिना विते काले देयं स तद्वनं यज्जहात्तु
 तत्र तिष्ठतु मे तर्तः को रागे जेन न वयं ३ ति मे प्राधिता तती तेना प्र० गी कृतं तथा तस्या अनव यं व मे स्ति स्थि य मे तत्तत्तपो जगत् ३ त्पुष्पा को य त व नं प्र वि रो स य स्या उ वा
 नि मुक्ता वतिनाम० प नि की य स० स० त त शतु मे रा या ना त वा तु न्म नि ना० व नं यथा नि गी ॥ १० ॥ रि व रु वा न ॥ प्र भा रा य त म ना ना ना ना प व स्या ति
 वे व न न स कै के य्या० गृह स्तेष्व० प्र वि वे रा म्भ र स शत त्प वि र म्भ र ना ना स्व म्भ० तः पु न म्भ धि म्भ तु न
 तो गृह ग तो ना ना कै के जी० प य पृ क्त ता ॥ प्र ति या नी त यो वा न स० त स्ता सु क ता० क लि म्भ दे वे दे
 क्वा त य स० त स्ता ना ना त स्ताः १० त म्भ प त श ७ प्र वि र म्भ रा नै दे द० वि म्भ रा न ना मि ना ब्र वी तु ॥
 नि वि द्या य ना ज न० का न० प नि म्भ त प्र तु म्भो म्भ नि न व री त्वा कि म्भ धि तु दि र म्भ क ल० वि भा र्थे त व वा ॥ १० ॥ त न वा के न रा० दृ ष्ठा त म्भ ति प्रा य
 मा त्म न म्भ मा ज्ञान म्भ मा नो न० म्भ त्वा ग त म्भि वा० त रु० १ स्त न रा क न्म पु ना व त्प य स्मि दे वा सु वे न म्भो यो दौ व सौ पु ना त्तौ तो प्र य क्ता य पा धि वि त यो ने
 के न त न तः सु तो मे र स्यो ति वे वा तो ना म्भः सतु दि रा ज म्भो स्ता दि ती ये न ता प स श त तः सु द्वा म्भ ना स रुः कै के य्या रा उ म्भ० व न० वि ता म्भ ति स

[illegible]

[illegible]

मन्वत्सिद्धिः ७-१-११-०

तथा तथेति कृतं तद्यथा के प्रविवेराय मध्य घना ततो य ह्युक्त्या सौ ५० ज्ञात्वा सो दानमध्य घना रक्षा यो आलोक्य
माना को पे न मध्य घना पापद रिनी रायना मेत्य कैकेयी ३० वरनम बवीता रु विषये

तस्यानं न बभूवस्ये । अन्निषे सत गा कावे स्योता ग्दे न विकृष्टस्ये । बलः

ववथक ब्रह्म पापा इति तस्य विज्ञा इत्यगस्त्य उ० ॥ कै के री ब्रह्म

ता०३८५ कास्या तत्रा देव्या प्रव० के मार है कश्यी। प्र० का मार १३३३०

रुद्र ति । १५ प वा रुद्र व उ आ त्वा न व रीं व व वं ७९ ब्र । काले ह्यप यि ना मा

१०५ कोवि किमं कुतं दितं व बा तस्याः सुदृढवः सुको वै ही पक्षो ब्रह्मा तस्यै सुदृढवः सुको वै श्वानः वस्याः

...तथा तत्रैव विष्णुः सदा निवासिन् ...

सवेवां सुसबोधा यन्ति कुण्डलपुत्रपौत्रे ॥ अथिन्तासत्तममन्त्रे च ब्रह्मवर्चसं च कर्तव्यं न मा ॥ तिर्जिताद्या नः रौ व० वेति य मा यत्त प यत्त सि सा रित्त स मी
 खनां साभनं त यमासि यातावे मागानै न लंका दानं मतिस्त्रया न चो वतं रौ ता नि सुती कृति य म० स्म ता ॥ मां सज्ज वा य व म्मे य म्मां त सि पि न ये दि ना प क ते
 व स मावे राः पु वी कृ नि य मैः स का र्य
 न गि र य यो र ठ या पु न ये द्वा र्य स्म
 ग आ वा प व० ति वा न यः क र्या त्मा
 क ल म्ते ॥ प्रा मा या मेः क र्ते श्वा र्य नि
 क प दो मा व नि पि को म न म र ल ॥ त
 य नि य ज म सी ना मा क त भा र ति या रा उ प वा व स्थ ति ॥ आ न स्मा र वा व वि ता दि या क ति व ति ति थि आ न वे त्म कृ य प्र य न्ता दा क री श्रु ति र नि ग य त्म आ न मा मि
 व

[illegible]

[illegible]

ब्र० छादितिः प्रोक्ते वैः प्रादितो विज्ञ नक्षत्रशुभानां निगदा धीयत कानां नक्षत्राणां यत्र। का तो रत्न न येनो श्री० को सत्याया० पत्रः प्रभावा। सरो जरा० सव
 कात्मा० वै वै वीर ननु पिति भूय १५ वना मा विखा त्वा स्तव को राग काना० म मा गन स आ धीय प्रादितः सगु पा न तश या ग विष्णु क ना नु र्दुष्टा नु विनिक्ष
 त्प स म० ततः १५ वना म वि विभा या तौ नु निस् प म पाल यत १५ वनी० मि घिला० ग० त० म या स्ता थ मि दा ग त म प्र स० ग्रा ३ पि च० ना
 म स कृ कृ वा न ना रा व १ य ना म कीर्तना स्त प्रः वि ना या ले न मो न व भ म दा पा त क म न ले तो म व ते ना त स र्वा य म ॥ सु म ति म ॥ १५ त व व
 न स व त वि कृ र या मे र्प स्ति ते च ति कि० वि त कृ मि त दु मि र ने त० मे यो ग ता स्ति वे त ॥ १५ स व च प च न० ना म ना मे त म व य म १ ना १ त त व म ति
 ल० दु मि ये न म वे त पा त की म कृ त रा त क र्ता गो० म दा पा ति कि ना म पि ॥ प्रा य स्ति ते वि ना व भू नु क य० त मि वृ ति त वे त ॥ १५ को र्ता क म ॥ १५ म नो क ता
 य तो ना म नु त व व कृ न रा क र तो य र म्मा ते ना म न० व र्प सानि भ्रा १५ श्री री र सी का रा म नु जि स ता म थो पु ना नि ती त मृ त म न य कृ त० त व दि च्छा मि गु र्मा नु अ त म०
 व पा स त्प व मि दित० व मि रा न० व मि पु नः पु न म स वै का म पि पा पा ना म ना या से न नि कृ ति न न म० वे ना ध ना नि र व न री न र्प रो व म १ न लो प० पु त व यो

तममेकांताताजिनांकापकांतां वरा सर्वेषां सर्वेषां सर्वेषां कुर्वताममयापातकचक्राणां चक्राणां उपपातकैश्च नृक्षयक तपापातां प्रकाशकतपा मनाममयांकांतां
 माविशीतातां मनावावतामपि। उ३० न तो। जिनां वैव उ कति यश्च की विनां वाता प्रायश्चिनां वा वातानां क म व किनां नामनाम क पाकृति तव तपे वेति निमित्तं
 नामनाम प३३० क प३० पावनं पापकारिणां। निष्पृथक् सर्वपापा मिथ्यातिविज्ञाः प३३० प३३० क३३० पापमय
 कपतां तातावपिकृतं त घातस्मर
 भवते। स रुक्षना मतस्मरनां
 म३३० क३३० प्रकृतिविकृतो प्राणिनां क
 रमेकस्मै क३३० वना न व क३३० न व क३३०
 ॥ विरिवाव३३० ॥ प३३० स३३० बोधितो नाजाना मतत३३० मजातुना। कौरिकं पु३३० या मा स पाप्मा लो सन व३३० नैध ६३३० नाम३३० वा पि पनात्मानं मत्वा सि३३० सा सने रुते। स३३० नि
 वेरययामाया पु३३० या मा स त कृतं निविश स्व सुख तौ व सै दि विहालेः सु३३० व३३० नैध मजा भनै स्रजमितिः वना रव न धकु३३० क३३० नैध स३३० पु३३० स३३० व३३० ना मा य नि वे य

[illegible]

नानै॥ ॥ सुमतिः ॥ नमस्ते ७० श्रीका नमस्ते विजेता वन। नमस्ते स्ववतिः ॥ नमस्ते स्ववतुतु गला अरा। स्ववतिः ॥
 त्रुकोय स० ३ पचेरुतु तम ॥ ॥ यः सर्व कर्ता स्ववतिः ॥ अस्मिन्नेत मित० कर्मता ॥ अतः स्ववतिः ॥ अतः स्ववतिः ॥
 तस्मै वे ग० ३ काति यम त० ३ वमा तु ७० ॥ अस्मिन्नेत मित० कर्मता ॥ अतः स्ववतिः ॥ अतः स्ववतिः ॥
 ३ पचेरुतु तम ॥ ॥ अस्मिन्नेत मित० कर्मता ॥ अतः स्ववतिः ॥ अतः स्ववतिः ॥
 या श्रीति मित० ३ काति यम त० ३ वमा तु ७० ॥ अस्मिन्नेत मित० कर्मता ॥ अतः स्ववतिः ॥ अतः स्ववतिः ॥
 पति० ततः स्ववतिः ॥ अतः स्ववतिः ॥ अतः स्ववतिः ॥
 नृवामि० ना म० वतु वि० राः स्वमति ॥ ॥ अस्मिन्नेत मित० कर्मता ॥ अतः स्ववतिः ॥ अतः स्ववतिः ॥

वहूँ लक्ष्मी वर गोवर्द्धनी तिल० प्राश्न साक्षात्
 वृत्तोल्लासो वरा० त २०१।१७५३ त्रुक्ते
 त० त्वेव० गुरुना आश्रितो बालकः ३

वितापसिधं मेतातुमर्हसि ॥ १७ ॥ वा ॥ ॥ न च मेनां न कितुं राक्षः तस्मिन्नेषां लीराक्षिमां ॥ राक्षः सावलं वं तोदितं वेस्थातु मय मभ्यत पोवनवते वेस्था कन्येयं ॥
 वमोचिनीनाम तौ न कतां वासासु पोवनवता विना ॥ इत्युक्त्वा तं राक्षीना घमरुत्मा स कुमानस्य मय्यु यगौतमं वेथासु पोवनं स म द्वितं वृक्षां ॥ १८ ॥ मय्यु यगौतमं वेथासु पोवनं स म द्वितं वृक्षां ॥ १८ ॥
 तं मयि प्रतुं ॥ तस्मै ॥ तौ सुन मय्यु कन्या ॥
 वविन कुंभ सात्वा तं गौतमं ॥ १९ ॥
 स तु पिपीला मय्यु यगौतमं सा नि ॥ २० ॥
 सता ॥ २१ ॥ न स ॥ निपिध मय्यु यगौतमं ॥ २२ ॥
 मकरो द्विपिध ॥ २३ ॥ स तौ निरा राः ॥
 उगाव स मय्यु यगौतमं ॥ २४ ॥
 तातु स मय्यु यगौतमं ॥ २५ ॥
 ॥ न च मेनां न कितुं राक्षः तस्मिन्नेषां लीराक्षिमां ॥ राक्षः सावलं वं तोदितं वेस्थातु मय मभ्यत पोवनवते वेस्था कन्येयं ॥
 तं मयि प्रतुं ॥ तस्मै ॥ तौ सुन मय्यु कन्या ॥
 वविन कुंभ सात्वा तं गौतमं ॥ १९ ॥
 स तु पिपीला मय्यु यगौतमं सा नि ॥ २० ॥
 सता ॥ २१ ॥ न स ॥ निपिध मय्यु यगौतमं ॥ २२ ॥
 मकरो द्विपिध ॥ २३ ॥ स तौ निरा राः ॥
 उगाव स मय्यु यगौतमं ॥ २४ ॥
 तातु स मय्यु यगौतमं ॥ २५ ॥
 ॥ न च मेनां न कितुं राक्षः तस्मिन्नेषां लीराक्षिमां ॥ राक्षः सावलं वं तोदितं वेस्थातु मय मभ्यत पोवनवते वेस्था कन्येयं ॥
 तं मयि प्रतुं ॥ तस्मै ॥ तौ सुन मय्यु कन्या ॥
 वविन कुंभ सात्वा तं गौतमं ॥ १९ ॥
 स तु पिपीला मय्यु यगौतमं सा नि ॥ २० ॥
 सता ॥ २१ ॥ न स ॥ निपिध मय्यु यगौतमं ॥ २२ ॥
 मकरो द्विपिध ॥ २३ ॥ स तौ निरा राः ॥
 उगाव स मय्यु यगौतमं ॥ २४ ॥
 तातु स मय्यु यगौतमं ॥ २५ ॥

तव स० ग म लो लु प न तु काल० प्रतीक्ष० नेना धिनेः सु स मा दिते । स० ग म ल० त्व स मि क्ल मि त्व पा र द रु म अ मे । मु नि वे व० स रु स्या क० वि श्रा य न पु न० १० । म ति० व का ३३ मे ना
 देव ना क क तु ल ल ला तु । अ घा व वी ह्य न रे ष० क तौ र्धे ना० त ना त्म ना । कै र्धो सि स्य न रे ष ग क्क सी प्रो मि तः प्र तो ॥ प व० स० ग म ल० त्व पा र द रु म अ मे । मु नि वे व० स रु स्या क० वि श्रा य न पु न० १० । म ति० व का ३३ मे ना
 ना म ल० कि तो गौ त म० प्र ति । गौ त म० स०
 ४५ उ व० त० व० त० स० प० नो नो जा ३ न न म व
 म त म० त० स्मा त्व० स म ने रा क रा तु क
 स द स्मा मि पा ना मा त्व म पा ग ता
 ल व वी दि रा दि त्तुः प न मे ख ३० । आ
 न क स्या रु धि मे वा सि । त स्या ति घे
 त स्या त्र म व ता० वा नी० पा य स्व वि भेः सु ता ॥ १५ ॥ इ ति स्त्री त व स० म द ना आ य मे ना ले का० ३३० । अ म ल० शोः ३३ प पु न न व म नि० ना म प० व वि० राः स ग ३३ १३

[illegible]

राधिलोचनपुत्रः
विद्यलपुत्रः

1119

मन्त्रं ते मायिनं पन मेखन १०॥ का का रावतं सवत वदिनं ॥ तो मल भ्रम स गोश्रवलो नित्यः राधो नो भ्रम यो म
 प्रतो ॥ तं स्माते रातरो नाम न भ्रम सु यो म न न भ्रम ॥ भ्रम भ्रम ॥ १३ ॥ पा ॥ न न भ्रम ॥ त क व क लान भ्रम सु सु वी के रा ना ना यो न भ्रम ॥
 नये तरा न वा प काल मे प्पा ति ना भ्रम
 प्रतु वा वता न क ते का म क नो भ्रम
 १०० क्रि ने वा न पा रि नी ॥ ॥ श्री नाम ॥ ॥
 ये तु म्मान सः तदा स मायि भ्रमि
 भ्रम विराः सु म्नि ॥ ॥ श्री नाम ॥
 स क म्मा द तो भ्रम म्मा प द इ य म्मा पा त म्मा द य स यो भ्रम गो त भ्रमः काल या म्मा स प नी द ते न वा नि ता पा नो प्र क्ता न्ना न भ्रम स त ती र्ध स र्व वा प द ॥ स्वा त्म
 नि प्रो म्मा म्मा स प नी ॥ रि वि वा र न मे ॥ रि वि वा म्मा नि ग माः स र्वे प वि त मि ति त त १३ ॥ ना म्मा स ता त प ना त्मा नं ॥ १४ ॥ स र्वे नो भ्रमः ॥ जो ड रौ ३ ॥ ना ते स १३ ॥ का क

वित्तन सातासु भेः कतविं न विच्छिन्ने विका विमि। सा सिमिमा सो प्यते तां त्मा कति त्वं वत या भु भै म सा ता सुत या भु भिन विधा का य भु भे तो। अ विच्छिं न तु त व सु वि छे व सु
 विकल्पित भ अ विच्छिं न सु पु मे न भे क त्वं प्रतिपाद्यते तत्त्व म स्या दिना के स्व ला ता स स्या म स्या वे। धा प के शान य ते त प न म सा वा के न वा तु नो भत ता वि धा र्थ स ये स
 न र प ते व न स्य रा य भ। प त वि स्ता य म ह को म म हा वा यो प प म ते। म ह क्ति वि भु स्या नां नि रा स्त्र म ते पु भु अ ता न न सा न न व मो क स्या ते सा क ह म रा ते न पि।
 ३० र स स्य ० ३५ य ० प रा त्म नो भ जै व सा का क घित त वा ठा ना म ह क्ति नी ना य न ना य न त्वा या दा त द्र म् ० ३५ पि ना भ तौ यि क्ता। ॥ रि क्ता ॥ ॥ नो यि तौ
 ४० र स स्य ० ३५ य ० प रा त्म नो भ जै व रा य वे तो व ० नो मो य त रा स या ना व स ह र्थ या सा क त रा स म प दे रु स न गौ त म स्य म ये ० ३५ स स ह रा क ति नो स्त या। रा प रा न व ता य यि भ
 नि ना क त म ० क सा। सु त्वा भु भे त म नु को ना नी वा क्ति वा वि मी। भु भे त रा व पा पे त्मो क्ति वा न क ता ० नि का त्वा ० ३५ ॥ ३५ ति री त व ल य द ना म
 य मो वा ल का ० ३५ गौ त म सु ति गौ त म स्य ना भे म प न त लो प दे रा क घ न ० ३५ स स ह वि री ० ३५ र्ग म् ॥ ३५ री ना म व ० ३५ य न म् ॥ ३५ री ति व रु वा व ॥ ३५
 ना मो पि प न मा ० पु ज्ञा गौ त म् ॥ म सा त्म न भ स का रा दि भि व त्वा य क गा म मि धि ल ० त व त भ त तः प्रा भु त न ग त्वा ना म सौ मि ति मा स य वि र्वा मि त ० ३५ स स ह त य रु वा
 भु वा वि रा त्वा सु त्वा त रा ग म् ० ना का प्र त्प या तः स व ० ३५ ति भ वि र्वा मि त ० ३५ ॥ ३५ म् ॥ ३५ य रा भ र व ग द ० ३५ ॥ ३५ वि र्वा ० ३५ भु भु म् ॥ ३५ स स ह य यो म

[illegible]

अतेनात्रयं रायश्च सुनामनवम्भान् तत्तं हे
 मोदाविष्णु छवीं कुंतीपाके
 नवम्भान् रातिघौष्ठु छाना
 तच्छमेसवत्किनाम्या। ब्रह्मज
 नवम्भी छपोष्यस्यपासदा।
 मोतिरनीनामनवम्भीवतात्तु कृपा

[illegible]

५५ त्वापत्तात्तावेन ५ पो वस्तुतायथा। स्त्रीनामुह सोहवाहीतेतैतस्यैनामवाकरोतु। यस्यावैतनवृक्षांतु कातोनामोम निखयगस्यातिछिद्र
 क्रियास्वकाभागिनिजेनमान
 ५६ गंधा। ५ स्त्रीनामायनमभा। ५७ अतिरसीतव सवृक्षनामायनोवालकादेनोभावतानवमान
 स्त्रीमजावैवुवाव ५ ५ स्त्रीना
 ५८ ५ पावत्तुवाव ५ ५ तगवनसुवतवशतकातीक्षपरायका। वरलो
 ५९ ५ नवभीप्रोक्ताकोहिसुपेयसायिका। नामवेवपुनवृक्षत। ५
 ६० ५ मेनाममिदित्तकितययकिं
 ६१ ५ मतीक्षुतिभयकिविद्राममिदित्तनोदरातिस्वराकितभनौनवेजुसुछातमा ५
 ६२ ५ विरवपुपपराजिभनममवतुविरासि
 ६३ ५ कोपकांनारसीनामनवमिदित्त
 ६४ ५ नमासतोवकगतस्थिदिनेमजा ५
 ६५ ५ कतव्यवृक्षवातु

पुनः तद्वदौ। वस्त्रे नातरामौ विवे
लोकप्रतिष्ठितिः अत्रावस्थिति-
तः। कथं निष्ठापयन्महाबालकस्य
इत्यादिना कथा जगत्परिकल्पिता

मानुषं पुण्यं स्थितं तत्र चान्नरा न घेनादं तपसा नापितः पुना भूत तत्राति का निम्यात चाकृतं नितो उपमेत तत्रादूषं प्राकृतं तपसाः पदं
 कृत्वा नितो विप्रोक्तं कल्पते तत्रात उन्नति न स वादमा वर्यो यस्तु पंक्तं तीक्ष्णं सुकृति ता कृत्वा कृत्वा मातरं ना भो बलौतु वा उ नो द क। अधालि ० ० ०
 सुतं रे विप्रोक्तं तस्मै इदौ मया। तस्या स्तनं पिबं नु देवो मातं उ ह्यं ग गो वतौ। ततः सारा ना कर्षे म पुत्रं ह्युत्तमा तनं पु नो ०
 सावस्ति पुन मात कर्माति का कना तु। ना म्वा स्तौ इ नो दिक् ० वसिष्ठः पृथ मेरु निस्त्रय सना म स ३ रा ० सन नाना नु कृति ता य
 कं। सियः क म्बल वासिन्मान मोमो यं यतो रुति भूत ह्यमा कृती ना म्बल स्य नाम सि धं ० पुन त नून ना म्बं ते यो गि नो न ते स
 त्मानं रे विप्रोक्तं नि। इति ना म्ब पदे ना सौ पं नं ब्रह्मा ति श्री य ० ते। न लो कु ले सि ल ना ति ना को म्ब की स्थित भू सना म्ब इति
 लोके पु विप्रोक्तं प्र क ही कृत धनारा वको ब्रान ता दे व भू सन ० न्नीति पात क ० पुनः प्र वे रा ह्म ति या म्ब का न सु क वा ह वत। स भनं सन नं ० ० ० ०
 स सानि न कृत्वा तत्र स यो गी रु क ती वै व वतु वे उ प ना य म्ब बो नः पा प स मा वा नः पा प क म्ब नितो पि बो प ना ० ग ना न तः पा पी

देव देवनमस्ते

वेदवादिनेत्यतामानं शानै कविमनः
गच्छन्तीवनगच्छन्तिनराणां

वेष्टुतेष्टुतिष्ठन् पतिलकस्ये।

नसन्तुत इति लोकां नुविठुं

अथातश्च पाले रसुलु

उपसंरुन विस्मयतुं नो नुपमलौकि

कोविनामाध कोसल्यात किताविताना

सुखे राश्वक गदाधन। पनमात्मा नुतो नः पुनस्त्वं पुत्रो तं मम वरं तन गो वरं वा वां बुध्ना दीना मतीं इत्येव वा
तमेव मायया विखे स्रु स्रव सिलु पस्ति सत्वादि गुण सु कसु सतत वा गदलस्य दा कनो जीवन कतीव
जिसु गोषीद परम सीवन परमसि। नप्राणो अमनो रं अइत्यादि सुतिन घति अस्मः स

नशोनतां तवितानां का कृपव सुमे असा न कुरु नेतव ररु

सो। त क्रेषु ते रया स्त्रीति ह्य म अ न नुत मा स सा न सा गने म

पा गत म दे वत्व दु प मे त म्ने स दा ति म्ने तु मान सो। अ वा गो तु

बालता व सु को मल यलालना दिति नाला पै सु नि ज्ये उ स्र न त म म वितु

मसीत गवानु वा व ॥ म म ते रु तु बु आ मा पु वं तु मे ताना पनु तये। म धिती ना व मा रं तु

ते बुद्धा उपर मा मा व धा त्वं अ म्ने

व्या पति पुत्र यना दि धा त मा मि मा

न मा मा या त व विखे वि मो धिनी

म धिती ना व मा रं तु

म धिती ना व मा रं तु

अथ वरिणस्त्रिप्रोक्ते मन्त्रैः लिख्यं विष्णो नमः ॥ इति स्तुतिः कपिष्ठा मिषुतीयां पुत्रकानामातु । ततः प्राकाम्नि लिखितं नृपते पुत्रकानामातु । कृत्वा वा भौ
 वते कस्वी मन्त्रं तस्मै नमः मणिगतेन स्तुतः रीरो वनो रूपा भान स भस्त्रा मस्थस्त्रिजास्ता भस्त्रा सवकात मन्त्रं किं वध ॥ वरी वरु को सु
 तोन स्को वनमाला वितुषित भरा
 यज्ञां कुन प्रस्थः सवति न मातुषितः पीतां वरु ॥ १४ ॥ स्वयं
 नतु ॥ भौ य सेना राया मस्त्रयं
 ॥ १५ ॥ वरीत गवान्वाव ॥ १६ ॥ वेवेन । सुय सेन त क्राप न
 रुना कानं त क्व व हल भ त ॥ १७ ॥
 स्वा सवलो के रां ना क्राय स भ्रा कल भ व व देता र्ययो
 कर्त्तु प्रयतो तुत्वा
 रुष गान् ३ या गिरा ॥ १८ ॥ तव मेत के त्वा रु देव देव ॥ कृता र्त्त ॥ १९ ॥ ततः प्रस्थं नोत न वानु प्रा रु
 ना कान मन्त्रं तस्मै पुत्रो मन्त्रे निष्ठा मि तव लो कर्त्तुता य वै । पति ता माय देवानां न कस्त्रा नां कथा यव । पुत्रि वरु त ॥

लेमः सवर्वाः तपान गः ॥ ४० ॥ इति नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 दशानामो नाका वसुधु गवपा ल चतु ॥ ४१ ॥ पद्ये मे न पः पु वः कौ सल्लां को सल्ला त्मना ॥ सु नि ता ॥ म गथा पत्र ॥ द्वितीया म वकी न पक्ष के की श्री के कथा
 पत्र ॥ ततीया म वकी न पक्ष तु यो स
 ना सी ३ ॥ रा क नः सु तक्ष ततो ब्रवी
 वका बालि मधका राप पतानु
 क यः प्रा श्मा मरु ॥ को म ॥ बुधि
 य मा गता ॥ सु वधा प्रा श्म से पु त्वा नू ति प्रे ता ॥ स्व प्रा धि वो स पा ना ॥ स ॥ त्रि य ॥ ता ॥ ते तु न ग स ॥ वि छ स तौ ॥ ततो ब्रवी न पो मा त्मा ॥ ४२ ॥ वा य वि

क ता वि त न रां ता नाः स्तं ति च तां मे शुभ्रानां वचनादिनां घसं वक्ष्ये पुनर्निस्सिद्धा तेषु न गमे स न स्वास्वोत्तरे तीनेनास्वोत्तरे तत्र वतति ररपरा ग पुनरुक्त
 त्र क म न क वि क व ता भ य धा वि धि य धा न्ता य प नि क म ति रा स्त त भ त यो र व मे यः स र्वा तः क ल स्रु ते धा वा स्ता मे भ व त्तु मे म न य स्र स्र प्र य म न य
 नि क लि त न क ध न द्वि यी य स
 ति ना लो व नि मि त्तो म ति कि दि
 तां क तु व न भि प्र ष्ठी यो ते र
 वि नि मि त्तो म न्न मे ये म ना य शे स्व यं तु वि दिते पु न्ना ग वा रा व त स र्वा मि रा ते तो र न प भ र रा को ही सु व त्ति न क त स्र व त्तु ग ति त तः प्री ते च न प ति
 वि मे वि क व क्ष्ये ल भ र प रा ग म वा ने कु ल व धि क उ ष्मे त धे ति व स ना का व म वा व दि क स त म भ त वि षा ति स्रु ता ना क न व ता न स्रे कु लो द द ष
 स्या त म ति मा त त धो त न का नि ता स्त व रु वो वि दि ता रा स्त
 स्व कि न्नै व म तो यी मो म ना क तु भ क तु स म्मा च त त द न्मा य तः ७
 दौ ना का दि रा स्त कु ल व न भ म भ य वे प्र ती वी न्तु वृ क्षा मे द मि ता
 र र नि ता त्ति म ति सो म्मा च वी वे व म
 पु र त भ न वि म्मा चि र नौ ना का य न
 दि रा न उ द्वा ते व त धो वी वी द मि ता मे वा

मातात्मन् वरुणे नित ॥ देवानां पुनर्यो ॥ अति सुखं कृत्वा ततः पुनी ॥ पापिनां कृत्वा भव भानां कृत्वा ज्ञानां तवस्या गने ॥ तस्मै व द्यात वे न्मो कः स ॥ व क म वि क ॥ त न भ ता ॥ पु नी
 गो पु नै उ नै ॥ अ ज प्रा कान स ॥ व ता ॥ अ ज्ञाना व त्प ति रा ज्ञा ॥ नानी म ॥ ड ल म ॥ ड ता ॥ क वा ह त्तो न म व ती ॥ सु वित क्ता ॥ त ना प म ॥ स र्व य ॥ त्वा यु ॥ प व ती ॥ पु ने ता स र्व रि ति लि ति ॥ ४० ॥
 उवा ह ल ॥ भ व ती ॥ रा ॥ धि ॥ धी रा त र्ण ॥
 रा ॥ व न ॥ न ना नी ग ॥ गै व ता ॥ स र्व न न
 गो ति ॥ सु ॥ खै स नै ॥ स ॥ घा ॥ स्ता ॥ ज ॥ त ना क
 स र्व तः ॥ पु नी ॥ ३ ॥ उ ती ति ष ॥ ६ ॥ गै र स
 इ ति स्त्रो त मै त हे ॥ अ न यै ना ॥ पु ॥ य स ॥ न यैः स ॥ व ता ॥ ता ॥ स र्क स र ॥ अ र्व स व ॥ म स्मि ॥ मा ॥ म्ना ॥ न नि न ता ॥ वा ॥ स्ता ॥ मा ॥ ३ ॥ अ ॥ अ ॥ नो गि ॥ ता ॥ स र ॥ त ॥ उ ॥ मा ॥ त ग ॥ व ॥ त ॥ कृ ॥ स ॥ ॥ सु ॥ ता ॥ ॥ अ ॥ स र्व
 व र्ण वि ना ॥ स्रे ष्ठाः ॥ दा ता ॥ म नो ॥ यो ग वि त ॥ मा ॥ धी ॥ र्ण ॥ य ॥ ॥ सु ॥ ॥ ३ ॥ ना ॥ गाः ॥ स ॥ त्वा ॥ स ॥ म्ना ॥ नु ॥ माः ॥ सु ॥ स ॥ य ता ॥ पु नी ॥ स ॥ म्ना ॥ दा ते ॥ क्ता ॥ ना ॥ क्ता ॥ ३ ॥ रा ॥ न ॥ यो ॥ म्ना ॥ नु ॥ ॥ म्ना ॥ ता ॥ ग ॥ व ॥ तः

कना माय मेवाल कां ठे डे व क ति स्तुति विस्तुवन प्रदानं वा सुवोराः स्वर्गः ॥ १ ॥ सीता स्वर्गं शरणं भव ॥ २ ॥ पार्वती वाव ॥ ३ ॥ कावो नरा न यः पाकः कुं ॥ ४ ॥
 ल्या कावुरां कना त गवानु काना ममत स्नातुं प्रो ज्ञाति वर स्वर्ग ॥ ५ ॥ रवी मन्ना देव भुवाव ॥ ६ ॥ स्वायं तु वो मनुः पूर्वं वा नरा मन्मन्ना मनुः कडा पव वरा दसु ॥ ७ ॥
 वै मि वेवो त मीत हे ॥ पु कित से न लक्ष्मी राः प्र ज्ञा नः क उपा नि पि भ म तो व न व रा भि वि ति ते नो को म नु न ब्र वी तु ॥ ८ ॥ पु त ल त क दे व रा वि व क
 क्त सु मे र ने ॥ त्वां पु त लाल स त्वे न त का छि पु उ पो त म ॥ ९ ॥ रवी न ग वानु वा ॥ १० ॥ प व म नु म नु र ने ॥ ११ ॥ अ त मे री नि का कितं म मा पि क म
 का प्री ति ना तुं ते पु त ता मि का प ॥ १२ ॥ स्थ ति प्र यो म ने काने ले त म नि षि नि ग व ॥ १३ ॥ आ ते व रु म पि अ नि ॥ १४ ॥ अ त व न न ॥ १५ ॥ प र्ति ता पा य स्या
 पु न्ना वि ना रा य न उ कृ ता ॥ १६ ॥ स र्वा प त्मा धी य स त वा छि यु ने यु ने ॥ १७ ॥ व न नु च हो क री यो वे ॥ १८ ॥ त्रि रा वि ॥ १९ ॥ अ क्तो व ति ॥
 ती व न त र मी त तै वा त न पी य ता ॥ २० ॥ रा वः ॥ २१ ॥ न पु व रो म नु पु र्वा का तो र रा न घा क य ॥ २२ ॥ द्वि ती ये व सु ने वो तु वृ क्षी न म ब ये घ स ॥ २३ ॥ तृ ती ये तु वि क ॥ २४ ॥
 रि नु वि वि लु व ता रु यः ॥ क लौ ि क स रु स्या वो ग्रा मी रां ब त्त ल स ॥ २५ ॥ क को त ॥ २६ ॥ प व न नु त्र य ॥ २७ ॥ क ता मु क्त स्या ॥ २८ ॥ क ता क ता नि को स ल्या स ॥ २९ ॥ क ता क ता नि को स ल्या स ॥ ३० ॥

३ रात्रयस्यानिद्वितीयावस्युदेवस्यादेवकीनामस्यातवतात्तायाविष्णुवतस्यासीत्तृतीयादेवताद्वयापवमातृत्वमाप० नोतिष्ठुनमस्तुस्यासर्विष्णुपव० न
 मस्तस्यातेस्याविष्णुकातविष्णुति। नापवः प्रधम० न शेकपुस्तुत० न० तन० कल्पातुपी कवि० पस्यातृविष्णुतिकल्पेयुगे॥ ॥ पार्वती॥ पस्तुवस्तुकुत्तुमासि०
 ओसोत० मेयो गपतास्त्रिवेतु। वचनाम
 ना३। कविगात्रासुप्रवत्। ब्रह्मलोके
 नकेराक्षनामायामैकदेराजितकुर्ले
 तावितरा० का कर्णेनोनकभेप्रति।
 नेनाम० ब्रह्माववचिधमयानराक्य० देवेसिवकु० त० सिलेनतु। यत्कि० विदित० तस्यामादातृप० वस्तुतकुत्तु। रिवधामोस्यलास्येकनपनेपु० पदे० भक्ति
 नाविते। सर्वकोमगुणोपेतेप्रवतासनयुनीदी। वसेद० पापकातिगपाः सन० य्माः स० तव० तुतनयस्यस्थानमाहावेमस्य० पापैः प्रधुवते। कैलासो

[illegible]

[illegible]

भिकात किमेवातिवा ॥ १ ॥ त्रिविह कृत्वा सवे निज भूत स्वतया ॥ २ ॥ कृत्वा नैव स्यात् सुभो ॥ ३ ॥ स ॥ सान मय त ज्ञाना ॥ तेषां त कृत्वा नैव ते ॥ इति सुवतिलोके रो मया वृत्तिः ॥
 कानतः प्राउ न तु क्कोति उनी ॥ ४ ॥ उना स ॥ ५ ॥ ते क स्योत तस्मिन्को ह्य क स म वि व रु ध वृ ध वि ह म रे रु ध का न ॥ ६ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ ७ ॥ द र मा म ॥ ८ ॥ स व त्ति न ॥ ९ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ १० ॥ द र मा म ॥ ११ ॥ स व त्ति न ॥ १२ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ १३ ॥ द र मा म ॥ १४ ॥ स व त्ति न ॥ १५ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ १६ ॥ द र मा म ॥ १७ ॥ स व त्ति न ॥ १८ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ १९ ॥ द र मा म ॥ २० ॥ स व त्ति न ॥ २१ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ २२ ॥ द र मा म ॥ २३ ॥ स व त्ति न ॥ २४ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ २५ ॥ द र मा म ॥ २६ ॥ स व त्ति न ॥ २७ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ २८ ॥ द र मा म ॥ २९ ॥ स व त्ति न ॥ ३० ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ ३१ ॥ द र मा म ॥ ३२ ॥ स व त्ति न ॥ ३३ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ ३४ ॥ द र मा म ॥ ३५ ॥ स व त्ति न ॥ ३६ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ ३७ ॥ द र मा म ॥ ३८ ॥ स व त्ति न ॥ ३९ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ ४० ॥ द र मा म ॥ ४१ ॥ स व त्ति न ॥ ४२ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ ४३ ॥ द र मा म ॥ ४४ ॥ स व त्ति न ॥ ४५ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ ४६ ॥ द र मा म ॥ ४७ ॥ स व त्ति न ॥ ४८ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ ४९ ॥ द र मा म ॥ ५० ॥ स व त्ति न ॥ ५१ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ ५२ ॥ द र मा म ॥ ५३ ॥ स व त्ति न ॥ ५४ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ ५५ ॥ द र मा म ॥ ५६ ॥ स व त्ति न ॥ ५७ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ ५८ ॥ द र मा म ॥ ५९ ॥ स व त्ति न ॥ ६० ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ ६१ ॥ द र मा म ॥ ६२ ॥ स व त्ति न ॥ ६३ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ ६४ ॥ द र मा म ॥ ६५ ॥ स व त्ति न ॥ ६६ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ ६७ ॥ द र मा म ॥ ६८ ॥ स व त्ति न ॥ ६९ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ ७० ॥ द र मा म ॥ ७१ ॥ स व त्ति न ॥ ७२ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ ७३ ॥ द र मा म ॥ ७४ ॥ स व त्ति न ॥ ७५ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ ७६ ॥ द र मा म ॥ ७७ ॥ स व त्ति न ॥ ७८ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ ७९ ॥ द र मा म ॥ ८० ॥ स व त्ति न ॥ ८१ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ ८२ ॥ द र मा म ॥ ८३ ॥ स व त्ति न ॥ ८४ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ ८५ ॥ द र मा म ॥ ८६ ॥ स व त्ति न ॥ ८७ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ ८८ ॥ द र मा म ॥ ८९ ॥ स व त्ति न ॥ ९० ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ ९१ ॥ द र मा म ॥ ९२ ॥ स व त्ति न ॥ ९३ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ ९४ ॥ द र मा म ॥ ९५ ॥ स व त्ति न ॥ ९६ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ ९७ ॥ द र मा म ॥ ९८ ॥ स व त्ति न ॥ ९९ ॥ त्वा प ना से ता न भ न व नी ला ॥ १०० ॥ द र मा म ॥

कुंतकमौलितकमौकुंतनिकुंतमौ। विनीवगौलान्नमातस्तुतातिठहासती। तहोमानीः परस्त्रोतुहानीवाआस्रमंविगाभलदस्यातोदिगीसेनाउर
 मीवसमाश्रुषि। एवंप्रवैवपौवैसलंकेराः पीठयनवीन। कित्वासकलनिकपालान्ताकवाकुलकिंकमन्। चिकत्तमाविधिंविहंतेलोकावराभानयन्। नीदि
 तास्तेनतेनेवाब्रुवामांरानामंन
 कीनाबेस्यीरमासाअतरितः
 मे। ब्रह्मोवाच। अनमोस्तु
 मय्यातुंस्वमस्यवसितुंयस्मि
 यरासिसयातुकिमतायथा। अतःतवाप्युमेरुःवित्तोषापनुतये। सपुनतेलोहतेनित्तंमुनितिसिं॥३॥
 मस्मातिःपुवसेवित्तुतवाप्युका निमलितुतरीभानयावित्तो। सपुनतेवक्तुंस्वपदंलवधापिसीत्तपनिवतु। अतस्तुतातमेवतवपीतिःसिंयो

गते ववसि सवेतुसिन स्याद्वौ कवे जाव सधपव ववसि स्यामिवित स्यामिव कृष्ण कृष्ण यन् नृ^{रा} मो नि^{रा} के तु मे के ततो उषातत स्र मव व^{रा} व^{रा} ह्वातक मी नृगाम
 वन^{रा} वणी वृमे वल्ल यते मनसिव तते । ततः प्रोवाव भूषात्मा देवग^{रा} अव यो गिति भल यव वि वि पितृ^{रा} व पव भव^{रा} प्र दे रि मे । इत्तु क्वा व स यामो तन्ना^{रा} नना
 दित्मोन यावित न य उ क^{रा} त त घा तु या वि त्त्वा त^{रा} का स क यन क^{रा} त क मो के व व न्मा^{रा} स^{रा} व भव म य यित्ता मयिक^{रा} वा घ य नि द्रा^{रा} व^{रा} वितो वृद्धाणा
 मया । विती व म म घो वा व त प स्या ना भितो वि वि भ प नितु स्या स्मि प मी त्त्वा नु व न^{रा} व न य स्रु व त । विती व म सतः प्रा द भ मे म म म तित वे त । म रि
 नित^{रा} व व र्मा स^{रा} त ग व नृ प्रति ता तु मे । या या मे का यते न ये जे ये वा स मे षु वा सा सा त व तु भ मि ष्वा त^{रा} त^{रा} भ म^{रा} व पाल ये । प व नृ क्वा ततो वृ^{रा} द्वा
 तथा स्त्रित व र्त्त त त ध त भ म्भु आ तु शः स न्म म न त^{रा} व र त वा नृ । व^{रा} प व^{रा} ल व य व रा ष्वा वे ती त नो दी दृ ते क स ध ल^{रा} का म भ्वा स न ग नी भ्वा व गो ना स
 सै र्त्त भ १५५ इति सी त त्व स^{रा} ग न ना म्मा य मे बाल का^{रा} डे ना व म क^{रा} त क मो धृ त त तित प स्र न म व म नि^{रा} ना मे का र रो भ्वा य धा । र सी ना भ्वा व^{रा} वा स न म म्भ ॥
 तनी स्रु प न सी^{रा} प्रा ना वि नृ नि क्वा य ना व म भ म^{रा} डे र नी^{रा} न रा गी व नृ प ये मे म्भ या त्त्वा नृ म्भ मे न ना रा र यो स्या स नृ म्भ या र त व न^{रा} ः स्र ता भ व न्ना ना

कतिपय मास सिद्धं कुरु विधास्यं ता उद्धृत्य स्यात् सा प्रज्ञाता येन ज्ञानं बन्ना ता पावतु वावा ॥ ॥ वनादेनान सिद्धेता कुं तो तो नाक साध्य मोततः किं तव
 तः पापौ तन्मे वं र सु रेखन ॥ ॥ ईश्वर उवाच ॥ ॥ पश्चिमं गच्छ कश्चि न गच्छासौ द्वितीयं कन्य स रितौ ॥ कुंतक मिरा भीवा ना चेता ॥ कन्या बलौ ब्रह्म प्रलोपुल
 सोतु तत्तु तो विस्वादा मुनिश्च
 काले मया मुनि न मया मा
 तुकुंत काले घना क सः तयो न
 तुत कः स त्वा ॥ ॥ मया ॥ ॥ कुतिश्च
 काले न ता गो काले मया ॥ ॥ इल न मया ॥ ॥ वत पसा मा ॥ ॥ तु पुन या मा स तुः प्रिये ॥ कुंतक मिरा भीवा ना चेता ॥ कन्या बलौ ब्रह्म प्रलोपुल
 ॥ ॥ वत पसा मा ॥ ॥ तु पुन या मा स तुः प्रिये ॥ कुंतक मिरा भीवा ना चेता ॥ कन्या बलौ ब्रह्म प्रलोपुल

तीत्मातौ कः पितो रोक कः रितो। पेततुः स का स्याल स्याः पादयोः स्यात्। पितौ ममावां का यन्त्र वन इत क्वा नांत यना रि नि। क छं नौ त न गो पा यः पत नो जीव
 यो निषा इत्तु का क जना प्रा रु स्विं गौ तौ त भव हलामा तै प्रं रा पतो व ह्यौ कालो रु उ वि नि क सः क न्न स यं त ग व ता यु व योः प्रति पा दित ॥ त न्न य इत्तुं यं न व द्या
 ये न पी ख वै भ ल का य मा तं व म्ने
 चि नी। सु द र नि नं त ती ये तु न्न द्या
 य नि अ ति। प्र वां त ग व ता सा
 तौ म ज्ञा त्मा नौ द्वा न पालौ त दे
 तत स्यौ दिति सः तु तौ कर प्र पा द् वि सः त मा त्। नि न म्प क रि प्र सै व चि। न० म्पा क र स्व उ य नि धा म्पा। व द्या इ त व ने म्पा सौ ती लो का नु ना रा य नृ स ल ॥ ३५०॥ ये त
 तु मि० ग जी वा पी तान० प्र वि वे रा म द्या रु न श्र त तो य श व ना जे म दि न० म्पा को नि पा ति त धा तु मि ग जी ता दे वे न य घा स घा न० वे रि ता। त तो चि न० म्पा

[illegible]

तमना वाञ्छामः साति हानप्रभोर्नाम प्रोक्तिते विद्युत वितं कमाद्विज्ञातीनां यतीनां शानिनाम पि विज्ञातवन्तो य तयो शानिनाम विरो वतश्च कमावतो विनीत
 स्पसाभो मतिमतः रुदेभ्यो विद्यायः प्रकारांते लभ्यं कस्मै व न रक्षाम्यथ यश्चानि वानाम् द्वात्मा कश्चिन्मुनिपुंगवः सर्वतु तस्मिन्नायं स सर्वतु स न रि
 नमः ॥ सनकादयश्च ॥ अथ पना
 ॥ अथ कतिः कथं केराक नाव यत्तत्त
 कोऽथः सर्वाय नाराकः कोऽथ वि
 कोऽथेति कथं तपश्च कत्पा कत्पा
 वानाम् यः काले सपीलः कोऽथः स रत्नाम्नः स कवर्तिना न काले विपलः कोऽथः सर्वे पां का स्य कानाम् इति विज्ञायते येन सरा तः स विन सा मश्न इत्युक्त्वा
 भवतां देवस्ये षवा कै तवित किं तेनै व ह्ये रा पु कानां पुनः के रा य
 रा पप्र दानेन स्वाभि द्रो सा त्क सता ग सश्न १० इतीयाव देव तव ता
 प्रोत्ति सर्वे पां तातिना स सर्वं नाम तस्मात्त्रं ठाल वानि त्पां कोऽथ स्या
 न ज्ञानाति कोऽथ वानि न यं व्रजे तु ॥ ॥ सीत ग वानु वा सुवा ॥ ॥
 तत्त वेत् ॥ ॥ अथ यश्च रक्षा कं त वेत् ॥
 रा स तो क ग तु कोऽथेन कलुषीत ताः
 ओ ह नीतिः कोऽथिन स कथं सौ न
 कोऽथे स त्पि नो दोषं कार्यं कार्य वि
 येन सरा तः स विन सा मश्न इत्युक्त्वा

म० नमो योगिनः विस्व उपाणि न० कनभत० ह्यु न च स्व वे प्रमिष्ठु तयि विस्वला भत नर निज को ह्या ना त ह ह्या विव री कता न सुति न कु सव पु न्ना पा न न न न न
पुता ध कुरु ना पा र त वा स नु त पा वै क० ठ वा सि न ४ पा गो मु न्ना मि न० ह्यु त कि न धा म नो क र ४ ह्यु स्त्री पा न्ना सा वा कु वि लु स्त्रि ४ १ पु० न व ४ रि क र्थ न स
कला न त्ता नि १ भा रु म दा म ति ४ ॥ इति न वा नु वा न ॥ ॥ न भ ४ क्ति वि प्रे० श व० नी या म मा पि ते । आ वा य पु का प्र थ म० त तो भा वि यो दि क ४ आ च रा
थ० वि को नो घ भा म तो ते १ बु भ य ४ ब्रा० म्म त्तः स व लो का ना भा यि पि वि की ति तो ४ म द० वि प्र ४ से य द्वा री क्ता मि न त या न्म त ४ धा ये ना रा य ने
वा पि न भ त प्रि न ना य तो या प्री ति क र्ज ते वि प्र र्था प ने म म मा म का भे वा ल ये ना त र मी स्त्रा व त्ती ति न्ना य ते । वि प्र० मा म नु का नी या त
भा० वि० आ दि प्रे नु पि मा १ वि प्र मे ये म रु म्मे व को नो त व ति त्त्प का ४ ॥ ४० ॥ भा ४ः सि य० य रो ये र्थ० लो का ना रि व पु व ४ ज० ति से या ० ति
स वा मि पु० सा० म नु र ति क म भ र ती न यि त्ता न न र वा नि रु न क का पि मु नी० स त ४ १ उ क व न व न० वि लुः सा त य० र व क्क य गि रा ॥ ॥ न मी त ग ब्रा नु वा व त म च
वे क० ठ लो क र्थ नि म्मा त व ति पा व नी ॥ १ वा० व ४ पा र न क र्म ४ स० य क० म० ४ १ न० म ४ ॥ य न्म ० नी वि प्र ४ १ तो क न क० क ॥ १ प वि लि त० त दे व त व न० नो वे द का न
स त नु प्प ते म म त त्प क० का य न्म ये व वि लि त० दि का ४ क म्भ ० म म च क म्भ न म्मा ना ना दि तु ॥ ॥ ३० ॥ (स भा व ता ४ य० लो क० प र लो को ४ १ दा

[illegible]

[illegible]

[illegible]

न० १ मये ननु तमे विज्ञानं त्रुपेदि निविद्यते तमहा मशान्ना किं तन्मन्त्रं विन्दते वने मशान्ना यत्नान् तमो यका नमः नान्स्त्रा वक्ष्या १ न न० रा किं इको रा ति गः रा स
 ति वा० त नरुद्धं धरुद्धं लोक विज्ञेय विज्ञानं तुति नान० ११ कोदि निगद्यते र१ ११ व० प० नातुरा निष्क मय या तु वा मस्य सीता प्रकृतिः प० नातुरा न१ र१ धा लक्ष्मी गो तु न
 तस्व व क० रा तु न जा सी न को
 प० सी रा म० रा य न म० धा पा व त्
 पिरु त्पा दित न गो नि वि का वि गो
 क वि न्द्रु त्रि वि चा त्मा य० क वि धि नि
 वा म ते स० रा य स्या स्य ह्ये ता नो
 तने क० व० नि रिव त्पा ये न रे यो त वे न्द्रा म्हा

सायव म गउता तिरिस्थितिरु० मानका नाम गतस्था
 पका नायसाका नोतु द्विती कर्तेश्च यथायमनतैका ना० तय म तय अते त न तित्त य विना रातत उ पे
 य कतु । ततकाले सु स० तु य सवे
 या । १००५ । ५ मी नाने देव देवो
 रानयितुवाना नाय गोचरो ।
 तिरुवा मितो देवो तका मरुव मपा
 यतो वावो निवर्तते मनोतिः स ययोगिना ० त गवाने न सवे वा० प्रत्य मरु मरु पतु ॥ १०॥ त सैवो पा स न० क य० को मला० मि सु सु सु पा
 स स न मी वे च सी प्र० मो सा य कल्पते । स न र उ र स य ता मी ति सा० भना० त न उ र स ॥ १०॥ सी ना म त क मा देव स स व० म यो दित० १९ ना पि व र वो ना म० म
 वा म पु पा क नो तु । म नो य० का य ते न० तः सा० तो तु दि व स व गे श क ना वि द व ती य यि म० त कानु क० प
 सौ ल क मा ना ना य गो त वि । स रो वः रा० स न का त्मा० ने वे
 भान म्मा ते । म ने वे रि म्मा पा त क ना रा क तु । त तः सौ । मि ति
 ल य तु । ना म ना म्मे ति न के ति सै व ३० । ति ति पा । पि न म्पा प
 बु० म्मा पि तिः स य । ले य ता च मे रा
 त न त रा त म्मेः सौ च त या सौ म क पि
 को हि स स स तः सानु य न ति ना न व म
 स त ०

[illegible]

॥ सुत उवाच ॥ ॥ पुनः कैलासशिखरे पावतापन मेखनधविबुधान मद्राशो गीस्वतुप सनुविं तयन ॥ ॥ नाना प्रसून वितते नाना वक्र स माकुले । नाना वलिलमा
 कीर्णसिधवाना सेविते । कङ्गीवनसमाकीर्णो रातकुं तसतां तिके । नाना सखसमाकीर्णो स्तनो गम सेविते । प्रकाशैः पुष्पनागे ख मुक्ता काले विवितिते । वाचिन्स
 शोभाया अविस्ते के म मं ह पे । नवकात्रयतेन मे नव प्रा कान रोतिते । गोपुनैर्लक्षविस्तानैः को ह्युक्ता य स म वि तै ध म प्रा सा दे खं व सुं का रोः क स
 गानैस्व मं डिते । प्रमथैः कोठकोठी तिः सुल मुज न पा मि धतिः । अविष्टिते गुल्म दे रो ज्ञान दे रोष सर्वतश्च तस्मो भू नितसवर्णिगे क को मं डल म
 द्वितैश्च विपुं दुषने साविल सतपरा ल मं डल मं डितै ध कं व को प्रीव क य नै वे त क न न पा मि ति श म विष्टिते सो वि तै लै गै र सु ला सि पा नि ति श
 इन्द्रादि तिलो क पा लै नि द्रा म्पा वि वधुयुतै ध सा प्प मं प्रतो न व स नं कां क तिः स न का ति ति श मं ह पे व रु स्वा रु सैः स मं स त रो ति तै ध म प व
 विभुगोपे ते न कं ता वल स निते । न न स सि द्धा सने रु ते न न क त्वो प रो ति तै । सुवि तिः स न का ओ ख सु य म्पा नं म दे ख न न रु मा प्र मं म प प्र क दे व दे व पि ना कि
 नमा ॥ ॥ पुनोवाच ॥ ॥ देवदेव मद्रादे व रु य वं श म रो स न । क य म म्पा ध लो क स स वि नि ध त मं त कान क । क य वे यं ता स वे य रु य वा म्पा न न । क य न

[illegible]

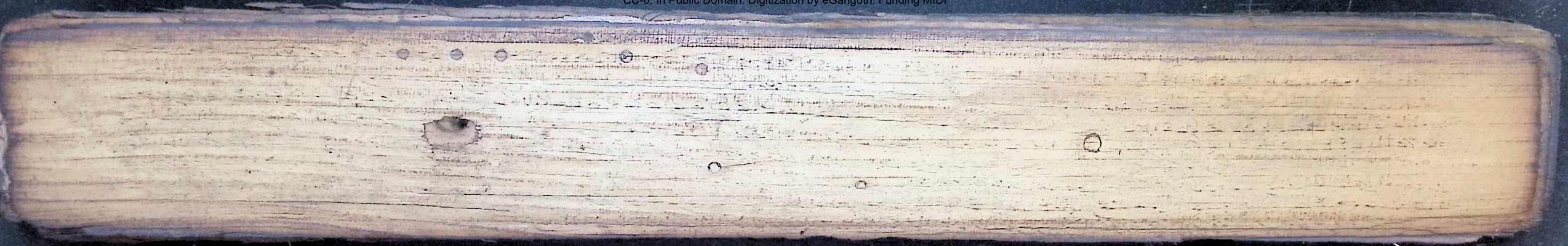
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

नाभोवृक्षोत्पत्त्याद्वाभिमं पुमान्। प्राजापत्यं ननं विधिः साक्षिकत्वा गतं न प॥ इति बालका० ॥ ॥ अथ स्वमेधरातैरिष्टा तद्यावरुणवर्गकैश्च गवांकोट्युत्त० इत्या
 ब्रह्मलोकं प्रजास्यति। इरावपस्वरुस्या। निरराववसितानि। नाना। मोरा। अमृपासिता। ब्रह्मलोकं गच्छति॥ ॥ स० गुरुसामाज्या० ॥ ॥ अब्रह्मपुत्राणि ॥ ॥
 लोकः स्वप्नापुत्रा वै नवती। मोम
 नाभोवृक्षो विताति नभः॥ ॥ अस्का० ॥
 रुवाप्रजस्यति। रा० कनौ। तद्यैव
 सिवविभुस्वपुत्रेण पत्रवृक्षैव केव
 जते॥ ॥ गार्ग्ये॥ ॥ तस्यां रानया दाक्षे। इरायीववथा धितिः ब्रह्मा धैर्येति विष्णुः। शीरा० रोनावती। तवावृत्तस्य स मराणातिथानस्य क मन्वाद्यस्य सार्वि ताभ्यस्का
 वगात्रुवा केन को वन्त स्यात्तज्जातता। ॥ निवमि स० ॥ इतीनाम० प्रतिशिवश्च॥ ॥ तत्तान सौत्रयोनाम ब्रह्मा विष्णु रुद्र० तद्यादितो विनिर्गती तयो वयं ग्लौचे अक्षि तद्वि



१८८
 तान्तराद्येनेन सवसा कीरि वीरुनरुणा पतुनाशा पदेरोनसीतालकामासं सतक्षदं तुं दानव कोलीनां प्रविशो ३० उकावनना भवतयो दरासामाम भवेवकाशकतं म
 मावयेनतेनमे कृतं नादामस्य उनाछनश सवसासेव सिनोमे सवामस्यवथा धिनक्षसं बंधो रतिवतस्यस्य निमित्तवधो तवेत् । सीता रुनामा का मेन नावगेन उनाछननाम
 मासमासि ३० प्राप्तामवसि सैनमं विगा। पतेनै वनिमित्तैरुं तुं राको मया सुभ्रु मवसि सवथा धा य पुन कं म्मातैवेनम मावकतः सेतु वंधो पिब्रुन रुतया विवा न कं
 सेतुं ह्वासा सुद्रस्य ब्रुन रुतयां द्रपो रुति १००॥ नावागं पापक म्मां रुत्वालं का पुनां का मो ॥ माव ३० श कं मम सदातिः पावनीसं सत दिवति । ना माया मा क
 धापापित विजाति सुपावानी । नतुं न राका पापेन सीता मे रुन पायिनी । सीमृति तु पिता देवि गो री लक्ष्मीः सन स्वती । देवता सर्वलो काना मविता सर्वदा
 यिनी । मरुं सर्वस्य न गतः पु रुनी यो स्मिदै वतन मतो माया मयी सीतां कलया मि विमोदिनी । मुनि मे वं स माता पात विरु रुत न पु त मभततः
 सीतां स मा रुय ववनं वे ३ म ब्रुवोतु १०॥ सीता मक्ष ॥ पपरम वै देदि यत्कृतं नावागस्य उनाछनना मभ्यं शो दं कतुमि कु मारीवेन उनाछनना मभ्यं माताति उव
 तो मायिनो म पि मायिन न माया विमोदितो म्मे व मम माया उनाछनना मभ्यं माया मोदितोः स वे ब्रुवोतु ३० यो सिला म्मा मेव ये पप सते माय मे तां न वनतते ।
 इति सीतां स माता पा सवसा राजवः स्वयेन म्मातु देवीं स मा रुय ववनं वे ३ म ब्रुवोतु १०॥ सीता मक्ष ॥ नावागं रुति पायिनी गति सन वंधु ति पति

अनिशरात् तृप्ततनतात्मां व लक्ष्मीं नमः कात्मना देवतात्तर्धितः सत्तम नमोऽप्याद्यात्तवा नमोऽप्यलक्ष्मीपति
 कनिः सा हो देवां प्रम कनि च्छाति का मो म मां रा स त्तुतः सीता व गिरि कां वा का इत्यादि व स्रिं ठे क नीत्ता ना मो राव त्व श्री १५ व० क वे न का स० दे प्र क्ता ना म
 स्य रां तु ना ॥ ॥ रावः ॥ ॥ न
 कां व भूत स्मा दामः रा व इ व ता
 नैवो च ते ॥ ॥ रावः ॥ ॥ न
 तु न न चि च्छा वि च ना मि व ने
 व भूत स० प्र क्तः सु न न मा मः दि व० क म् च घा गत स्रव० ना म म का दा सो रा० क नो लोक रा० क ३५ ॥ व पा धि ना दा ता री ना० का तो न नु कु ले रा तो व० तुरो ज न मो
 क्ता ना मः रा व इ ती च ते ॥ वृ क्त १० ॥ ॥ स्का० ३५ ॥ दि व० प्रा चो न नु त म म रा व इ त्प दि स्रव तो न त त था व० के ति क थ ते ॥ सी म द्रा मा चा मे
 ॥

[illegible]

नमस्तस्मै श्रीगणेशाय नमः ॥ १ ॥
 नमस्तस्मै श्रीगणेशाय नमः ॥ २ ॥
 नमस्तस्मै श्रीगणेशाय नमः ॥ ३ ॥
 नमस्तस्मै श्रीगणेशाय नमः ॥ ४ ॥
 नमस्तस्मै श्रीगणेशाय नमः ॥ ५ ॥
 नमस्तस्मै श्रीगणेशाय नमः ॥ ६ ॥
 नमस्तस्मै श्रीगणेशाय नमः ॥ ७ ॥
 नमस्तस्मै श्रीगणेशाय नमः ॥ ८ ॥
 नमस्तस्मै श्रीगणेशाय नमः ॥ ९ ॥
 नमस्तस्मै श्रीगणेशाय नमः ॥ १० ॥

၈၃၄

रुत

१५/१२/१९८५

२७३७७७७७

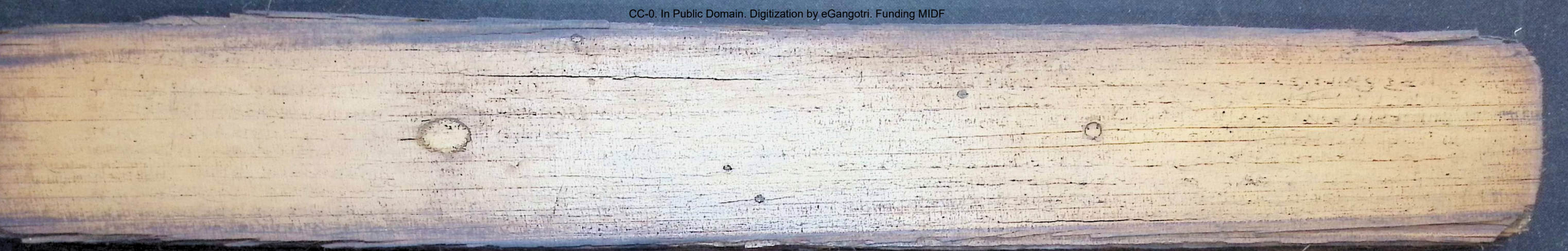
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

तपवतो यदि स्यात् प्राप्नुते वेत्ता नाना मतस्य च ॥ बुद्धेर्बुद्धयः शरीरेणैव विद्यमानं तत्रैव स्थितम् ।
 गोलात् तत्रैव स्थितम् ॥ अथानन्तरं यथा तदर्थं ॥ अथानन्तरं यथा तदर्थं ॥

[illegible]

राधा श्री गुरुभ्यो नमः
 साय नैला नमः अथ वाचि सागा अथा पुता का तो ना
 सस्य अथ अविश ॥ कौसला नमः तत्त्वतः ता सा मोर सवया लला
 आनकी स्यादितो ना मरुदागा अथ मोरुते ८ का कृष्ण
 आनकी तता वाली मई तका नगा लुगी वपुगा ना
 कुरु मदागा ० अथि

श्री १०



[illegible]

[illegible]

ता

तं स माता प म सोत वेतु पा प म मा मा ता कि तं कि मा रानं प्र का य तो शाना वं थ वि भु को के व ल्प न त ते न न थ सं गः स वा तु ना त ना नः स न ल कृ न रा क्त त नि
 स तिः स रु क त व स न तः स ग स ते व क न म रू पा त क रु को वा रु को वा रु प पा त के थ स स ग मा ह व ते पु तः पा प नि रू ति का न मा त रू ति रू ति पु न मा रू ति
 स उ नु स न त त प ना थ प न लो क वि वा न रू धाः ते स न तः प नि की ति ता भ नि म पिः स न ना नाः थ मि विः स त्प वा नि न भ त त को मा त वा ता थि स न तः
 स प नि की ति ता भ नि न नि व ग नि ईः इ वी त ना गाः क पा न व १ स्त्री ७ स्त्री गे व ना स स स न त स प नि की ति ता भ नि व ति थ म नि न ता वि भु त
 कृ प क ते डि आ भ नि च सु ति स मा इ काः स्रे स न तः प नि की ति ता थ प व ग पा य ताः स न तः प ना धे क प्र यो क ना भ ते स्रे स न तः स न का यो
 म नु जे के न ते ती रू ति थ प व वा ल्मी कि स गे स न म बो थ म रू त्प ना न स ग सु वा ना भ त कृ म न य स्रु त म नु वं नु १ भ ॥ प रू ति रू ति ना
 ना नु पु ना मा ग मा नि नि न ना भ त व स न व रु त ते रू ति म त न म रु स प नि व न का वा र्थ रू ति म ह व थ प्र का रा न रू ति न रू ति पु क पा र रि न रू ति म
 म व रु ना न रू ति न रू ति रू ति वि न वि ते त व स न व रु ना मा यो वा ल का डे ना ना भ नि स मा ग म स स ग म म दि मा नु व नि म प्र य मः स न भ ॥ प रू ति रू ति

परिक्वापरिक्वाकधवित्तपुत्रानताः सर्ववि
तत्त्ववागबुद्धस्वकुस्वस्ववाधानसातथाप
परमन्नामनामेतकीतयन्नामानदेवि
मन्नामनामेतकीतयन्नामानदेवि
मन्नामनामेतकीतयन्नामानदेवि

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ रात्रौ नृपुण्ड्रं नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ रात्रौ नृपुण्ड्रं नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ रात्रौ नृपुण्ड्रं नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ रात्रौ नृपुण्ड्रं नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ रात्रौ नृपुण्ड्रं नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ रात्रौ नृपुण्ड्रं नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ रात्रौ नृपुण्ड्रं नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ रात्रौ नृपुण्ड्रं नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ रात्रौ नृपुण्ड्रं नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ रात्रौ नृपुण्ड्रं नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ रात्रौ नृपुण्ड्रं नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ रात्रौ नृपुण्ड्रं नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ रात्रौ नृपुण्ड्रं नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ रात्रौ नृपुण्ड्रं नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ रात्रौ नृपुण्ड्रं नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ रात्रौ नृपुण्ड्रं नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ रात्रौ नृपुण्ड्रं नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ रात्रौ नृपुण्ड्रं नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ रात्रौ नृपुण्ड्रं नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ रात्रौ नृपुण्ड्रं नमः ॥

[illegible]

वृत्तिता कुत्रेन स्यात्तु तत्र तानां चित्तैः प्रतीयमानैः पुनः स्यात्तु यानां न वेद वेदं भवेत्तु गत्वा त्वं नाम स्थानं भ्रं विरु प्रमिती न यास्वोति वा अतिनाम वा वि
ता इदं न धृष्टवानो पे न पीयं देवानां कार्यं तस्मात्तिना राना इति स्यं विरु दे वां स्तान् बुद्ध्या स्वतन्त्रं च यौ ॥ १० ॥ भ्रं इत्युक्त्वा नाना विना सा
यन्म क सी म मे नाम न म मे ति ना मे
तं नीलोत्पल इन्द्रा म म कौस्तुभ
न्या रिष स द्वा पु ने तं परा म म
तां कुल व व मा दिति ना यं ना नि त म मे
तीर्था व ना त ना य सरी छि क स का
न नाम रि न सा त म सी त या ल द्वा त कि मा न् ॥ ११ ॥ वा व ना न १० नाम धृ प्री त्मा पु न म या स त धृ स सा मि मां हु नि रे व उ ल त त व इ र नि न त ना वि वि ष या स क
वे त सां नि त नां हु ने म त स स र नि ना वे व क ता धो रि ष हु नी स री किं का न च ॥ १२ ॥ बु द्धि त क न व मि तो ॥ अ च तं ना न को या क वा न व त क व इ ल

२५

[illegible]

[illegible]

वेन पुनः यथोक्तं कुरुक्षेत्रे नारायणः स्वीतया लक्ष्मणेन वारुणो पवित्रः सीतामः सुभद्रां मित्रं वीरु। सा केतनगवंगकनाकाः स भवितः। तावत्पुनः
 रत्नासुततः सुः स रामनं कुरुक्षेत्रेति नामकवः सुतासुतः रोकस्य माकुलभपरवाङ्मयं नानाकोशस्थविदेयातुः ॥ १५ ॥ सुभद्रां तन्मा मयलववत
 सेनास्य सा योऽभ्यासगनीममामि योऽभ्यासुन्मासे वारसी ह्यवपामि यतामपि। नाक्यतामनिय कोपितः नतोने कृतिसिचनतवत कायगमाप्ये
 क्षितनतः कैकयी सुतभक्तमेवमा तापितो न सक्तः सवस्त्रमेव दिवि सन्निभौ तत्त्ववगः पुनमा नं ५ मेत्पलन सन कादि मुनीनां वु
 लतितवदरनिभसु उन्मानस्यं प तिस्रदरनिभसितत ॥ १५ ॥ मरुताकावदरनिं ता क्वा यो न्यतक मसिमावनेतु प्राप्तां निक्षेपमुत्सृज्य स
 पावनमामनेतु। सा केतनगवंगं पुनो ह्ययेन पुनं दनातव स्यं दरनिं ता क्वा नेतव को ह्यमनोद न ता क्वा वहालेतिष्ठं तं तत् पुन गतेव
 विातकृततजस्थितस्थित्यां त्वं स नभां द्यतु मर्दसिचिदयं नो पवने मा बुधां स्येदा विद्वज्जतस्मि भानितिततावदाक्यं त्वं कं तु मरुसि।
 सिवम् ॥ १५ ॥ दं वृवा मां तं सुतं पाद विनयातु नं। तं कृतं त्वं वैविकोः सां त्वयं नानाको वीरु। १५ ॥ सीताममामि। १५ ॥ सुतसुतमजावये वृथादे
 नोनकिं तवादेरुथोगवियोगाभावावसुभावे स्यराखताधस्यो मे स्य विरयो मे दैवमेव व। यः प्राप्तां नति स्य स्य तया सीतयेव पत

[illegible]

अथोपायाः
 या अरि नव नयेत्पुत्रिता मयि। पञ्च नव प्रकाश पिकशा त्रि विष्टे क्लिष्टा त्रिविधा गुणानि सा। पिका त्वकी सुत रा कसी ता मसी वे तिता तयः प्रत्ये
 कं त्रिविधाः स्मृतं तमः मम मत्र क्लिष्टः सा त्वकी ते धातु मो च कान को च ता। स त्व स त्वे ति सु तो क्ला स्ता सा० ल स क्लिष्टे १ य त्रि क्लिष्ट सा त्व की ते धातु म० विव
 स्मृति सा त्वि कैः सर्व सा धनैश्च
 कते त क्ला सा तु ना क स सा
 त्वि की। ना क स पितृ धातु क्लिष्टः
 कुर्वन् का म्य म पि क्लिष्टः
 हो। न० तलो ना रि स क्लिष्टः स तु ना क स ना क स म अ धि वा ति ला रा घ० त त व वा दि यो ग त ध ये म म पा रा ते त क्ला स्ते तु ता मी रा ना क स ध
 ता म स पितृ धातु म त्रि क्लिष्टः स० स ला त्व ना १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २०० २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ५०१ ५०२ ५०३ ५०४ ५०५ ५०६ ५०७ ५०८ ५०९ ५१० ५११ ५१२ ५१३ ५१४ ५१५ ५१६ ५१७ ५१८ ५१९ ५२० ५२१ ५२२ ५२३ ५२४ ५२५ ५२६ ५२७ ५२८ ५२९ ५३० ५३१ ५३२ ५३३ ५३४ ५३५ ५३६ ५३७ ५३८ ५३९ ५४० ५४१ ५४२ ५४३ ५४४ ५४५ ५४६ ५४७ ५४८ ५४९ ५५० ५५१ ५५२ ५५३ ५५४ ५५५ ५५६ ५५७ ५५८ ५५९ ५६०

अथोथा

कतिपयतपमानः स यान् स तु ना क स रे ता झ स भ ॥ १ ॥ अथोत्कृष्टमान प्रकाशं प्राप्तं ततो मयि। किंचित्स्मृतत्वा प्रोक्ता च लाला तिकता मरुत
प्रोत्पत्तिविधिना तत्कमान् दे दे वि अरो ज क भ त क न्मा प न ना रा र्थं प्रोक्ते स्ता झ स त। झ सः ॥ १ ॥ वं म ह किं ते दे पु र्ग म मि स वि शि अ र ते। त वा वि
सा तु की त कि स्त र्मा ॥ सा त्वि
सा वृत्ते कं वि दि ता ना ॥ य कं ते
सा त्वि की ॥ सा त्वि को ना झ कं ॥ ॥
ते न सा त्वि की य र्ग नी कि य ते रा
त वि ॥ तो ग स या तु ना क सै भ
न ॥ झ न सा र्ग ग ते त व ति सा न घे। तो झ ॥ त तः सा त्वि का झ ॥ रु ॥ अ र्धं ॥ झ न सः स रा। झ नः ॥ रु ॥ यं ॥ य रा का तं वै ना य ॥ का य ते त रा कि द्वा क ये न स वी ति

अथोथा

सामान्यो
मयोथा

पुष्पिकाणि कृता नमलन ततो देवा तिष्ठानो सौदानैः सन्ध्यातिता नवण देवातिष्ठाना न्ना विद्या वि अते न्ना विकर नितीने वव० थो की वाना० त० नारो जो कुरु अते। स्वना
तिष्ठानो विविधः सामान्य स्वविशेष कश्चिदेवा तिष्ठानो विरोच सुकुलादिषु जादौ देवा तू न्नि स्या ततो का त्पा स्व मात मश गोत सुता त्म स० न० प्र मुरा वि
त मा स्रत म २५ त त क्का त्पा दि के दा त न तिष्ठाना न्ना न त म वि दित० प्रतिषेधं वि विथ ते रा स्र म प्रल न वि दित र्प प वि त्पा गा गो प स्र वि क तौ ग म म
विषेध क न मी रो व स्र त्पा गा उ म स० त व म प व० ग म रो बा त्पा० ७० म प पा पा दि स० त व म ता त्पा० त स्र ग न न को वि त० क म त तो थु व० य न क न्ना त
रा म त्पा य रा म त्पा स्र ग न्नि म क न बा म० थ० यः प स्र वि ना शान० न त क्का ति म प० व तु ते नी र व ने मा त त क म नि सा न त म स्त्री ७० ते रा दि प्र का नाः
स्र पा दे वा स्र स व ते म २५ म प व० स म्ने ष स वे ष रा नी ने ष कु ला स मा म गो त सु त सि सारा सा ना मा आ स्र त ये व व। मा ता ७ ती सु वा का या स्र स
वा मा व थु त नो। पित पु त स्र रु तौ त ता व का या स्र ७० त नो। पिते स वे पे तो म थो प्रा सा स्मा त्प क लि ता म त त प वा अ० त व० त स्मा दे स्र व० थु व म जा त्पा र म मा रो
स्त्री ७० सो वि नि व लि० ग० स्व व म्ने र। कि० तु स० के त वे षा धै त ती व न तु त ल ये। या व या व ३५० ता व ३५० थि क्का त्पा र म मा दि ष। ता व ता व कि या व थि क लि ते रा स्र स०
र

वचे ॥ १॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कतिचित्तावतावक्त्रिणा कतिश्च कतिश्च वासुदेवाय नमो स्थापित्वा च स्वतन्त्रं यश्च स्वतन्त्रं तिष्ठाने स्वतन्त्रं निरुद्धं तिष्ठाने
 व ॥ १॥ कतिचित्तावतावक्त्रिणा कतिश्च कतिश्च वासुदेवाय नमो स्थापित्वा च स्वतन्त्रं यश्च स्वतन्त्रं तिष्ठाने स्वतन्त्रं निरुद्धं तिष्ठाने
 परिलभ्यमानं तद्वाच्यं तावत्तु विद्वां
 ॥ १॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कतिचित्तावतावक्त्रिणा कतिश्च कतिश्च वासुदेवाय नमो स्थापित्वा च स्वतन्त्रं यश्च स्वतन्त्रं तिष्ठाने स्वतन्त्रं निरुद्धं तिष्ठाने
 उपायं नाना ॥ १॥ कतिचित्तावतावक्त्रिणा कतिश्च कतिश्च वासुदेवाय नमो स्थापित्वा च स्वतन्त्रं यश्च स्वतन्त्रं तिष्ठाने स्वतन्त्रं निरुद्धं तिष्ठाने
 नीलो धनं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १॥ कतिचित्तावतावक्त्रिणा कतिश्च कतिश्च वासुदेवाय नमो स्थापित्वा च स्वतन्त्रं यश्च स्वतन्त्रं तिष्ठाने स्वतन्त्रं निरुद्धं तिष्ठाने
 तावत्तु विद्वां ॥ १॥ कतिचित्तावतावक्त्रिणा कतिश्च कतिश्च वासुदेवाय नमो स्थापित्वा च स्वतन्त्रं यश्च स्वतन्त्रं तिष्ठाने स्वतन्त्रं निरुद्धं तिष्ठाने
 नतैः ॥ १॥ कतिचित्तावतावक्त्रिणा कतिश्च कतिश्च वासुदेवाय नमो स्थापित्वा च स्वतन्त्रं यश्च स्वतन्त्रं तिष्ठाने स्वतन्त्रं निरुद्धं तिष्ठाने

[illegible]

28

[illegible]

मि

मनोवोवानीव क म क तु। कि नात हे ॥ १० ॥ ठा लाः ये वा न्ने पा प दो न च ध ग वा रा नो म प्र पो वा रा व वि नि नि ३ क थ ते स वे र चि मा या ति स त ० स त ० म यो वि न न
स व रा स व ते त प्र स सु त क्वा वा ति म स वा ॥ १० ॥ म क म न ते त प्र स रे म्मो नी वो ति त कि मा नू। दे या ति मा नि ना ० का ति स्वा र स मा वा न मा नि ना ० क म का म न ता ना ० व म
म चि ते कि सु उ ल ता ॥ १० ॥ म म वा ग व
ता कि ॥ प्र का य तो त क्वा ह वा त ० न
का म नि ना ति प स व ना न ० ता नि प
न म ला त ना रा स मा त क्वा म चि नी
मा म त म त क्वा तो ग स र क्वा म स र वा वा तो ग ल ० प ह्म अ दे क रा ना तो च स्या ह्म मे वि प्र त म्मो म त म स र व स ० ग वि नि म्मो क्ति त को थो क्ति ते ० अ य म्म क्ति ता नि व
ग म म क्वा स्ते मे वि प्र त मा म ता ० प ० ग वे १ वि वा न्ना अ न क्वा म नि तो पि वा। म चि त कि वि नी नो यः स स उ ३ः स त ० क्वा स थ य घ ना मे न चि ते ० न ० न ते ० य यो ० य ॥

का ० ३

[illegible]

का० ३

सामान्यवेगमागतो। जसो हवो मना नालीति। तत्र द्वा द्वे इति स्यात्तिलोके पुत्रवनिष्ठाति। तामांतेन यथाशासनं न तुल्यं तद्विष्ठाति।
मलोभ्या इति सताप्यते नो नमः सुविवाहनि सानिधेयौ। तत्र द्वा द्वे इति स्यात्तिलोके पुत्रवनिष्ठाति। तामांतेन यथाशासनं न तुल्यं तद्विष्ठाति।
कुलविंवालीके यतिवारसमम
उत्सं प्रविप्रवोतु ॥ ५५॥ इति
आयभा ॥ ५५॥ पक्षीनामनं वा
नं द्वा द्वे इति सताप्यते नो नमः सुविवाहनि सानिधेयौ। तत्र द्वा द्वे इति स्यात्तिलोके पुत्रवनिष्ठाति। तामांतेन यथाशासनं न तुल्यं तद्विष्ठाति।
तनामः कृतार्थे किमापापिन
तिः स्यानीतामधेनते। रगिनेन प्रताप्यारो न मातीने वा वस्थि तमवच्छीनं स्यानीय गृहे नरपु न नमः कृतार्थे किमापापिन

सुखादिभिः शुभं तद्वृत्तिना ज्ञानं रोक्तेन तन्मत्कृतो। सा के तादृषि कं सौ स्य विपिने वि तवि चरति। मातु र्मे वं नं बुद्धि रो कं तत्तु गतकते।
 माखास्य यतु सा ज्ञानं वदति रो क पमिषु तन इति सन्नि रा प्र मा ध्या मोल क्त्वा पो रा पति स्व य न ग ये ना नी त ध्या ना व क्तो दू वी म त न क्त ता न या व द्वा गां स मृ ती य कां ठ
 गतास्तावदसंस्थिततततोऽः से न म ता पु न ने वो द्वा मा ग त ध इति सु त व न व सु त्वा उ सो रान के न प न को स ल्प्रा पि व उः सा ता प ल तु मृ प न क्त्वा मे।
 गन्धकौ सल्ल्या।। प ग क्त ना क्त ग ति दी रो म द्वा दा द्वा नु च रि व न मा वि रा ते नु न ग स त्वा यः स य ल क्त्वा म भ व ने त द्वा उ सा से ना के के
 नु म ते त्वया। त्वा क्त्वा ना व न वा सा य क्त व व स्या त वि प्र ति क द्वा इ म्मे न व क्त्वा प्त्वा व न प्त्वा नु न ना ग ते रो न वि प्र ति प्र ती रु सा स मृ
 इ इ व प व ति। म च यं दि मां दी प य ते स मृ धि ते त नु न रो क प्र त वे। रु ता रा न ध म क्त्वा मि मां न रि म ति उ य त प्र तो य धा नि त प्त्वा त
 गवान्निवाकं मं। प रि व द्वा वि न प ती त धा ता त कौ स ल्ल्या प्त्वा नो त्वा न इ व म्मे स्थि ता य म्मे सु मि ता वा क्त मृ बु दी तु। ग म्मे सु मि ता।। प त वा य
 स नु मे च क्तः प तः स प्त्वा वो त म्मा किं तो व ल क्त्वा इ व म्मे उ दि ते न वा। रि शे ना व ल ते स म्मे क्त्वा स ते त्वा पी लो रे चो। ना मो य मे स्थि त रो म्मे

नरोऽयः कः न वेनावतति नोत्तमां वृत्तिं लक्ष्मिः
 ति प्रपुत्रपुत्रसितप्रवतपुत्रकिं न प्राप्तस्त्वात्मनः
 पुत्रपुत्रः सवेजुकाले पुत्रान
 कन्या न विभक्तिः सः सः सः सः
 मप्रस्यो वेरहनीव निव ह्यप्रति
 पृथिवीतस्य रासने स्यात्
 सुचि स्यात्तवेतु येन नृः प्रतोः प्रपुत्रसितप्रवतपुत्र
 कीर्तिः कीर्तिः कीर्तिः कीर्तिः कीर्तिः कीर्तिः कीर्तिः

[illegible]

[illegible]

[illegible]

लोचनमावतश्वतरं राक्षसास्तत्रुत्तुन ध्वजं विजये
 सीतापानुगता राक्षसातिवृत्तं सुपास्यती।
 वववनं सीमानुतरतः
 यं राक्षसं विधेयं
 यं कृत्वा दरीनीयतमः सी
 कृतान्तिमुवितादि कुल
 सुखं यावत्तथा नाभेवनं मतेदीने सीतया लक्ष्मणेन वा नाभं नाभविद्योगेन कामं स्यात्तु
 मानं न सुकलाक राक्षसं विवासात्मानं सुखं तिष्ठस्व उभते।
 तत्तानां कथं बुद्धिस्तु वेद्यं पापं विनिर्णीतं

तत्तपसो राक्षसाभ्यां तवैव दिनामं संप्रपञ्चा सा राक्षस वनमेव पतातवा
 गंधर्वराक्षसमनुयातो जिलक्ष्मा इति ब्रुवन्ती मानोक्य जातरं प्रदंति दातुवा
 कैकयीं तदा ७ अतिरतथा ॥ अकातरातुः सीराभः परमात्मा सनातन भवसी विलोचवता सो
 व्यापकः सवलोके राः सवेषां रुच्यस्थितभूतया मीसवसोती केवलः स्थितुप
 मानुनि गदानु गदानु भक्षसामो भक्षिततां रेणो भ मन्नेषो भक्षिततां नेन सदा
 सनभू कुल भक्ष वि सां यतव वापि सदा त्वनभू म भानि प्राय मन्ना ये वा किं कृतं
 नो हाने। यद्येन सुनि गता

000

[illegible]

यो नु मते गतमपाने प्रलकोतवतुस्त्रीषु ते पुनरे
 गो। किल गोलेन यत्ताप० तत्ताप० प्रतिपद्ये
 उषके पाप० तथैव विषयके। बालवद्वैतगो० नु निस्त्रायो नु मते गतम तस्मात्तपयेः कृषैरापमानमवेतन० तनत० रोकसा० त
 त० कौसल्यवाक्यमनुवीतु। । कौसल्य॥ मरापयेः रापमानो नि प्रापानपुत्रमाहि मे। वहस्यत्य प्रतिशो लिखता० तो
 कानवा स्त्रालि॥ भ्रमः शो स्त्रवेता स्त्रितव स स्वविरोधतमम त क्विवता० रोजसूवा ल० मातनि० रा। के के यमा नापना
 थो स्त्रि भ्रमता ग० जिता इरागस्त्रकत० स्त्रे न तो कृवा० न य नो स्त्रान्न कर्मणि भ्र० वम क्वा तुतनत० कौसल्य तव परिनी॥
 रामय० तीसुत० ३ः सा तु श्रीमास गिनी० इ नो॥ भ० इती श्री त्व स० य दना मा यतो मयो भ्रा का० डे इरा न घ स्त्र स्व गा सो दमा तनता ग
 भनतकत रा प घा डि क य न० ना भ्र प० च राः स गश्चि पसीना मा य भ्र० प श्री

[illegible]

[illegible]

मयोभा

१०७

१ वक्रकृतुपमत्तुमासु मन्त्रवा कम्भववी तु (याता मासापयति प्र० बल० वैवसा मा नया ॥ १ वक्रकृः सु मन्त्रं तस्मिन् तत्र तेन मन्त्रात्मना प्रदिष्टः सोऽहिरासर्वं च छासं हि मन्त्र
 वतु। ततो योभा गनाः लवाः ततु नु स वनि गदे गदे। तता गमन मास्थाय तत्र यन्ति स्थ द पि तो भ १० च त तः लमुष्टि तः काल मास्थाय स्या० नो त म न प्र ये यौ त
 न तः सी प्र० नाम ३ र निका० मया। ३ राल रु व ना खा स्म रा त ल रु थ नु र्ना भ रा त सा रु स्म ना स्म ता व० त र्व म मा न धा भ ब्रा ह्मणा रु त्रिया वै रायाः सु वा र्वा ना
 स्य जा त य भ स्त्री बाल यु व द्वा स्य स वेति न त मन्त्र य भ गा यन्तो ना प्य व गु णा नु भु ता पौ न स्त्रियः स्यात्। म० १० म० १० व० १ रा स्य म नु क म्भु न पा त्म क न
 स वै ने व० स मा यु क्रो त न तं सा० त वा रु न भ र गं गि वे न १३० प्रा प्य ग० मा ती वे व र्ज द रु स० १२ भा ग दे न पु क्तितः स्तु ते नाम वृत्ता० त मा दिते भ सु वा
 विष मा रु द यः स्व य म्भ य क नो क्त स ह्य त तः प्र ता ते त न तो ग० गा० ती व सि सौ नि क भ ग दे न स दिते सु मन्त न द्वा का स म० य यौ। त न द्वा का स म०
 ह्मा को रा दे व न न प ति भ व ल० स व भ व स्था प्य क गा मा स्य रु म० त्रि ति भ मा स मे भु नि मा सी न० क्व ल० त मि व पा व क न ह्मा न ना म त न तः सा द्वा० गु ष्ठ ति त कृ त भ
 मा ता रा रा न धि० प्री ता पु रु ष या मा स भो नि ना म्भु त० पू रु० ना क्ता न० १३ कृ रु राल० मु नि भ १० ५० ५० ने न धे क न प रे व ले को रो व स व त भ स व त क र

लं वा जा मुनये सज्जवे द चतु तत सुत न तं वा भत कृत्वा मुनिभ त क्वा र्वा ना प्र ध्या तु चो भू त ध्या त्मा र्वा ना वि तु भं इ ति नि स्थि त त न त ध्या ति ध्ये न न भ म त च
 त्वा भा ति ध्या कर्तु मिच्छा मिच्छा सौ न्य स्य त वा न न्य धि धि स्थि त्वा स सौ न्य स्व स्वो गे ख्या ता रा म स न्नि धि न त वा न्य स न्ना प य ति त धे ति त न तो व वी तु त न द्वा
 न स्व पः स्य स्य मो नी दो भ ग्दे स्थि तं न्नि धि का म उ न्ना का भ व वि गी का म नो मु नि भ ५ भ म न
 कि क न त न त स्य स सौ न्य स्य च धे स स भ नो र य न न नै व स्थि तु चि तो स्य न न्नि धि स त्तो न नै श
 वे १ प व मे क नि न त त द्वा वि त्वा स्व गे स्व स न्नि ते १ भ ति वा धा त्त न्ना त सि त कृ त्वा नि न्नि धि यो १ वि
 न्ना म स न्नि र नि का न्नी प्र च यो त न त स्व य न रा तु न्ने न स्र म् ते १ ग्दे नै व प र त प भ त प स्रि
 भ ० १ रा भा स भ म प र म नै उः स रो का ति पी ढि त भ व वि ० १ त वा म्भ म ति क्वा ति प्र रो दि ता न् ॥ १ त न त ॥
 भ जा व ल न वै दे की वा भ जा ता मा न भे रा न ति त वि ष ति यो वे नै व नै तो त्तुः फा धि व द्वा नै नो न्नि ते १ या व न्न व ३ स का रा न प भ प त ति ते

[illegible]

सुतितिस्रिनिता ॥ इत्थं तु तत्रैव सन्नाहता रात्रि विना तु वेतनं ननु नाधत्ता वने । आनंदाकारु सुपितस्तु नांतं न रात्रे न वा पा सन्नाहता निधि
 जनेधसत तस्मान्ननु नाधत्ता स्थितं ॥ कुर्वन्त्येवमालंभायते कमान्नाहत्ता किरीटं न वक्त्रे लां वनं ॥ प्रसन्नं वक्त्रं तत्रागात्तु मम सुतिनं दिवो ॥
 यन्तं न न कात्तु नांतं दास्यौ
 स्तुमा कृत्वा सुतीर्णनिद्रु गेतिमां
 नेदितुं निवेद्य तत्र तं पीठेन
 सारु नेता वतु दिने । को सलमा
 स्वं प्रविशेव सारु नेतानना स्थिता । ननु कल्पाम्नी मे घिली खरु न विपाख गता स्थिता । ननु गोमा तसे रक्षा तासां व केन न
 स्किं पाण सुमिता न ननु नां रक्षा सन्नाहता निग्न कसौ ॥ इति नायका र्थं उपविश्या द सवाने व ननु तस्मात्पिता मे कुलराली किं वा

मांकिमादातिउःस्त्रिनभदस्त्रिस्तुवावेरं पितातेनपुनंन।वद्विजो गति तत्तात्मा ना मेति लक्षण मान च। त कृत्वा कर्माणि कृत्वा तं नोर्व र व मं क र्मा
दाद तोस्त्रीति पति तो उ र्नामः सल क्तामधुव सिद्धिः सांख्य व नैः राम चामा सतां र विंताम ततो मं रा किनी गत्वा स्नात्वा ते वीत कल्पा वा म रा से र
उक्तलं तल स वे ते कल कां कि मो। पिंठां निद पिया मा स रामो लक्ष्म मा स च तक्ष ३० गी परल पिता मा क न चितानु राम भु तानु। वयं च रं नां
पित रत रं नाः सु ति वो दि ता भ श ति उः सा सु पु र्णा काः पु न स्ना त्वा य च ग र्ज न त तो क ल न्न मः स दि तैः समं वि तिः प न प्र भा नै र स र सै व सै नि
कै थ मने न भ म हि ष त मे न भ म वा नु पो प वि स्रो त न त स्त रा य क्क न नो प वि स्र स्तु त रा स वी र्य वा नु त प स्वि वे ज मा स मी क्त रा न्न व न स्त्रि या
कलं तं त र तः कृ तां क लि भ य या मने ३ः प्र य तः प्र का प ति न १००। कि मो ष वा क्त न त तो स रा न्न वं प म म्भे स कृ त्वा व स्ना भु व अ ति। र ती व त
स पा च क्क न स प त त्व रो व तु व को तु द मु त मं त रा। स रा न्न वः स त्र य ति स ल क्ष्म गो म्भे ज्ञा न ता वो त न त स थ मि क भ व ताः स र्ग र्ग वि ने क न भू रे
य या स र सैः स दि ताः स यो म्भ य ध। भ र ति स्त्री त त्व सं ग्द रा मा य मो म्भ यो भ्रा कां ३ त न त स प रा म्भ र नि क य नं ना म्भे स प र राः स ग्मि म्भ

[illegible]

अथोक्तं

१०४

सा जगाः स देवा जगति जातः पतय ॥ निवर्तते तजः सु यो तस्य मोक्षे न निवर्तते ॥ नि का र मे ति रु धे म नाला देः क म न क म न नि व र्त
 न्ना ग स्य नि क लालैः प्रवर्तते ॥ व धा नि का न थ मे षु क ं घ नालः प्रवर्तते ॥ पालनी ये त व द्वा षे का क धा म न स प व न न अ ता न स न धे दि त व रि च
 कि म ति स्थि ते ॥ श्री ग र म कु ग गो
 ति तो तु वि उ द्वा य प्र उ व न प वः
 काम का नो सि पु न वो प म ती
 स ॥ यो गा वि प्र यो गा ता म न
 स न ग्ना इ य नु १ ॥ य य गा न ३ ॥ रु स्य ॥ १ ॥ की म ति तु वा व र्ती र ति ति यै व र्ती ३ ॥ ति न रा क न म त्पु व रा ॥ स ता थ क म ते ति रु क नी या तु स सा न प्र ति नि व
 त ति ॥ यो त्मे व य मु ना पु ग्नी स मु र न व गा क न न मे दो ना ता मि ग क ॥ ति स र्वे वा ॥ प्रा मि ना मि दा म्ना य ॥ नि स प य त्प्रा ॥ श्री षे क ल मि दा ॥

वधमातामनमनरोवत्तं किमनमनमनरोवत्तं। मायस्वेदीयतेयस्य स्थितस्य वगतस्य व। सदैव मत्तु द्वेति सद्यस्तु निवीरति।
 गत्वाकुदीप्ये मन्त्रान् सद्यस्तु निवर्तते। १७ भगवतेषु वलचः पाप्माः खेतास्त्रैवसि सोऽन्ताश्च न रथा पुत्रबोद्धी। मन्त्रिकेन्द्रिकत्वा प्र
 तावयेतु। न० ३० त्पुति तन्मा
 नवमिन्ने गतं। न तु ना० प
 तमेतावत्तपेताया० कालमा
 नातकस्त्रिययाता व० प्राप्ति
 तं बुधा कस्त्रियता घि स्थि
 तम्। प० नः कृद्य० सोऽवे मन्त्रिना स्थि काति क म्। वयस्यः पतमानस्य सोऽतको वा निवर्तनमन्त्रात्तु ले निचो क्ते वाः सु सताः।

[illegible]

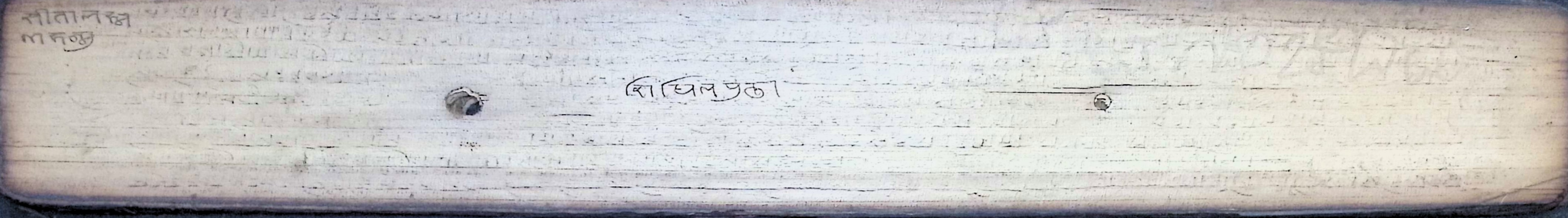
[illegible]

no 3

[illegible]

का० ३

म० प्रवृत्ति भुवन म० चित्त किं म० कृत्वे वर्यो म० किं म० ति वा० कृति० । अलो के व० द्वि० म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म०
 को न० भ० म० न० व० त० त० स० ने० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म०
 चित्त किं म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म०
 नी० बो० पि० म० चित्त किं म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म०
 उ० का० त० को० म० त० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म०
 चित्त किं म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म०
 आ० न० त० या० स० म० म० त० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म०
 म० चित्त किं म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म०
 म० ना० त० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म० कृत्वे वर्यो म०



गीतान्त
मन्त्र

विश्वलुप्त

[illegible]

मयोभा

पुन्यतमं कर्म तु पुनः स मा विप्रकृता सुप्रभातं जौ । वाचं च ज्ञाप्य वक्त्रा वधिना स्थित स्वयं मे नि । अवा निवा नतमं ममा रं शातना वापम
जीतकं तु जौ ३ः सनना मं वचितुं निरो कुम सत्वे व मातु रति न वा म स की उ नु कु ही स्वां प्र वि वे वा ना म म री म जा ने वधु । तत त भ्रान सि
कृत्वा तु पा उ के तन त स्त रा म
येतै तन वा मा स मं य यौ । त
तो मातु रं मा र्वा र्प स न
धनं नि गा मे व स त रा तन
पा उ के त र्थी न स ग म् कान या मा स स व द्वा य रा यि य का य म वे ति किं वि ते रु पा य नं वो प रू तं म दा र्प स पा उ का त्मा प्र य
मं नि वे य न का न प रा न त ते य वा व तु । प इ ति सी त त र नं य न ता मा यो म यो भा कां डे तन त र्प पा उ का प्र ता न वा म त कि र्वा य न क य

कां ३

[illegible]

मंगल
मयो ध्या

पुसनासैः पुनितो नम्र वस्त्र सुशोभत नवा मेनका धिताः कथाः सुखा सुखान्विताः । प्रवचनं प्रतु मोक्षे ताम्रप्रने कानि सन्ति सुतस्य दस्य राशः कारति
तोपिलवतः किं हं घमपि का
साधुपुत्रं मनाता गाः प्रहोचं
उनातु । उक्त्वा रामतापि व्यात
नः सते पावताः सदातिष्ठति । त
सगतिविरावेतो वं वरं तः शि
कघमेतः प्रगल्भा मिश्रु किं तपि उः सितः १ भातते वासुनामोः सार्धं नृचिजि स्वसुनारु वै ध्रुव वसति तुलोकं
रोहिणीसै व सन्तमेता कनेति यण वरु सन्ता वयो मा स य धितं तं म वरु त्वा तितः म प्रो धितं ग वानी ख न स्व न तुलु स न कुराल न तुलु वरु स

का ३१

विना पक्षमिहा गतध्वनी मराग मने नाच० कौशल लोकपुरुषोऽस्ति स्यात्प्रत्यक्षमात्रा भेदमा० मुक्तिं प्रायश्चित्तं तेन मुक्तवशके नोपायेन तेषां तत्फलं वा ज्ञानमिति का
 नकोथा तद्वाहीरने मैवमुक्कञ्जनुतावेदि गो ववध्वन्मा॥ अस्तु पायो मोपनीयः प्राजाद्यैर्भोज्यत मथत पङ्कवाधि राचास० त० प० लब्धवान् मनु
 ततो नो मरति सा तो नासा पायो म
 से। स्वतेनातिष्ठतो दधौ कृत ता
 तीने गंगायां लोला के सुखपिव
 तां तस्मात्मानो जावना विनिम्ब
 प० वृषत ध्वज इत सुलो ब्रवीदितु
 उच्चैर्वीर्यं देका तवन० प० न नातः प० न त० कि० वित्पाघित० झमवि चते। ॥ १५ ॥ प० व० क० तित तैव तगा नी० तउ पा स का भल स वे मो ति म चा भूत० तो वि हो वेवल०
 पु० गताध्वततः प्रोवावरा म० सु० पु० निष्० य० द० स्ति० तो० त० द्वदी खन त र्गा स्ते प्रा घना उलति० व० यत्। इत्तु कुः स पुन व डे दित क० ह० व० हाल थ स वली को प का रा य स
 मे मा म पि उलति० ये स्वतो वान्न तो वा पि यत रु ता पि वा प्रो। प्रा० भा० नि० प० नित्य क० त० स्तुति० हि० सेवा० परल० त० वेत्। ग० गा० या० वा त हे० के० वा पि यत रु न रा० पु० न०

[illegible]

सिखिलोत्पत्ति

[illegible]

इतमकचनइतिइत्वाव न० तेवा० सभ्यन ७०० कयभवावस्था मकरोडाम ३ तयलापिनिमलधतयाप्रततिनाम सगयाया० सायकलनधपितूनरुचलो कस्थानु क०
 तिपुत्रोत्तमधस्यपितृगाम्भुसु
 सीसाम ॥ मसवेकलिपुगेम
 तस्माद्युभक्तनीरमायनास्तेवनम
 कसायावन्नगुल्यतेकि० विच
 तभजासम्प्रधादिकुल्लास्त्रदिव
 पुनलिकालिनधतनडाजोपिनामेगावरुमानाविवर्तितधमन्नगकृतपजागास्त्रे० स्वासम० मेनिनिःसज।सामसुसीतयासाथलिकामोनअवीयसा
 नगामविदकहादि० वाल्मीकेयतुवास्त्रमभा॥ भ॥ इतिजीतवस० गुरुनामायतोमयोप्याका० हेराभगयादिप्रस० साकथन० नासापकेविराः समध
 सीसामव० वायनमभा मसीमविवाभा पातविमलेवसमयेनातसाविकृताननाभव० म० तः पावक कालापानुपासनाबलाधतयः पापसमा

5

[illegible]

nrxb

[illegible]

मजा
साउके
शोक
१२२२

no2

[illegible]

कन० ३।

प्रिता सर्वतो गावो पशुता उलता ये वे वेदिना पशुता खलु रिमः खलु वे वेतो गस्तमान्विताः मन्त्रा कृतं मिदं ते अ पा पिना पाप कर्मणि विष्णुम
कृतं सप्त पाप सप्त ता गन्त्री कृतं ता मि नि इत्युक्ता वान पनी तु प्रत्युक्ता व पति तता पवोन पनी ॥ अदया के म कृताना प पुता ता कातिना म म वत
ध्वं कृतं पापं तस्य तं काना
सप्त पाप ता गवते गु उध रि क्त
लस्य स्यो रा ता गवते पति म
गां ना स्य पि का नि ता गद ना ये
मे पि ना ॥ अदि वध ॥ पव वं पनी
नि वि प्र कृ ता रा ता नि वा रा ना पा ना नि पा ना नि स्वा ता स्ते पा न जे रु रा ॥ ५ ॥ अ प पा पा नि स्य ता मि कृ ता नि त व ता कृ ता आ नि या नि व पा पा नि स्य ता मि
व नि ता नि मो ग म्प ते पा स्यो त मे ग मि प्र ते क ल वि व ध म कृ तं सप्त पाप स्य ग म्प ना नै व वि च ते ता इ सप्त पाप स्य ता ग ता ग व प्र कृ ता त तो ल

[illegible]

विवर्णितोऽपि निरुक्ततागलाः ॥ १ ॥ अस्मापन्नाते वै निरुक्ततागलाः ॥ २ ॥ अस्मापन्नाते वै निरुक्ततागलाः ॥ ३ ॥
 तिरुत्तुत्ताते वै तावत्तुत्तागलाः ॥ ४ ॥ अस्मापन्नाते वै निरुक्ततागलाः ॥ ५ ॥ अस्मापन्नाते वै निरुक्ततागलाः ॥ ६ ॥
 कश्चिन्नाति कश्चिन्नाति ॥ ७ ॥ अस्मापन्नाते वै निरुक्ततागलाः ॥ ८ ॥ अस्मापन्नाते वै निरुक्ततागलाः ॥ ९ ॥
 मागताः ॥ १० ॥ अस्मापन्नाते वै निरुक्ततागलाः ॥ ११ ॥ अस्मापन्नाते वै निरुक्ततागलाः ॥ १२ ॥
 मत्तयो विरुक्ततागलाः ॥ १३ ॥ अस्मापन्नाते वै निरुक्ततागलाः ॥ १४ ॥ अस्मापन्नाते वै निरुक्ततागलाः ॥ १५ ॥
 कश्चिन्नाति कश्चिन्नाति ॥ १६ ॥ अस्मापन्नाते वै निरुक्ततागलाः ॥ १७ ॥ अस्मापन्नाते वै निरुक्ततागलाः ॥ १८ ॥
 मत्तयो विरुक्ततागलाः ॥ १९ ॥ अस्मापन्नाते वै निरुक्ततागलाः ॥ २० ॥ अस्मापन्नाते वै निरुक्ततागलाः ॥ २१ ॥
 कश्चिन्नाति कश्चिन्नाति ॥ २२ ॥ अस्मापन्नाते वै निरुक्ततागलाः ॥ २३ ॥ अस्मापन्नाते वै निरुक्ततागलाः ॥ २४ ॥
 मत्तयो विरुक्ततागलाः ॥ २५ ॥ अस्मापन्नाते वै निरुक्ततागलाः ॥ २६ ॥ अस्मापन्नाते वै निरुक्ततागलाः ॥ २७ ॥
 कश्चिन्नाति कश्चिन्नाति ॥ २८ ॥ अस्मापन्नाते वै निरुक्ततागलाः ॥ २९ ॥ अस्मापन्नाते वै निरुक्ततागलाः ॥ ३० ॥

[illegible]

796

[illegible]

अथोपा

वगेरतं त्रितय विमना इव विवागां कृत्वा तिकं प्रयत्नौ सलः हस्ता तां स्त्रा पक्षां स्त्रा तस्त्रां गं प्रणि पक्षे वा रु ह्या प्र प्र प्र ता तु ता प्रा नाल वा क्ता म च व ता
 सोरुध इतो गता मया पक्षा ताया जेता सबां थवा थ क्ता मा त तात उ दित स्व स ता त का का र य थ प्र त्पु र स्त्रे छ नि स्त्रे वा न व थ प्र प ता गिन वा त क्ति त स्त्रा वि
 तस्त्रा व थ प्र त्पु र ल ता गिन थ प्र त्पु र
 ता ती तो र्त्तं वित थो र्त्ता न थ प्र त्पु र
 ति म द्धितं उ ज ता व वि व र्त्ति त न र्त्त
 क्क न र्त्त क्क न र्त्त ग ३ क्क र्त्त पि
 र्त्त न थ क्ता पित र्त्त र्त्त नि स्त्रा र्त्त
 म स्त्रि र्त्त र्त्त ग क्ता र्त्ता न त स्त्रा र्त्त र्त्त ग म म ३ प्र ता मो ल क्ता मे नी व र्त्त र्त्त ना प्र ता मे व थि र्त्त व र्त्त क्ता र्त्ता क्ता र्त्ता क्ता र्त्ता
 पा पा नां ता न का पु नि प्र ग वा थ त्ता क्ता र्त्ता R

मनोधा

१५१

नृतिरुपः इव नृमो पतिरुपः पुनः पुनः बोरो वस्तिरुपः इव नृमो पतिरुपः पुनः पुनः
 विरोधतश्च निरुपः कर्तुः कर्तुः पुनः पुनः तत्तु मतिरुपः पदेरास्य पादतः
 नीतः शुभात्मा स्यात्वा नास्ति कः
 कर्मात्मा उच्चा उच्चा नील कवती क
 दोषकः स्यात् पतलोक दिते शुभा
 छाया नो हस्त तस्मिन्नेते गतो म्मा
 रा मेलमेव शान्त रुपा पतेरुपति
 तस्मिन्नेते स्यात् पतलोक म्मा कत विद्यागमाना
 वनगच्छ नोप्योनेत जानके विद्याः प्राप्तात्मा विवर्जिते तवता मा पुनत्मा तस्मिन्नेते स्यात् पतलोक म्मा कत विद्यागमाना

मनोप्रा

इति श्री १०८८ पञ्चम प्रकाशं कर्तुं कृतं तत्र प्रादुर्भावे विरुद्धाः रात्रौ हिते पितृसंज्ञाः ॥ १०८८ इति स्तोत्रं तत्र ० यत्तु रात्रौ च प्रादुर्भावे ० ८ वा न रात्रौ
तु विरुद्धाः रात्रौ कर्तुं कृतं तत्र प्रादुर्भावे विरुद्धाः रात्रौ हिते पितृसंज्ञाः ॥ १०८८ इति स्तोत्रं तत्र ० यत्तु रात्रौ च प्रादुर्भावे ० ८ वा न रात्रौ
तत्र मन्त्रवेदिते न रात्रौ च प्रादुर्भावे विरुद्धाः रात्रौ हिते पितृसंज्ञाः ॥ १०८८ इति स्तोत्रं तत्र ० यत्तु रात्रौ च प्रादुर्भावे ० ८ वा न रात्रौ
वस्ति ॥ १०८८ पञ्चम प्रकाशं कर्तुं कृतं तत्र प्रादुर्भावे विरुद्धाः रात्रौ हिते पितृसंज्ञाः ॥ १०८८ इति स्तोत्रं तत्र ० यत्तु रात्रौ च प्रादुर्भावे ० ८ वा न रात्रौ
प्रमत्ते च ते निरुद्धे न रात्रौ च प्रादुर्भावे विरुद्धाः रात्रौ हिते पितृसंज्ञाः ॥ १०८८ इति स्तोत्रं तत्र ० यत्तु रात्रौ च प्रादुर्भावे ० ८ वा न रात्रौ
रात्रौ च प्रादुर्भावे विरुद्धाः रात्रौ हिते पितृसंज्ञाः ॥ १०८८ इति स्तोत्रं तत्र ० यत्तु रात्रौ च प्रादुर्भावे ० ८ वा न रात्रौ
मिहो यमद्वैतु रात्रौ च प्रादुर्भावे विरुद्धाः रात्रौ हिते पितृसंज्ञाः ॥ १०८८ इति स्तोत्रं तत्र ० यत्तु रात्रौ च प्रादुर्भावे ० ८ वा न रात्रौ
न रात्रौ च प्रादुर्भावे विरुद्धाः रात्रौ हिते पितृसंज्ञाः ॥ १०८८ इति स्तोत्रं तत्र ० यत्तु रात्रौ च प्रादुर्भावे ० ८ वा न रात्रौ
स ते रात्रौ च प्रादुर्भावे विरुद्धाः रात्रौ हिते पितृसंज्ञाः ॥ १०८८ इति स्तोत्रं तत्र ० यत्तु रात्रौ च प्रादुर्भावे ० ८ वा न रात्रौ

अथोभा

१११

नवानासंभ्रातृसंक्रिन्वन्नाभ्रइतिसंस्तुताममस्तुपुनश्चापम्वतोऽनिभ्रतगच्छता॥ धायसीनामंशा॥ अथोभाततोऽवधायवन्वृत्तावस्तुतासात॥
 मेभ्रवन्सवस्मिन्नामं॥ १११॥ राभ्रानेतोऽनिभ्रः॥ ततोऽवधायवन्वृत्तावस्तुतासात॥ अथोभाततोऽवधायवन्वृत्तावस्तुतासात॥
 लोकगतःकिं प्रस्तुतावन्वृत्तावस्तुतासात॥ अथोभाततोऽवधायवन्वृत्तावस्तुतासात॥ अथोभाततोऽवधायवन्वृत्तावस्तुतासात॥
 अकरोभ्रनाततोवन्वृत्तावस्तुतासात॥ अथोभाततोऽवधायवन्वृत्तावस्तुतासात॥ अथोभाततोऽवधायवन्वृत्तावस्तुतासात॥
 तेविहितं॥ अथोभाततोवन्वृत्तावस्तुतासात॥ अथोभाततोऽवधायवन्वृत्तावस्तुतासात॥ अथोभाततोऽवधायवन्वृत्तावस्तुतासात॥
 मत्तापुनंगताभ्रान्नवन्वृत्तावस्तुतासात॥ अथोभाततोऽवधायवन्वृत्तावस्तुतासात॥ अथोभाततोऽवधायवन्वृत्तावस्तुतासात॥
 तुपातकी॥ १११॥ अथोभाततोवन्वृत्तावस्तुतासात॥ अथोभाततोऽवधायवन्वृत्तावस्तुतासात॥ अथोभाततोऽवधायवन्वृत्तावस्तुतासात॥
 स्मिन्सन्वोन्सं॥ निधिमाग्नं॥ अथोभाततोवन्वृत्तावस्तुतासात॥ अथोभाततोऽवधायवन्वृत्तावस्तुतासात॥ अथोभाततोऽवधायवन्वृत्तावस्तुतासात॥
 नृवोन्माधुचुचिमान्॥ अथोभाततोवन्वृत्तावस्तुतासात॥ अथोभाततोऽवधायवन्वृत्तावस्तुतासात॥ अथोभाततोऽवधायवन्वृत्तावस्तुतासात॥

रत्नमेव निनातेन वसिष्ठेन साक्षात्माना। नो रः साक्षात्माना तस्मात्तु वा प्राप्ता नाना साक्षात्माना नि० १२॥ ५॥ नो रः साक्षात्माना तस्मात्तु वा प्राप्ता नाना साक्षात्माना नि० १२॥ ५॥
 मयि तावता न विवेकमधीः कुर्वितु। नो रः साक्षात्माना तस्मात्तु वा प्राप्ता नाना साक्षात्माना नि० १२॥ ५॥
 नात्मा चिव गवाराणां मदीने रां रत्नात्मा पक्षे रथा क्वंति पठिता धर्मा र्वं मे उ निते न प्रं न नृणां स परितः ममात्मा त्वं सिपावत मा त्वेना सिधौ सिद्धव
 सुधा तले। निस्त्री लोभे त वां तो विः प्राप्तां सि प न मां प रं मा कलां प रं सा प्राप्तां प रं सिधौ सां न गतये ॥ ५॥ किं कत वं न या नेव
 किमाने जं त वक्तु। त्वं र पीवा तं न ह्ये न्द्र प्राप्तां स्व र्ग की वितं म म स की मित त वा पि विन ० यं यां ति वै धु व न क न्द्र प त्ति या न्द्रा
 रु गु उ पा सा ति वं र ना तु। गु उ पा र्वये नैव उ स्त रं त व सा ग र न त न ति रु ध र्ग र था गु उ से वा रु तै न स ध गु उ मां य म्मां तो कं ये व यं ति
 स ता द्मि ते वां न र प ति वि प दो त कं ते स व र्ग प रं गु उ ने व प रं व र्ग गु उ ने व स्व र्ग व ता। गु उ नितं गु उ स्त रं न्द्रा सि त त वं गु नो ६ प रं
 र त स्मा ह्वा व प्ति य नै न क त व्दं ० उ पु क न ग स न्द्रोः पु ष्प क न्द्रा ने व त त वं क न द न्द्रे सिध त न व्दं त व्दं न्द्रा ने व त त वं क न द न्द्रे सिध त न व्दं
 म अ म त रं त व सा ग र न गो व दी क र्ता उः स्ता रं रु न्द्रा न्द्रा ग र न य धा ॥ इ त् र्ग री नित मा क म्प व सि धौ त ग वान्द्रा वि शी त त व र्ग र य म्मा प रं नं

सकास्य कृवि वेतने न कीदृशानि वा कानि नो न स्य स कृवेत स भवेनागां पन दानि विं न तु तत प्रता पान तत प्रता पान तेनेन राखो कृं न निनाय
छा विरक्त इति मेता तित स्य इत्यां कृ इरमिता ॥ ५४०॥ प्रवेवना अरय कृकृ ग्या अ० ३५० ॥ ३५० ॥ व ता वि ताना अर स्यि द्रु ये लो के वा वा व कृि तै व स्य अवि
रको य न स्य वे दौ य स्ये त इ व न स्य
नम वि तत व ती तान स्य स्य म भ त त व
अरु प दे कृा म भ ती म नु ॥ ५४१ ॥
ति री त त व स्य ग रू वा म भ यो म भ यो
सी रा म भ य न म भ य ॥ ५४२ ॥ ५४३ ॥ ५४४ ॥ ५४५ ॥ ५४६ ॥ ५४७ ॥ ५४८ ॥ ५४९ ॥ ५५० ॥ ५५१ ॥ ५५२ ॥ ५५३ ॥ ५५४ ॥ ५५५ ॥ ५५६ ॥ ५५७ ॥ ५५८ ॥ ५५९ ॥ ५६० ॥ ५६१ ॥ ५६२ ॥ ५६३ ॥ ५६४ ॥ ५६५ ॥ ५६६ ॥ ५६७ ॥ ५६८ ॥ ५६९ ॥ ५७० ॥ ५७१ ॥ ५७२ ॥ ५७३ ॥ ५७४ ॥ ५७५ ॥ ५७६ ॥ ५७७ ॥ ५७८ ॥ ५७९ ॥ ५८० ॥ ५८१ ॥ ५८२ ॥ ५८३ ॥ ५८४ ॥ ५८५ ॥ ५८६ ॥ ५८७ ॥ ५८८ ॥ ५८९ ॥ ५९० ॥ ५९१ ॥ ५९२ ॥ ५९३ ॥ ५९४ ॥ ५९५ ॥ ५९६ ॥ ५९७ ॥ ५९८ ॥ ५९९ ॥ ६०० ॥ ६०१ ॥ ६०२ ॥ ६०३ ॥ ६०४ ॥ ६०५ ॥ ६०६ ॥ ६०७ ॥ ६०८ ॥ ६०९ ॥ ६१० ॥ ६११ ॥ ६१२ ॥ ६१३ ॥ ६१४ ॥ ६१५ ॥ ६१६ ॥ ६१७ ॥ ६१८ ॥ ६१९ ॥ ६२० ॥ ६२१ ॥ ६२२ ॥ ६२३ ॥ ६२४ ॥ ६२५ ॥ ६२६ ॥ ६२७ ॥ ६२८ ॥ ६२९ ॥ ६३० ॥ ६३१ ॥ ६३२ ॥ ६३३ ॥ ६३४ ॥ ६३५ ॥ ६३६ ॥ ६३७ ॥ ६३८ ॥ ६३९ ॥ ६४० ॥ ६४१ ॥ ६४२ ॥ ६४३ ॥ ६४४ ॥ ६४५ ॥ ६४६ ॥ ६४७ ॥ ६४८ ॥ ६४९ ॥ ६५० ॥ ६५१ ॥ ६५२ ॥ ६५३ ॥ ६५४ ॥ ६५५ ॥ ६५६ ॥ ६५७ ॥ ६५८ ॥ ६५९ ॥ ६६० ॥ ६६१ ॥ ६६२ ॥ ६६३ ॥ ६६४ ॥ ६६५ ॥ ६६६ ॥ ६६७ ॥ ६६८ ॥ ६६९ ॥ ६७० ॥ ६७१ ॥ ६७२ ॥ ६७३ ॥ ६७४ ॥ ६७५ ॥ ६७६ ॥ ६७७ ॥ ६७८ ॥ ६७९ ॥ ६८० ॥ ६८१ ॥ ६८२ ॥ ६८३ ॥ ६८४ ॥ ६८५ ॥ ६८६ ॥ ६८७ ॥ ६८८ ॥ ६८९ ॥ ६९० ॥ ६९१ ॥ ६९२ ॥ ६९३ ॥ ६९४ ॥ ६९५ ॥ ६९६ ॥ ६९७ ॥ ६९८ ॥ ६९९ ॥ ७०० ॥ ७०१ ॥ ७०२ ॥ ७०३ ॥ ७०४ ॥ ७०५ ॥ ७०६ ॥ ७०७ ॥ ७०८ ॥ ७०९ ॥ ७१० ॥ ७११ ॥ ७१२ ॥ ७१३ ॥ ७१४ ॥ ७१५ ॥ ७१६ ॥ ७१७ ॥ ७१८ ॥ ७१९ ॥ ७२० ॥ ७२१ ॥ ७२२ ॥ ७२३ ॥ ७२४ ॥ ७२५ ॥ ७२६ ॥ ७२७ ॥ ७२८ ॥ ७२९ ॥ ७३० ॥ ७३१ ॥ ७३२ ॥ ७३३ ॥ ७३४ ॥ ७३५ ॥ ७३६ ॥ ७३७ ॥ ७३८ ॥ ७३९ ॥ ७४० ॥ ७४१ ॥ ७४२ ॥ ७४३ ॥ ७४४ ॥ ७४५ ॥ ७४६ ॥ ७४७ ॥ ७४८ ॥ ७४९ ॥ ७५० ॥ ७५१ ॥ ७५२ ॥ ७५३ ॥ ७५४ ॥ ७५५ ॥ ७५६ ॥ ७५७ ॥ ७५८ ॥ ७५९ ॥ ७६० ॥ ७६१ ॥ ७६२ ॥ ७६३ ॥ ७६४ ॥ ७६५ ॥ ७६६ ॥ ७६७ ॥ ७६८ ॥ ७६९ ॥ ७७० ॥ ७७१ ॥ ७७२ ॥ ७७३ ॥ ७७४ ॥ ७७५ ॥ ७७६ ॥ ७७७ ॥ ७७८ ॥ ७७९ ॥ ७८० ॥ ७८१ ॥ ७८२ ॥ ७८३ ॥ ७८४ ॥ ७८५ ॥ ७८६ ॥ ७८७ ॥ ७८८ ॥ ७८९ ॥ ७९० ॥ ७९१ ॥ ७९२ ॥ ७९३ ॥ ७९४ ॥ ७९५ ॥ ७९६ ॥ ७९७ ॥ ७९८ ॥ ७९९ ॥ ८०० ॥ ८०१ ॥ ८०२ ॥ ८०३ ॥ ८०४ ॥ ८०५ ॥ ८०६ ॥ ८०७ ॥ ८०८ ॥ ८०९ ॥ ८१० ॥ ८११ ॥ ८१२ ॥ ८१३ ॥ ८१४ ॥ ८१५ ॥ ८१६ ॥ ८१७ ॥ ८१८ ॥ ८१९ ॥ ८२० ॥ ८२१ ॥ ८२२ ॥ ८२३ ॥ ८२४ ॥ ८२५ ॥ ८२६ ॥ ८२७ ॥ ८२८ ॥ ८२९ ॥ ८३० ॥ ८३१ ॥ ८३२ ॥ ८३३ ॥ ८३४ ॥ ८३५ ॥ ८३६ ॥ ८३७ ॥ ८३८ ॥ ८३९ ॥ ८४० ॥ ८४१ ॥ ८४२ ॥ ८४३ ॥ ८४४ ॥ ८४५ ॥ ८४६ ॥ ८४७ ॥ ८४८ ॥ ८४९ ॥ ८५० ॥ ८५१ ॥ ८५२ ॥ ८५३ ॥ ८५४ ॥ ८५५ ॥ ८५६ ॥ ८५७ ॥ ८५८ ॥ ८५९ ॥ ८६० ॥ ८६१ ॥ ८६२ ॥ ८६३ ॥ ८६४ ॥ ८६५ ॥ ८६६ ॥ ८६७ ॥ ८६८ ॥ ८६९ ॥ ८७० ॥ ८७१ ॥ ८७२ ॥ ८७३ ॥ ८७४ ॥ ८७५ ॥ ८७६ ॥ ८७७ ॥ ८७८ ॥ ८७९ ॥ ८८० ॥ ८८१ ॥ ८८२ ॥ ८८३ ॥ ८८४ ॥ ८८५ ॥ ८८६ ॥ ८८७ ॥ ८८८ ॥ ८८९ ॥ ८९० ॥ ८९१ ॥ ८९२ ॥ ८९३ ॥ ८९४ ॥ ८९५ ॥ ८९६ ॥ ८९७ ॥ ८९८ ॥ ८९९ ॥ ९०० ॥ ९०१ ॥ ९०२ ॥ ९०३ ॥ ९०४ ॥ ९०५ ॥ ९०६ ॥ ९०७ ॥ ९०८ ॥ ९०९ ॥ ९१० ॥ ९११ ॥ ९१२ ॥ ९१३ ॥ ९१४ ॥ ९१५ ॥ ९१६ ॥ ९१७ ॥ ९१८ ॥ ९१९ ॥ ९२० ॥ ९२१ ॥ ९२२ ॥ ९

[illegible]

७७४

अ० विस्मृत्य पवन० कित्वा क० प० क० का प० स० प० त० स्मि० जेव रं म० ये ता० यो व० सु ता० य० य० अ० गारा पा रा स० व० अ० खो नो या० तः क० वा० अ० ना० वि० य०
 ने क० पि० र० न० ता० ने वा ना म० पि० उ० स० रा० थ० अ० न० दि० स० व० क० तु० वा० म० म० ति० वे० म० को० सो० ग० न० स० व० म० प्रो० यो० म० ज० यो० स० व० म० रि० से० प्र० म० व० ले० प्र० म० म० ज० वि० प० नित०
 क० ख० म० यि० य० त० ते० य० त० श० वे० य० दे० अ० प० त० म० के० का० ता० स० के० न० के० जे० व० ता० स्मि० ते० व० प० न० रा० स० को० वि० ती० य० प० न० मे० ख० न० म० यो० ना० म० म० क०
 ने के० रा० म० कित्वा ना० व० न० का० पो० न० रो० उ० स० व० के० ये० उ० स० वि० ग० यो० न० के० रा० म० न० त० दा० म० रा० लो० त० स० ये० न० वे० म० ते० नो० म० वा० कित० का० वि० म० ध० स०
 न० स० वि० म० का० त० य० त० ते० उ० उ० ये० का० ते० कि० ता० से० न० म० त० वि० ते० न० व० अ० म० म० वि० ता० म० प० व० स० वि० त० ते० स० वे० ना० म० वा० कित० का० वि० म० ध० स०
 म० ता० त० तो० वि० वि० त० ते० यो० न० व० स० त० न० क० रा० स० ने० स० म० सी० न० दी० प० म० न० मि० वा० न० ल० न० ग० त्रु० प० दे० रा० वि० वि० ना० क० प० त० ता० न० क० म० न० न० रा० म० पि० त० म० नो० ब० यि० अ० म० य० त० न० यो० व० क० त०
 र० म० वि० स्म० य० म० प० म० रा० ब० न० नि० स० यो० ल० स० ध० ना० यो० म० दी० य० म० नो० वे० व० ता० व० म० ती० व० म० ध० इ० ति० ल० व० उ० ता० ते० पा० प० व० का० वि० त० तु० म० ति० म० स० जे० व०

मरीयस्यात्कीर्तिनेवातकानाम्। इति निमित्तं तै न्मो न० त ह मी पठ पा य च धृ ङा। लि० ग न न इस्का न म् न स्तुति व० न न इस्का न० त व० न न य न त स्तु
रया कानाम् क मी ति धृ० त्रिषु त त्र० त व त्रु स्का० ता प० त्रु ङा वि० न० धृ० पु त्रान् पौ तान् प्र पौ ता० स्व ता य नि० पु सु शृ ङा नान्। प र म द न० मा व य कि
प्र० य धा न्मा य० म ज्ञा म ते। त
धृ न यो ब्रा ह्म ण स वि द्या र य म्
म ता० न त प० रु द्र० न ती धृ०
मी वा म दे पु त्रो। इ म्। न र व ने ष
ति ने वा म पि म द न य म् धृ न यः
न पा नि द्वा म म द सि। त स्मा० त्रिषु त त्र० ते कि० वि० न० दे न वे त स म्। तु० त्व तो गा न्। रि० के स म्। नान्। पाल या स्मा न्। म नु व ता न्। पाल या स्मा न्।

[illegible]

[illegible]

796

[illegible]

११२ ना मालि गनका रुद्रा ॥ १२ ॥ गलि गन वा पा ग का मो नि वृत्ति पना न इति का मा रितोऽन्वः ॥ १३ ॥ भा व नु ग त ल पा भ उ मा ३ म प्र था क त्तः ॥ १४ ॥ क का रु
 क व ता स्त्रि य भ प न स प न व र्नी ना म ता ॥ १५ ॥ स प नि व र्ध क म भ म प क वि च प्र क रु क नौ वि रु उ प क वि वृ त्तो ॥ १६ ॥ स प त्र व र्ध क र त क ति रु ने पि यो
 ति के ॥ १७ ॥ १८ ॥ नि मा न स ल वा
 १९ ॥ २० ॥ प त्र भ प ना य ॥ २१ ॥ वि ता ना ॥ २२ ॥
 भि कृ ता भ पि त तो ना म व नि ना
 ना म्मा ॥ २३ ॥ न वि च ते ॥ २४ ॥ ना म
 व क ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥
 न य स म तितो प्ता ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥
 व म ग ते ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥

त्रिविंशः स गमिष्टु प्रसीताश्वः वायव्यमश्वः ॥ १ ॥ त्रिविंशः स गमिष्टु प्रसीताश्वः वायव्यमश्वः ॥ १ ॥
 वीतु ॥ ३० ॥ ३१ ॥ एकं धृतं तलविंशे चामाश्वः कश्चिदधृतं तलपनाश्वः चमकधृतं सुसंतवेतवे देवानां वरुणो गुरो ॥ ३२ ॥ एकं धृतं तलपनाश्वः चामाश्वः कश्चिदधृतं तलपनाश्वः चमकधृतं सुसंतवेतवे देवानां वरुणो गुरो ॥ ३२ ॥
 वाग्नेवाशिवाग्नाश्वः चामाश्वः स ॥ ३३ ॥ कर्तारो वाल्मीकि इति विस्मृतं स तत्र विप्रतिद्रुष्टं चि वल्मीकी कोत्तं न देववानु ॥ ३४ ॥ एकं धृतं तलपनाश्वः चामाश्वः कश्चिदधृतं तलपनाश्वः चमकधृतं सुसंतवेतवे देवानां वरुणो गुरो ॥ ३२ ॥
 स्वस्थो बतु वसुधा ॥ ३५ ॥ पावती ॥ ३६ ॥ वल्मीकी काश्वः कश्चिदधृतं तलपनाश्वः चामाश्वः कश्चिदधृतं तलपनाश्वः चमकधृतं सुसंतवेतवे देवानां वरुणो गुरो ॥ ३२ ॥
 शिवश्च ॥ ३७ ॥ कलितवानाश्वो ॥ ३८ ॥ वल्मीकी काश्वः कश्चिदधृतं तलपनाश्वः चामाश्वः कश्चिदधृतं तलपनाश्वः चमकधृतं सुसंतवेतवे देवानां वरुणो गुरो ॥ ३२ ॥
 पातीनां निवीर कश्चिदधृतं तलपनाश्वः चामाश्वः कश्चिदधृतं तलपनाश्वः चमकधृतं सुसंतवेतवे देवानां वरुणो गुरो ॥ ३२ ॥
 अथ स्वस्थवान् तपंरुपुतमन् ॥ ३९ ॥ पवः मन्वः तपनाश्वः चामाश्वः कश्चिदधृतं तलपनाश्वः चमकधृतं सुसंतवेतवे देवानां वरुणो गुरो ॥ ३२ ॥
 सुता ननु नयेति मन्वैरुतमन् ॥ ४० ॥ पवः मन्वः तपनाश्वः चामाश्वः कश्चिदधृतं तलपनाश्वः चमकधृतं सुसंतवेतवे देवानां वरुणो गुरो ॥ ३२ ॥

धानं १२ वनं तमना ३ आनमिव देवानां परिते न न स नितं ४ नो
 निमित्तं ५ देवानां व विद्यानां अस्वप्रतिभा मनो ज न ता ६ रां व न मा सो रां वे ते न नि ७ ग वा ध स ओ त न क स्ते स ता पं भा न स नान स त व न त त स्त वे य धा
 न्मायां युष्मा मति य धा सु स न ग
 स्वय मे व मे मे १ ग र न ग र न प
 क स र्प प न वि दि धा न्मा पि पा त्वा
 मन से व वि नि मि त्तान् १ ३ स्त्रा ते म
 प न्ने व पु ष्ठा प क नि व र्त्त स कि
 स स्त त्वा नि त्रा क म्मु मु नी र व रा ध नि त्रा व रा स्त ते ३ ३ ३ नि ७ ग वा ध स प स्य तं कित को थ थ म्मा ति मा न ३ ३ या य त न त पं लि धि प्र ता दे न मु ति म
 त मि वा न ल न मन सा क स ति वा वा ना म ता ता त्म हा ग त न त के र्वा त क क लु व न म ना मे ति वा ति न १ ३ स्थि व धा व रो वे मा दि ती या व ३ स नितं

विष्णु च पुरुषा को न विना पद विनि मलिन स्थाः तेन प्रवृत्तं वीरं सीतया सज्जितं प्रतुंग पीतांबरं च नरेव स्त्रिंशः सासनगतं विष्णुं मत्ता शेव मत्ता न
 पादुका धौ उरुद्वयं कपि नवनवा का विवै तपा धम्मति रं वित्तं से विते तन ते वा पि म्मो किक कृत तपा मिना पवी य साल स्थातो नथ न वा कुरु न न व
 नीले शीकर स का रा उवा न न स म प्रतन म्म ग्य स्मि त म्म रा ना म विराला रु म्म दा तु क्क न सार के यु न म्म कुरु वि वि त म्म मि त्तु प म्म न वी र सि
 या वं ७ रा म्म वी र म्म ति न रा म्म का रि म्म नि सु त्त म्म रा वि नि क्त म्म ति को १३३ विस्मिता का र म्म ता मा ता वि ता त्त म्म ना न्ना रा
 प्र ३३ स्म न्ना दो वि वि रुः स्म ता न स्म न्ना य स वे प्र त्तु घ्रा या ति रा य व वि न या व न तो तु क्का प कुरु नि र म्म रा ता तु म्म न य धा क स म्म क्क म्म प ३० कः र म्म ता त्त म्म दा तु नि धि त्त त प ३० क

सप्तमस्तु न० येन रं निहितं वनेन किं च निजावरोधे तु । इष्टं नो मन्त्रात्तु तद्वत्ता नामनामेति मन्त्रं नृपुण्यं तत्तान क० पत्रं नृपुण्यं इति स्वरूपं लिखितं हस्ताक्षरं साक्षात्
स्मिन्नप्रतश्च नाञ्जनाञ्जकप० कुर्वन् द्वितीयश्च स्वर्णाङ्गुलीयं प्रसादात्मा वनज्ञानपत्रोक्तनिमित्तपित्रो धर्मं प्रतिनिधिं स्वर्णं मन्त्रं तद्वत्तानामेति मन्त्रं
भूतः राक्षसः सुते वल्गायाञ्जने ।
सप्तकथा वकुला नेते मन्त्रे
मानरागमहादेके छन्दोनाम्ना
तत्तत्तलंगादेवेराः कथ्याः
राखतपरामुलिते अरण्येन पुत्रात्मा वातनिजाति । नाम्नो रोरायितुर्दिवा तवाक्केतपो पूनंगतो घटं का नाप्रेक्ष्य नाकालान् स्रग्ध्रं विष्ठाति ।
लि० यौ से तु० कान्तिका दनि जातर घना वामा ल० का० त्वं को पुष्पा के पा कपि नसे बला न्वित भञ्जयो आन मन० ना मः प्रयास्यति मन्त्रा
वनभ्रम तत्तलि० क्षणन० प्राप्ता वधा मात्मानं ते वै विषयान् विषयति थक्षिता नाञ्जनि क० ह० पत्रं न राव वल्गायाञ्जनात्ताना वल्गायाञ्जनात्ताना मोनाञ्जनात्ताना

मयोभा

सिवा प्रनवे कंठ मण्डपति ॥ वसिष्ठ स्यात् पने रो न प्र नि गो वि कृ ता गत म कवि रा वि म दा क चि व ल्मी का त म त वि त ॥ ना म म त प्र ता व न न द्वा वि स त वि णा ति ॥
इति त स्य व व रु त्वा ॥ सु त वि प्रा प न मे रा ॥ सु रा न्द्र या ॥ १० ॥ य धा व वि सु त वि प्रो त व द्मि म थ न व व थ व ल्मी का ये प्र व र ता म यो चो व रु त ॥ ११ ॥ ना न र ने
व म क्ते तु वा ग तु र रा ना नि मी ॥ व ल्मी कः सो भ ता वि प्राः ते न से यो त वे इ ति ॥ इ धू त त त दा का का म त नि के म ता वि त न रु त्वा त रा व लि णा ये व ल्मी कः
प्र वि नो ति त न त न्ना व ल्मी क ने रो
पि त न र्वा म नि की पि ते व द्मो नि
सु ति न त प न यो ति त प्र त न रु
र म म रा त न्ना न्द्र म न्द्र न तैः सि
लो क ग तो त त्वा रा ॥ वि रु त्वा लः स्थि त न रु ह व ल्क ल स वी त १० क हा स्य न स स्थि त न ३ ॥ ११ ॥ वि रु त्वा का का मु नि न न्द्र त र नि न ३ ॥ १२ ॥
नि थि मा ग त्म बो य चो च कि ने त रा ॥ सु ति ति ११ ॥ क ना ति स्य म वा के न ने क था नो र ति प्र त न न ३ ॥ १३ ॥ स्या न त त ३ ॥ १४ ॥ त दो य ना रा कृत ना मु ने य स म प ति ता ॥ १५ ॥

[illegible]

[illegible]



१॥ दत्तात्रेयः सर्वभूतहिते रतः ॥
 २॥ भक्तान् पश्यन्निन्दन्तु तान् ॥
 ३॥ भक्तान् पश्यन्निन्दन्तु तान् ॥
 ४॥ भक्तान् पश्यन्निन्दन्तु तान् ॥
 ५॥ भक्तान् पश्यन्निन्दन्तु तान् ॥
 ६॥ भक्तान् पश्यन्निन्दन्तु तान् ॥
 ७॥ भक्तान् पश्यन्निन्दन्तु तान् ॥
 ८॥ भक्तान् पश्यन्निन्दन्तु तान् ॥
 ९॥ भक्तान् पश्यन्निन्दन्तु तान् ॥
 १०॥ भक्तान् पश्यन्निन्दन्तु तान् ॥

विवर्ध ॥ ५५ तस्मिन्नेव वक्ष्यते देवो रामः ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

[illegible]

[illegible]

४५

वतस्तेव कीर्तिभूतिपेतु स्वभासर्वे तेन रागैर्न भो चित्तो भव कल्पितं मुनिवत् नाना कान्तौ नाना नवौ कथ्येति ब्राह्मणा नादि मुनीनां तावत्तु निभुषणवत्सिप
 पातो द्वैरेव उ० ३ ति निस्वर्गैर्भूदेवा नामातव तोषः स्वकार्यस्य विनिस्त्यादासि वः रीता भूमा लि० ग० भू भू प्राप्ता यस्यानन प्रोवा नव वन बाल० रं० क० म० नो परनामव
 सातसा नो सिनाम त्व० का र्जलिधिः कनेतवा कनरु स्य सुता० कनरा० सीता कुडोतु मर्जसि सवे परम० ति ना
 नो नरा क० यवागीतने १ मम न स्रगत् वा प० को वात० ३ मिजा र्जति ॥ भगवन्सा न इति वि से प्रेम मता नि
 सोलपितु० क मभ प्रतो न कलि तो अथो व कृ क्तेन पुनर्तवेत्सीता इयाना न वाय य ३ ध मम मा
 त० कनादा सीता स का यो नामा स कनिष्पति म आ बलः ३ त कता मे पि सवे वा० सवर्ती प्र पीला न ल० ३ ल० ५ ॥ ७
 यधिपुत० त म० ३ सु वाम० वै ल म त भगवत् कृत्वा स० ग अत ३ को यो ३ ताति म आ त्म ने ॥ त स्मै ३ ताति वै क० ३
 तिरुसवि ३ क न भ स वा त्मा सवर्तु क सा नी सवर्गः सवर्गो व न भू नि त्पा न० ३ सवर् स मः सव काना मा काना मा ॥ सवर् वे न० त वे अ० य ना म व व न स० रा य भू ३ भू ५
 म० ना भः सव वा क० ना व मे न हि ते ३ न० ३ ते ३ क० न क० या ति स० सा ब यो नि म क० ति ना म० रि व र्म रानो ना मो न ते ३ स० न यो स० यो म इति वि शान वा

श्री श्री कलः तं उक्तं ते । अनादेव वनः रुद्रा मुनयः सख न निशिव ना आद्यो वै के निः सः देवा वतु विने । इत्युक्तं निः ना
 जा पतः प्रेष यस्तव न । नाका य रा न छ सी प्र जा के स न पुत्र कथ विवा आ ध कु मा रा मी स न नः स न डे न ति ति न त ये ति प्रेष दा मा स न उता न्व वि त वि के मा भु । ते ग ता
 रा क रा इ ल ना भः रे चो न न रे य म गु र्जु ता ना भ क त ना का य वे म म ना ता तु त भ मि धि ला गु म ना धी य त र या मा रा म ति ता न न क न्तु म यः स
 वे ग जा ख न य प त य भ प व प्र र धा नै स क ल ना का य वि पु न न ध न भ न ता र ने न या रा य ना उ द्य
 ना का न व स मा कु लः प्र त म न गा न क न कः रा ता न न पु त्रो य ना य धो क पु क या पु क न पु क या मा स स
 नै ति म त तो क न क ना के न भ नि ने स नि वे रि त भ र ने त ने स व रो ता छे स रा नः स सु तः सु सी । स त
 न व य स व त न न तु प मा तु प मा तु वि ता । वे र मा स्वि य र व रु रो न त वे सै न ल क त पी व त्ता प मा प्रति
 वि वि त न न व सै स तो र मा स्य पि तु वि त न न ग रे स व सौ स्या नि स व वा स म ता य उ भ त तो न प ति रा इ ल वि र वा मि तो म आ मु नि भु ना व व
 व न वी न व लि ष ज जि तो न प न । वि र वा मि त म ना क न भ मी यो ना क सी ता वो मि नि या स न रा स्य स्ये व स्य य नु श्री व क्क व रु य ता व त तु ता ता य वी या
 न य भि शि प व ना का कु रा भु क भ म स्य य म ति तो ना क नु पु पे मा र ति भ नु वि सु ता व य न र सै न प न्ना ध व न य म दे । त र त स्य कु मा र स्ये रा तु भ स्य

[illegible]

7
52

22

सनेरु ते। सुतिका तिराको तुल्य व
कियाः॥ ॥ सुतुवावा ॥ ॥

कुसैः पल्लव सन्निरो को मापा
तैरपि वकां वने धनं पुते न्या
अरीपा स स्व प्रदीपिता धृष्ट

मोषाः प्रपन्न राजाः प्रवृत्ताः स वतो नाना सता यो कुरु कुरु प्राप्ता राज्ञां ना की वलो वन नाना प्रकान्ता

त सुमल सनाततः प्रवोद्या मा स वसिष्ठं रां क न स्वयं सोम्य हो व विष्णो यं तां मा स वै नादिकी

निरोद्ध व वनं वने रां तो विसिष्ठो त गवान् विभु व का न स
तैस्व कां व नै धनं स मिहि न कतैः पुण्यैः परलै न न्ये न ना
पुते नला नै रपि ग डे न वा ॥ ३ ॥ अ तथा तिस्रस्त व स्त्री कर्तव्यं
अ नन वा वयं ति स्म स वा स्ता दे वता स्त्रियः ते नी स स म

कस्त ल तत य द्या स त न ना त म वा

न वै ध क ल रो स्त्री य स पु तोः क

कत रा त न पे वि त म न क ता स म

१० गा ना वै म वा ना व स व रो ध न य

विपिवत र पो धु धी वा न य तु धी वा

ਜਾਇਲ ਪੁਰ

29✓

तयेन मधुर्धनं मो वा सुदेवा च न मो रान घातुं कान मोन म स्रे रा के व स पत्त रा य कान मः का न म नु पा य कै के पी वि य का नि गो न मः रा ता
 य रा ता य वि खा मि त पि या रं ते । १००५ य से रा च न म सु त्त म स म स क तु पाल क न मोन म के रा क च न म मो नी मा थ रा दि गो । न म स्रे रा म त क च न
 न मो ना ना य मा य म । ३०० न मो
 न मो वि ह स रु नि गो । न मो न
 त म न म स्रे रा न ना य व । न मो
 म ना ता य न मो रा मो र रा य
 म्ना च न म सु त्त म द न को र
 म्ना म्ना त न न म स्रे सु स प्त तान रु ना य व । स र उ ष म स रु त न । स न्ना य न मो न म्ना
 क ना म्ना न न म स्रे सु न मो न नु म्ना स य । १००५ य च न म सु त्त म्ना नी व म्ना म्ना य ले ।

नाम वं रा य मा म्ना क च न म्ना म्ना गो वि रा य न म सु त्त म वे य
 म स्रे ना घा य न म स्रे म्ना सु र न । ति वि क म न म स्रे सु सी ता
 न मः सी म्ना य कान की व ल ता य वान म स्रे सु रु नी के र
 व । वि ती न म प पि ता ले न मः स क र्मा म्ना य व । वा सु दे व न म
 इ स रु न । म्ना नि रु थ न म स्रे सु न म स्रे रा क र पि य
 म्ना य न म सु त्त म्ना न म स्रे से तु न म्ना य न म सु त्त म्ना न म स्रे से तु न म्ना य न १००५

५५

तस्य सर्ववैपुल्यं प्रतीयेमानेन वत पश्य च। चतुर्लोकं भित्तिः प्रोक्तं तत्परितो लोकाश्च वा पुन्यात्। पुनरावृत्तिरहितं वैकुण्ठं सौम्यं पुन्यात्॥ अस्मिन्महा पतताव
 वीरसिंहाय विस्वामितोय मेधियमभय कानानां तात्मा गोविन्दिके सायनः स्थितो राम चन्द्रमन्त्रितीर्णः। गम्यन्ता सोयमा विभुः अविभक्तः
 सप्तसीमो भ्रातृवत् कृपा निष्पिभरुणं च ववन् गुरुतकात्पुनः कारमाय पत्रमाह्वयन् वीरैरोत्तमा नादितकाभ्यामापुन्य
 देवकायार्थे सिन्धुयन् रावाम् सप्तवक्त्राभ्याम्। ज्ञातो नामरुतिरामातो मायामानुषवेव पृथक्। तस्य साक्षे गारामयितुं वावतु अचिर
 मेखनभयो गमायावसीते तिहातास्तेतव वेष्टा वि। अतस्त्वं साधवस्त्वेव देहिनी तां प्रयत्नतश्च नन्दनं जायन्तु वृत्तये
 वा नामरुत परमात्मानमभर त्रुक्का प्रययौ देव गतिरिव मुनिस्तृता तत्रानन्दमया सीता विज्ञोर्लक्ष्मीतितान्नते। कथं मया
 सप्तवायदीयते कानकीरु ता। इति विंता सप्तमा विज्ञः कालमेव विविन्त यणमतिता मरु मेलेषु न्यासतु तस्मिन् यन्म
 शीवरेण पुनः कितं पुनराकारं न। तनयपुत्रे तत्तन्मां कायमिति विन्त तद्याकृतं सीता तामि युदाधायि सर्वविधां भाननारानं

66

सुत उवाच ॥ अतः शतं भूतानि तेना कैलासमगमत्ततु भूतैः तिस्र्युक्तानः सवैवेन मस्तुतु भूतानां लोकपालाश्च चतुः स्वस्व भूतैः निगम्यो
 साधुः सुवतः सवै प्रोक्तं भूतैः कुरु नरा ममा मन्त्रं तेन स्वीकृतं विरक्तं भूतैः कुरु निःशङ्कं गमन्तुं नीलाकौ सिकीतं लोभनं कस्तुभूतैः कापेव विवा
 सुत उवाच ॥ अतः शतं भूतानि तेना कैलासमगमत्ततु भूतैः तिस्र्युक्तानः सवैवेन मस्तुतु भूतानां लोकपालाश्च चतुः स्वस्व भूतैः निगम्यो
 साधुः सुवतः सवै प्रोक्तं भूतैः कुरु नरा ममा मन्त्रं तेन स्वीकृतं विरक्तं भूतैः कुरु निःशङ्कं गमन्तुं नीलाकौ सिकीतं लोभनं कस्तुभूतैः कापेव विवा
 सुत उवाच ॥ अतः शतं भूतानि तेना कैलासमगमत्ततु भूतैः तिस्र्युक्तानः सवैवेन मस्तुतु भूतानां लोकपालाश्च चतुः स्वस्व भूतैः निगम्यो
 साधुः सुवतः सवै प्रोक्तं भूतैः कुरु नरा ममा मन्त्रं तेन स्वीकृतं विरक्तं भूतैः कुरु निःशङ्कं गमन्तुं नीलाकौ सिकीतं लोभनं कस्तुभूतैः कापेव विवा

۵۸

[illegible]

६५
 ॥ अथ अक्षरानि वर्तमानानि नाव । आगा जिगीवका यामिका ना मल क वत व । सर्वलोकहितो यो यो प्रवर्तितवितो ममे । तात वावता नो तु ता ना । के मा च विक्रमा
 वा । सर्वलोकानां सिलवस्तु सुनीनां गुण न स्मृत । तन्मा चा मो दित पियः त्वां न कान । मो दितो भूत त्वत् भूत या पिव अने सर्व सु निमित्त स्मृता न मन येन सर्व पवित
 स्मृते नानां ते नानां नानां सुतारि
 स्मृते वा लक्षण पत्रं विष्णुको
 नाना यनो पात प्रमथानलः
 अतो नैः पुनया मा सुः वल्लिमा
 त्प्रता जत ॥ ॥ आमा नाना ॥
 अतो नैः त प स सु मा न गत भूत व वी य मल सु त्वा त्व यो यो सु मा रा त भ पे द्वा क वी न व भ्या मे मा ता म द कु लो न वा भूत या पित व दल सु त्वा न
 रा क म स कितुं म मा ना मो स्थितिं वि प्र नै नो म कान व मा द्वि षा । स्वीतो दारु भूत ग सु त्वै ता नि क य स मे । इ म तु वै ल व वा प म भि क रे व

٥٢

तमेव वृक्षरा क नैव पत्तनं वृक्षरा तः त्वं मो कानस्थ यस्थ श्री तमेव सत्तमं मि ध्या व विष्णु त्वं वृक्ष नि मं पत्तनं स्रोतं मो द मरा कृ त्वं वेशना म च
 गो व न प य मो म रे व कृत वा नु पु वं वि त क म स्व मे । त व रा कृ त्वा न पा नु स व नि द त्वा त्वा म र्ही डि के त त्वा सा व व से नैव रा ति भा प्रो ति नै सि की न रा म ना
 म म ना ना मो वे सि वा यो मे ख न न
 पु ना पा पु व वि लु क ग ह ग लि ओ ह व न न बा ल्ये द त प सा वि लु मा रा य वि तु म क र्णा न क ती य र त ग त
 त प सा वि लु म व द न अ तो व य न्म ना
 म न न्मा ना य मा म न न्म श्री ध त तः प स नो रे वे रा रा स व क ग ना
 उ मा ल य नु उ वा न मा उ पु रे ष व
 र न्म म्प क र्ण क र्ण र्ही त ग वा नु वा वा प उ ति ष्ठ त प सो वृ ष
 रो न च क र्ण क र्ण नै न य उ ग
 व न का ति वी य पि त्ता मा च द य त प सः स म म त ल स्त्रिः स त
 स्त्रिः स त
 स्त्रिः स त
 ति म्पा व द । ते ता उ गो रा र धि तु वा ना मो म ना य रा म उ ता स्त्रि पु मा यो रा कृ त्वा त रा ष व कृ त्वा सि मा पु न म
 त त्ते कः पु न रा कृ त्वा त्वा त्वा म य पु ना त त प स व न्म लो के ति ष्ठ त वृ ष ना मो दि व न इ त्वा त व नै दे व स्त्र धा र्ण क कृत म य मा रा व वि लु स्त्र
 ना म ना तो सि द्ध कृ त्वा पि ति म्पा म पि स्थि त त्वा त कः त्व ये व पु न ना कृ त न म म्प मे स पी ल क र्ण व रा नो सि म म प तो वृ ष ना ति ति न ल त्वा

स्वप्रकृतेः परमो मयः शक्तिः कक्षादिषु वाकानस्य त्वं शानस्य त्वं वाऽनिरविकानोऽसि शुभं स्वर्गमागम्य विवर्तितं यथा धनं नये सौ न कलाः च कर्मो वन्दे
 स्यात्तथा त्वं वाकानस्य त्वं शानस्य त्वं वाऽनिरविकानोऽसि शुभं स्वर्गमागम्य विवर्तितं यथा धनं नये सौ न कलाः च कर्मो वन्दे
 माकृतं नैकादि संप्रदाते प्रतिनिधिं
 ततो ह्येतत् स उक्तं सा विता यं वेत्ति
 योगाद्वितितु याद्विते स्यात्तथा कठं
 स्यात्तुः सौ स्यात्तु निनिवर्तते
 तदा ह्येतत् शानस्य त्वं शानस्य त्वं वाऽनिरविकानोऽसि शुभं स्वर्गमागम्य विवर्तितं यथा धनं नये सौ न कलाः च कर्मो वन्दे
 स्यात्तथा त्वं वाकानस्य त्वं शानस्य त्वं वाऽनिरविकानोऽसि शुभं स्वर्गमागम्य विवर्तितं यथा धनं नये सौ न कलाः च कर्मो वन्दे
 स्यात्तथा त्वं वाकानस्य त्वं शानस्य त्वं वाऽनिरविकानोऽसि शुभं स्वर्गमागम्य विवर्तितं यथा धनं नये सौ न कलाः च कर्मो वन्दे

৮৬

तः सीतां मरुता गा मुमिलां न य राखिनीं कु राधुन सु ते नो ते न न प न यः मति वा मति वा मः स्व स की ना न सु ता स्त वा । स्वः स्वः न नः स मा स्या च कु
 वे न त व नो प मः । गो ति र्ने नै स्व पा नो र त र्प थि त्वा वि नो प मा नू ने मि ने मु ति ताः का ले त त तिः स क्ति ता न रुः । क र्ण न त्रि व काल स्य ना का र रा न घः सु तः । त न तः कै क
 श्री पु तः म ब्र वी व पु नः ३ नः । अ यः के क य ना रु स्य पु तो व स्ति पु त्रि का । ता नै तु मा ग तो वी न सु पा
 ६६ य म रु मि धि ला या म रु त रा न पु म नै तु त र्प त्वं प्री तिं क र्तु मि रु रु सि । सु त्वा र रा न घ र्णे कि न्मा तु न र्त्त वा । ५७० । ५७० धि त र्प त्वं
 तः स्व रा तु पु स क्ति तो य यो ग ते त त न तैः पि त नः गु रु बु धा त म न म मा त त न तैः पि त नः गु रु बु धा त म न म मा
 गु ष्ठा य क म क्त्वा य धा वि ष्ठा तो ष या मा स तु गी । ५७० । पा तः पा तः स तो ष या मा स तु गी । ५७० । पा तः पा तः स
 स्य या सु वा मि ३ रा ना गो व र्णा पी मि थि या ३ रा त् । सा के ते लो क न म घः प्र धि त नू ता गा गो लो क सः वी त की ति र्ने री ना मः सी त या रे

विविधे सौ सौ रजःपाथे कुडल तैः ॥ सिद्धे
सर्ववैदसा ॥ यवना म म म म ताततः
अमेदिना ॥ प्रथाना ॥ पथि वीप ॥ तीना ॥

65

पतोकुं किं न मजीमिमा ॥ १० ॥ (नृतेव निथमात्र आना येन नृसमु क्पति। युन क्पयेः प्र दृष्टः स्वत मसो चत नृपति। अतः तत्र नृना अत्र नृपो न काव्य मसो चत नृपति।
 रेवा न मस्य तिना मस्या यथा स्थितं। देवो वे नृम मस्य कं ते स व स्य लोक स्य दितेन विज्ञा दितो च नः कि प्र म नृ क्पति वि कुं व नृ व म र्ज सि ॥ ॥ ११ ॥
 इति सीमा तत्र लो गं नृना मायामे मये आ कां हे सीमा म ग म क धनं ना म प्र य मः स ग म ॥ ॥ १२ ॥ प्र सीमा म वं द्रा च न म म ॥ ॥ १३ ॥ म य न का व र न यः क
 म वि उ द सि स्थि त म व सि मः स्व कुला ना य म ति का मे र म व वी त्वा त ग व नृ ना म म सिलाः प्र स ल ग ति
 स वि रो व त म म सः स वं ग गो वे तं ना म ना की व लो व न न म म ना म ति रो क्पा मि व यो न म नि १०
 इतां स ता नाः स ति य तां त म का म त य स प व न त म व म मा ते का व सि म्मो शा नि ना व न म उ
 त म या नि र सः स्वः प्र ता ते र्मा च क के क न्म काः स्व म ति वि ता म
 ता म व नृ ति ताः स मा चां तु रे ना व त कु लो ह वा क्ष ना मा ती यो र कैः पु माः स्व म कि ताः स य स र म व नृ ग व न स क म वे र मा वि प्राः पु रे क ना म स मा ति
 ना ना स ता नाः स ती य तां च या वि पि। इत्यादि र म म नि म र्जी मा नृ सु म तं रा न म ति मा न स्व य क गी इ त व न ना न व स मा ति ता र्ज न म म ना क

५

[illegible]

१ प्रवृत्तम्
नानाधर्मि
रूपमन्त्रं
परमेश्वरं
माधुर्यं नो
वरुणो ज्ञा
ग्रायेत्वा
जने देवताय
मानाः ७

20

वाप्यनोतु विनि कां पति भुक्ता विमलता तातेदि पावती य दता रा तन र गनी ता री य तु त्वं लोकाना मुपदेरा कृता काना मित्रा पनात्मान लक्ष्मणा री का त मी ख न प
 देवका यो य सि अ य त काना भुक्ता सि अये भू भान वा रा स्थे य भा यो य का व काना मिना ल वा त या पि देव का यो य ग य भू नो द्या मय द न य वा त मा य या
 सव क सो वि न न न न त ये वी न विना स्ते द रि अ स्त ग र ति त द न ग र ग र ग र त्व देव पिता मा त्व पिता म द भ म त य मी म ग य त वा द क र म
 गो व न ग र य त व मि म न द य व दो स्वा र्थी न स त व म न व प र व नो के सि क का सि त्व यो ग मा य य म पौ नो दि त म द काने वि गे वि न य
 उ व मी व न ग र क काना कु ले रा मः प न मा त्मा कानि य ति ॥ १४०॥ प र ति सा न म यो पु र्व व अ मा क धि त पु र त तो द म रा
 या ना म त व स व य का क य म का र्ज ग दित म पि ता वा वा य व सि य ये म तो म नो न यो मे म अ लितो न न व न त्व य थी ना म रा
 मा या स व लो के क मो दि नी ॥ मो य य मो य ये नै व त या क र न पु त मा ग र नि क ति का म स व य वि र अ त वे व मे इ त कः प्रा य त न मः स
 त क वृ ष्ठा वि त म य ॥ १४१॥ रा म द वा व ॥ १४२॥ य स र म्मे सि मे वृ ष्ठा नृ त त्व र म्मे न तु त म य र त कः प नि दृ ष्ठा त्मा व रि न नः प्रा य त पु न म न म
 र ग न ये द य वि तो सि न नृ त मा त्मा म त यि त्व न म्मे र वो नि क ले म ति सा य वी म अ त्व सी त या र्था य दी का व द त या वि धि र त्व म न य म

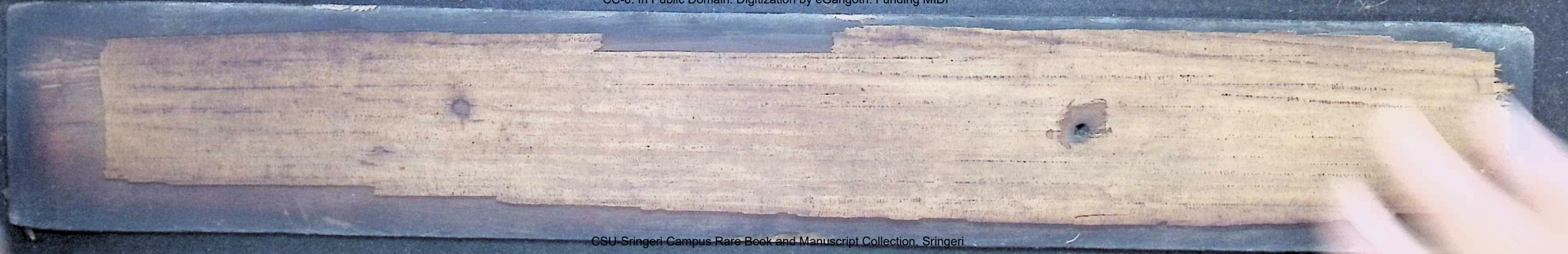
प्र० तिक० यो० यो० व० व० अतिवृत्तान्ममोनि० वे० ननु तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु०
 स० क० तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु०
 आ० दे० वि० द० ता० प० पितो० ननु० तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु०
 दी० न० वा० ३० अ० का० न० प० पितो० ननु० तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु०
 स० ध्या० व० त० स० वे० ननु० तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु०
 स० न० प्र० स० वे० ननु० तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु०
 न० वे० तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु०
 ता० ह० रा० ना० न० वे० ननु० तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु० वे० ननु० तिमि० तो० ननु०
 यो० अ० प्र० नी० म० अ० य० दि० ना० ना० वि० ध्या० ति० १० ३० का० न० प० स० स० ध्या० ना० ना० का० ध० व० य० म० १० ३०

२०

नांकार्जसायकमजतिवेकस्यविज्ञाय च नं रु वं तु देवताशततके विष्णु पर्वणि नांमंतकूपनायामाधुववजं प्रवृत्तिस्मविष्णुवा ना विधीहिताशनामाति
 वेकविज्ञायमासुपनःसुनषयिअसर्वे वयं ताव गत्वा ३ अमा मसू म दो हावना ममजतिवेका ३ रिा न स म मल कौ म वा स स वा म ने वी म मान व रवेत क
 तावताजनानाजानकीसहितं देव
 सुतन ३ अमा मनाम व देवा स नोने
 आतात छा विध न म न का
 इताम मना नाना सा पीला ये
 के षु वि वि बु ये व व म के षु ध व र
 थकथपापासाधु म नारा घ म न स्ये व म वि त य तु वे र मु लो दि स वे वा म मो तिव ति थ मि पा न वे र वे द्ये दि स थ म स्त र म स्ता म सो त वे तु ७ म वे दे न वे दि
 सर्वे वा म म म ना रो त व ति स व ति १ ५ म ना रो ते तः स वे पा न म स न स न स न इ ति स त्रिं त्र पा वि षो वे रा न न म को तु क म व द न लो के म नु पा य व द
 न न सिं सा स ने स्थि त न स व म ग न स पु म दि क तु व म तु ष म तु वि त म न ता रि त स का रा सु स न म नि
 त पी ल म म तु रा नी न ता का स वे वा त तः कि म पि क प न न क म
 आ म पी ख न पु न का कित स व गा न ना न म सु ति व ता थ
 न स्या ता त व ति तै व य म क म म दे त स्मा न्न लो हा व ह र क व थ क उ
 स्य ति म स विं त्र म न स्या स व मे व मा य स रा न पु न व द स्य ति नु वा व ॥ ५ पु ना स नः सो नु सो तु दे वा ना म पि वा
 पु ना स नः सो नु सो तु दे वा ना म पि वा
 पु ना स नः सो नु सो तु दे वा ना म पि वा

29

[illegible]



सुतकुवाव ॥ मततो देवाः समं वीर्यं साक्षात्पुनः ॥
तन्तेष्टावनासुन कन

न

